सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 177, नई दिल्ली, गुरुवार 04 सितम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सबसे कठिन काम है कार्य करने का निर्णय लेना, बाकी सब केवल दृढ़ता है...

03 बाबा रामदेव महाराज की दशमी पर आयोजित मेले में लाखों लोग हुए शामिल

06 महान छात्र महान शिक्षक बनाते हैं

08 उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वनों की कटाई से हर साल 28,000 से अधिक मौतें !

# जीएसटी दरों में आई बहार, उद्योग और उपभोक्ता दोनों खुश इस बार

संजय अग्रवाला, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल

भारत की अर्थव्यवस्था में कर सुधारों का महत्व किसी से छुपा नहीं है। जब 2017 में वस्तु एवं सेवा कर यानी जीएसटी लागू हुआ था, तब इसे देश की कर प्रणाली का ऐतिहासिक बदलाव माना गया था। लेकिन शुरुआती वर्षों से ही विभिन्न क्षेत्रों के व्यापारी, उद्योगपति और उपभोक्ता बार-बार यह सवाल उठाते रहे कि कई वस्तुओं और सेवाओं पर ऊँची दरें लगने से उनकी क्रय शक्ति प्रभावित हो रही है। जीएसटी काउंसिल ने समय-समय पर इस पर विचार किया और कई संशोधन किए, परंतु हाल ही में लिया गया निर्णय सबसे व्यापक और राहत देने वाला माना जा रहा है। यह फैसला न केवल आम आदमी के जीवन से जुड़ी सेवाओं को सस्ता करेगा, बल्कि उद्योगों के बोझ को भी कम करेगा। अभी तक जीएसटी की चार दरें: 5%, 12%, 18% और 28% लागू थीं। आम आदमी के लिए यह संरचना उलझनभरी और व्यापारियों के लिए बोझिल साबित हो रही थी। अब काउंसिल ने इसे दो मुख्य दरों वाले 'सिंपल टैक्स' में बदलने का निर्णय लिया है। इसमें 18% की मानक दर (स्टैंडर्ड रेट) और 5% की रियायती दर (मेरिट रेट) होगी। वहीं कुछ विशेष वस्तुओं और सेवाओं के लिए 40% की डि-मेरिट दर रखी जाएगी। यह कदम कर प्रणाली को पारदर्शी, सरल और नागरिक-हितैषी बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

काउंसिल ने उन वस्तुओं पर भी विशेष ध्यान दिया है, जिनका सीधा संबंध आम आदमी की ज़िंदगी से है। बालों का तेल, साबुन, शैंपू, टूथब्रश, टूथपेस्ट, साइकिल, टेबलवेयर, किचनवेयर और घरेलू सामान जैसे दैनिक उपयोग की चीज़ों पर जीएसटी की दरें 18% या 12% से घटाकर 5% कर दी गई हैं। इसी तरह खाद्य वस्तुओं पर भी व्यापक राहत दी गई है। पहले 12% या 18% जीएसटी लगने वाले नमकीन, भुजिया, सॉस, पास्ता, इंस्टेंट नूडल्स, चॉकलेट, कॉफी, संरक्षित मांस, कॉर्नफ्लेक्स, मक्खन और घी जैसे उत्पाद अब मात्र 5% की दर से टैक्स के दायरे में आएंगे। इससे आम उपभोक्ता को सीधे तौर पर राहत मिलेगी और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में भी नई ऊर्जा का संचार होगा।

दूध और दुग्ध उत्पादों पर भी बड़ा निर्णय लिया गया है। यूएचटी मिल्क, पैक्ड छेना और पनीर, तथा सभी भारतीय ब्रेड जैसे रोटी, पराठा, परोट्टा आदि को अब जीएसटी से पूरी तरह मुक्त कर दिया गया है। यानी इन पर अब कोई कर नहीं लगेगा। यह फैसला न केवल आम परिवारों की रसोई का बोझ कम करेगा बल्कि डेयरी उद्योग और छोटे उत्पादकों को भी प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने का अवसर देगा।

कृषि और किसानों के हित में भी यह बैठक अहम रही। ट्रैक्टर, कृषि, बागवानी या वानिकी से जुड़े उपकरण, मिट्टी की तैयारी या फसल काटने वाली मशीनरी, चारा बनाने की मशीनें, घास काटने की मशीनें, खाद बनाने वाले उपकरण, इन सभी पर जीएसटी की दर 12% से घटाकर 5% कर दी गई है। यह कदम किसानों के लिए बड़ी राहत है क्योंकि अब खेती से जुड़े साधनों की लागत कम होगी और उनकी आय पर सकारात्मक असर पड़ेगा।

श्रम-प्रधान उद्योगों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से भी महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। हस्तशिल्प, संगमरमर और ग्रेनाइट ब्लॉक, बीच के स्तर के चमड़े के सामान जैसे उत्पादों पर भी दरें घटाकर 12% से 5% कर दी गई हैं। यह कदम ग्रामीण और कारीगर समुदायों की आजीविका को नई ताकत देगा और इन उद्योगों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे ले जाएगा।

जहाँ तक औद्योगिक निर्माण क्षेत्र की बात है, तो सीमेंट जैसी महत्वपूर्ण निर्माण सामग्री पर जीएसटी को 28% से घटाकर 18% कर दिया गया है। इससे निर्माण क्षेत्र में लागत घटेगी और सस्ते आवास तथा बुनियादी ढाँचे के प्रोजेक्ट्स को गति मिलेगी। इसी तरह छोटे कार और 350 सीसी तक की मोटरसाइकिलों पर भी दरें घटाकर 28% से 18% कर दी गई हैं। अब सभी टीवी (32 इंच तक के) और अन्य घरेलू उपकरण जैसे एयर-कंडीशनर, डिशवॉशिंग मशीन आदि भी 18% पर टैक्स होंगे। यह उपभोक्ताओं के लिए बड़ी राहत है और घरेलू इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग के लिए नई संभावनाओं का द्वार खोलता है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में भी अभूतपूर्व निर्णय लिए गए हैं। सबसे अहम बात यह है कि अब सभी व्यक्तिगत जीवन बीमा पॉलिसियाँ—चाहे वे टर्म इंश्योरेंस हों, यूएलआईपी हों या एंडोमेंट पॉलिसियाँ, पूरी तरह जीएसटी से मुक्त होंगी। इसी तरह सभी व्यक्तिगत स्वास्थ्य बीमा पॉलिसियाँ, चाहे वे परिवार फ्लोटर हों या वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष रूप से बनाई गई हों, भी अब जीएसटी से मुक्त कर दी गई हैं। बीमा पर पुनर्बीमा सेवाएँ भी इस छूट के दायरे में आएंगी। इसका उद्देश्य बीमा को आम आदमी के लिए सुलभ बनाना और देश में बीमा कवरेज को बढ़ाना है।

दवाओं और चिकित्सा उपकरणों पर भी व्यापक राहत दी गई है। 33 जीवन रक्षक दवाओं और औषधियों पर जीएसटी 12% से घटाकर शून्य कर दिया गया है, जबकि 3 दवाओं को, जो कैंसर, दुर्लभ बीमारियों और गंभीर दीर्घकालिक रोगों के इलाज में उपयोग होती हैं, 5% से शून्य पर ला दिया गया है। अन्य सभी दवाओं पर जीएसटी 12% से घटाकर 5% कर दिया गया है। चिकित्सा उपकरणों और आपूर्ति पर भी व्यापक कटौती की गई है, जहाँ शल्य चिकित्सा, दंत चिकित्सा, पशु चिकित्सा या भौतिक-रासायनिक विश्लेषण में उपयोग होने वाले उपकरण अब 18% से घटाकर 5% टैक्स पर मिलेंगे, वहीं गॉज़, बैंडेज, डायग्नोस्टिक किट, ग्लूकोमीटर जैसी चिकित्सा आपूर्ति पर भी 12% से 5% जीएसटी होगा।

बात करें परिवहन क्षेत्र की। लंबे समय से ऑटोमोबाइल उद्योग यह मांग करता आ रहा था कि बसों, ट्रकों और एंबुलेंस पर लगने वाली 28% की ऊँची जीएसटी दर को कम किया जाए। आखिरकार काउंसिल ने इस पर सहमति जताई और दर घटाकर 18% कर दी। इस फैसले का सीधा असर परिवहन कंपनियों, स्वास्थ्य सेवाओं और सार्वजनिक परिवहन क्षेत्र पर पड़ेगा। ट्रकों की कीमत कम होने से माल ढुलाई की लागत घटेगी, जिससे वस्तुओं की अंतिम कीमत पर भी दबाव कम होगा। एंबुलेंस पर कर दर घटने से अस्पताल और स्वास्थ्य संस्थान अपेक्षाकृत सस्ते दाम पर इन्हें खरीद सकेंगे, जिसका अप्रत्यक्ष लाभ मरीजों को मिलेगा। इसी तरह, ऑटो पार्ट्स पर लंबे समय से उलझन थी। अलग-अलग एचएस कोड के आधार पर उन पर अलग-अलग दरें लागू थीं, जिससे भ्रम की स्थिति बनी रहती थी। अब जीएसटी काउंसिल ने यह स्पष्ट कर दिया है कि सभी ऑटो पार्ट्स पर समान रूप से 18% की दर लागू होगी। इससे न केवल कर प्रशासन सरल होगा बल्कि उद्योग जगत को भी एक स्पष्ट संदेश मिलेगा। साथ ही, ऑटो उद्योग से जुड़े छोटे और मध्यम उद्यमों को भी राहत मिलेगी, क्योंकि उन्हें अब अलग-अलग दरों का हिसाब नहीं रखना होगा। तीन-पहिया वाहनों पर भी जीएसटी 28% से घटाकर 18% कर दिया गया है, जिससे ई-रिक्शा और ऑटो रिक्शा की कीमतें कम होंगी और आम लोगों की जेब पर बोझ घटेगा।

टेक्सटाइल क्षेत्र में लंबे समय से इनवर्टेड ड्यूटी स्ट्रक्चर की समस्या बनी हुई थी। खासकर मैनमेड फाइबर और यार्न पर अलग-अलग दरें होने से असंतुलन पैदा हो रहा था। उदाहरण के लिए, फाइबर पर जीएसटी 18% और यार्न पर 12% था, जबकि कपड़ा तैयार उत्पाद अपेक्षाकृत कम दर पर बिकता था। इससे कपड़ा उद्योग को इनपुट पर अधिक टैक्स देना पड़ता था और आउटपुट पर कम टैक्स मिलने से रिफंड की समस्या खड़ी हो जाती थी। अब काउंसिल ने इस संरचना को सुधारते हुए मैनमेड फाइबर और यार्न दोनों पर जीएसटी घटाकर 5% कर दिया है। यह बदलाव न केवल कपड़ा उद्योग को प्रतिस्पर्धात्मक बनाएगा बल्कि निर्यात को भी बढ़ावा देगा।

उर्वरक क्षेत्र में भी यही समस्या थी। सल्फ्यूरिक एसिड, नाइट्रिक एसिड और अमोनिया जैसे रसायनों पर 18% जीएसटी लगता था, जबकि उर्वरक पर दर केवल 5% थी। इससे किसान संगठनों और उर्वरक कंपनियों को अक्सर शिकायत रहती थी कि इनपुट पर ऊँचा टैक्स देना पड़ता है और उत्पादन की लागत बढ़ जाती है। अब सरकार ने यह असमानता दूर करते हुए इन रसायनों पर जीएसटी घटाकर 5% कर दिया है। इससे उर्वरक उद्योग की लागत कम होगी और किसानों तक उर्वरक अपेक्षाकृत सस्ते दाम पर पहुँच पाएगा। इसका प्रत्यक्ष लाभ कृषि क्षेत्र को मिलेगा और फसल उत्पादन की लागत घटेगी।

पुनर्नवीनीकरण ऊर्जा यानी रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर में भी बड़ी राहत दी गई है। सौर पैनल, विंड टर्बाइन और इनके निर्माण में लगने वाले पुर्जों पर जीएसटी दर अब 12% से घटाकर 5% कर दी गई है। यह कदम प्रधानमंत्री के 'हरित ऊर्जा' के लक्ष्य को हासिल करने में अहम भूमिका निभाएगा। उद्योग विशेषज्ञों का कहना है कि इस राहत से न केवल निवेश बढ़ेगा बल्कि घरेलू स्तर पर सोलर और विंड एनर्जी उपकरणों की मांग भी तेज होगी। आम उपभोक्ता के लिए भी यह बड़ी राहत होगी, क्योंकि बिजली के वैकल्पिक साधन अब और अधिक सस्ते व सुलभ होंगे।

होटल उद्योग भी लंबे समय से कर कटौती की मांग कर रहा था। अब होटल आवास सेवाओं पर, जहाँ प्रति दिन का किराया 7,500 रुपये या उससे कम है, जीएसटी दर 12% से घटाकर 5% कर दी गई है। इससे देश के पर्यटन क्षेत्र को सीधा लाभ होगा। छोटे और मध्यम दर्जे के होटलों में ठहरने वाले यात्रियों के लिए यह एक स्वागत योग्य कदम है, जिससे घरेलू पर्यटन को और गति मिलेगी।

सौंदर्य और स्वास्थ्य से जुड़ी सेवाओं को भी सस्ता किया गया है। जिम, सैलून, योग केंद्र और नाई की दुकानों जैसी सेवाओं पर अब जीएसटी दर 18% से घटाकर केवल 5% कर दी गई है। यह कदम आम आदमी की जीवनशैली से सीधे जुड़ा हुआ है, क्योंकि ये सेवाएँ अब हर वर्ग के लिए किफायती होंगी। इससे फिटनेस और स्वास्थ्य क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे और अधिक लोग नियमित रूप से इन सेवाओं का लाभ उठा पाएंगे।

जीएसटी काउंसिल ने केवल दरों में ही बदलाव नहीं किया है बल्कि न्यायिक ढाँचे को भी मज़बूत करने का निर्णय लिया है। काउंसिल ने अनुशंसा की है कि जीएसटी अपीलीय न्यायाधिकरण यानी जीएसटीएटी को सितंबर 2025 के अंत तक कार्यान्वित कर दिया जाए ताकि अपीलें स्वीकार की जा सकें और दिसंबर 2025 से इसकी सुनवाई शुरू हो सके। इससे व्यापारियों और करदाताओं को एक उचित मंच मिलेगा जहाँ वे अपने विवादों का निपटारा करा सकेंगे। वर्षों से लंबित पड़े कई मामले अब तेज़ी से निपट सकेंगे। इन सभी बदलावों का क्रियान्वयन 22 सितंबर 2025 से शुरू होगा, जब सेवाओं पर नई दरें लागू होंगी। काउंसिल का कहना है कि यह बदलाव चरणबद्ध तरीके से किए जा रहे हैं ताकि उद्योग और उपभोक्ता दोनों को समय पर राहत मिल सके और सरकार को भी कर संग्रहण में संतुलन बनाए रखने का अवसर मिले।

आर्थिक विश्लेषकों का मानना है कि इन सुधारों से न केवल महँगाई पर नियंत्रण में मदद मिलेगी बल्कि उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता भी बढ़ेगी। परिवहन लागत घटने से आपूर्ति श्रृंखला मज़बूत होगी, कपड़ा और उर्वरक उद्योग को नई ऊर्जा मिलेगी, होटल और पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा मिलेगा और आम आदमी को स्वास्थ्य एवं सौंदर्य सेवाओं में राहत मिलेगी। साथ ही, हरित ऊर्जा उपकरणों की कीमतों में कमी से पर्यावरण के प्रति जागरूकता भी बढ़ेगी। कुल मिलाकर यह फैसला जीएसटी व्यवस्था को और अधिक तर्कसंगत, न्यायसंगत और उपभोक्ता-अनुकूल बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। यदि इसे सही ढंग से लागू किया गया, तो यह न केवल उद्योगों को राहत देगा बल्कि आम जनता के जीवन स्तर को भी सुधार देगा। अब निगाहें इस बात पर हैं कि इन नए बदलावों का व्यावहारिक असर बाजार में कब और कैसे दिखने लगता है।

*[लेखक पिछले 18 वर्षों से वाणिज्य-अर्थशास्त्र के शिक्षक, वित्तीय एवं कर सलाहकार हैं]*

# टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

# स्वतंत्रता और समानता

पिंकी कुंडू महासचिव टोलवा ट्रस्ट (पंजीकृत)

स्वतंत्रता और समानता मानव गरिमा की नींव हैं। हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, लिंग, नस्ल या सामाजिक पृष्ठभूमि से हो, उसे समान अवसर और भेदभाव से मुक्त जीवन का अधिकार है।

**कानून क्या कहता है:**

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा (यूडीएचआर) स्वतंत्रता और समानता की गारंटी देती है (अनुच्छेद 1 और 7)।

भारत में संविधान मौलिक अधिकारों के रूप में समानता की गारंटी देता है (अनुच्छेद 14–18) और अभिव्यक्ति, बोलने, विचार और धर्म की स्वतंत्रता (अनुच्छेद 19–22) सुनिश्चित करता है।

**विवाद और चुनौतियाँ:**

कानून होने के बावजूद असमानता कई रूपों में मौजूद है – जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अंकुश, और न्याय तक असमान पहुँच।

दुनिया भर में इस बात पर बहस जारी है कि "स्वतंत्रता" कितनी हो और "नियंत्रण" कितनी हद तक सरकारें लागू करें।

**भारत के पड़ोसी देशों की स्थिति:**

**पाकिस्तान और अफगानिस्तान:** महिलाओं के अधिकार, प्रेस की स्वतंत्रता और धार्मिक समानता पर गंभीर संकट।

**बांग्लादेश:** लैंगिक समानता में प्रगति, लेकिन श्रमिक अधिकार और राजनीतिक स्वतंत्रता में चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

**नेपाल:** संविधान में मजबूत गारंटी, पर जातिगत और जातीय भेदभाव अब भी मौजूद।

**चीन:** आर्थिक समानता में सुधार हुआ है, लेकिन राजनीतिक स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की आज़ादी पर कड़ा प्रतिबंध।

**श्रीलंका और म्यांमार:** जातीय संघर्ष और स्वतंत्रताओं पर अंकुश मुख्य मुद्दे हैं।

**भारत – कानून बनाम हकीकत:**

**कानून:** क्षेत्र के सबसे मजबूत संवैधानिक प्रावधान, जिनमें समानता, छुआछूत का उन्मूलन और कमजोर वर्गों व अल्पसंख्यकों के लिए कानूनी सुरक्षा शामिल है।

**हकीकत:** सामाजिक भेदभाव, साम्प्रदायिक तनाव, असहमति की आवाज़ों पर दबाव और लैंगिक हिंसा जैसी चुनौतियाँ अब भी सामने हैं। इससे साबित होता है कि केवल कानून काफी नहीं, बल्कि सख़्त अमल और जनजागरूकता भी ज़रूरी है।

**क्या है आगे का रास्ता:**

सच्ची स्वतंत्रता और समानता तभी संभव होगी जब सरकारें कानून को निष्पक्षता से लागू करें, समाज भेदभाव को नकारे और हर व्यक्ति दूसरे के अधिकारों की रक्षा में खड़ा हो।

**Tolwa Trust**
**tolwaindia@gmail.com**

Walk-in Interview Alert – ICAR-NRIIPM, New Delhi

ICAR–National Research Institute for Integrated Pest Management (NRIIPM) invites eligible candidates for a Walk-in Interview for the following position:

- Position: Young Professional–II (Lab Work)
- Mode: Walk-in Interview
- Location: ICAR–NRIIPM, Rajpur Khurd, Maidan Garhi, New Delhi–110068
- Basis: Purely contractual, from Institute fund

Check detailed notification & requirements here:
http://nriipm.res.in

A great opportunity for young professionals in agricultural & pest management research to work with a premier ICAR institute.

#ICAR #NRIIPM #WalkInInterview #ResearchJobs #YoungProfessional #AgricultureJobs #PestManagement #DelhiJobs #ContractualJobs #HiringNow

भा.कृ.अनु. परिषद्- राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसंधान संस्थान
राजपुर खुर्द, पोस्ट ऑफिस मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068
ICAR- National Research Institute for Integrated Pest Management
Rajpur Khurd, Maidan Garhi, New Delhi-110068
E-mail : director.nriipm@icar.org.in, Web : http://nriipm.res.in
Phone : 011-20907410, 011-26303936, 011-26303931

Walk in Interview

Eligible candidates are invited to attend the WALK IN INTERVIEW for selection of ONE position of Young Professional-II for Lab work from the Institute fund is to be conducted at ICAR-NRIIPM, Rajpur Khurd, P.O. Maidan Garhi, New Delhi -110068. The Position is purely on Contractual basis. Detailed information is available on the Institute website : http://nriipm.res.in.

(Bhupesh Chaudhary)
Assistant Administrative Officer
EN 22/83

रोजगार निदेशालय
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार
डेटा सेंटर
जिला रोजगार कार्यालय भवन
विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली–110032
सार्वजनिक सूचना
(कृपया ध्यान दें: दिल्ली के नियोक्ता और नौकरी चाहने वाले)
दिल्ली के सभी नियोक्ताओं और नौकरी चाहने वालों से अनुरोध है कि वे दिल्ली में नौकरी से संबंधित अवसरों का लाभ उठाने के लिए ऑनलाइन रोजगार पोर्टल (https://onlineemploymentportal.delhi.gov.in) पर अपना पंजीकरण कराएँ। अधिक सहायता/विवरण के लिए, कृपया संपर्क करें:
डेटा सेंटर कार्यालय :- फोन: 011-20822381, 011-20822389
ईमेल आईडी : datahub.emp09@gmail.com
संयुक्त सचिव
(रोजगार निदेशालय)

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत के सदस्य बनने के लिए नीचे दिए गए गूगल फार्म पर क्लिक करें और भरकर जमा करे, पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट (पंजीकृत अंडर सेक्शन 60), नीति आयोग भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त, एमएसएमई में पंजीकृत
https://forms.gle/VEThcFgMcknGFc1u9

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND SOCIAL WELFARE ALLIED TRUST REGT.
MEMBERSHIP FORM FOR TOLWA TRUST
transportvisheshcontent@gmail.com Switch account
The name, email, and photo associated with your Google account will be recorded when you upload files and submit this form
* Indicates required question
How you got aware about TOLWA trust *
Social Media
News Paper
Personal connection
Youtube
Social Function/ RTO/friends/family

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय:- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

# वामन जयंती आज

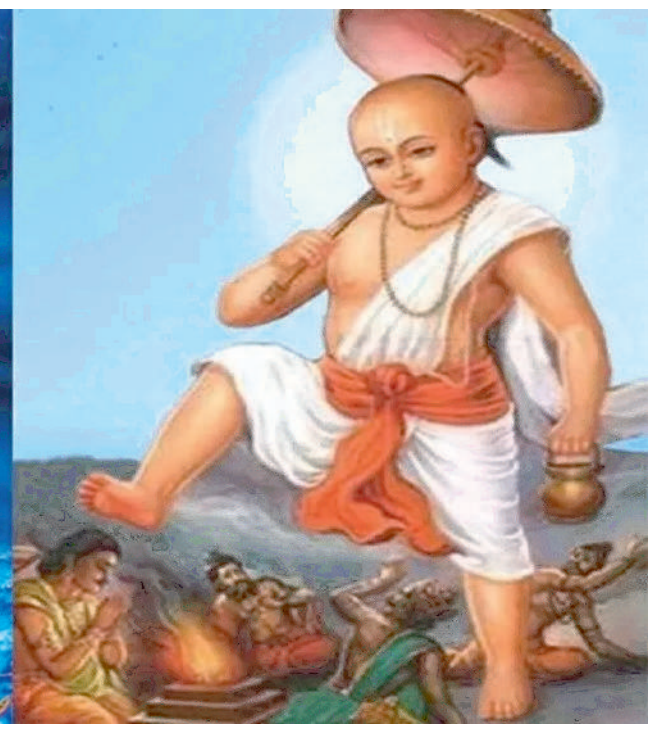

भाद्रपद माह (भादों) की शुक्लपक्ष की द्वादशी की तिथि को वामन द्वादशी मनायी जाती हैं। इसे वामन जयंती भी कहा जाता हैं। श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार इस दिन अभिजीत मुहूर्त में भगवान विष्णु ने देवताओं की सहायतार्थ वामन रूप में अवतार लिया था।

**वामन जयंती कब हैं?**

==========

इस वर्ष वामन जयंती 4 सितम्बर, 2025 गुरूवार के दिन मनायी जायेगी।

**वामन जयंती के व्रत का महत्व**

==========

हिंदु मान्यताओं के अनुसार वामन जयंती का व्रत एवं पूजन करने से जातक की सभी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं। भगवान विष्णु के अवतार भगवान वामन अपने भक्तों के सभी कष्टों का नाश करते हैं। और उनके सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

श्रद्धा और भक्ति के साथ भगवान वामन की व्रत एवं पूजा अर्चना करने से साधक को भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त होती हैं। साधक की सभी समस्यायें समाप्त हो जाती हैं। इस दिन ब्राह्मणों को दान देने और फलाहार कराने से महान पुण्य प्राप्त होता हैं। इस व्रत को करने से मनुष्य जन्म-मृत्यु के चक्र से छूटकर स्वर्ग को प्राप्त करता हैं।

**वामन जयंती के व्रत की विधि**

==========

वामन जयंती की पूजा संध्या के समय किये जाने का प्रचलन हैं –

वामन जयंती के दिन भगवान विष्णु के वामन अवतार की पूजा अर्चना कि जाती हैं।

इस दिन प्रातःकाल स्नानादि नित्यक्रिया से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

फिर संध्या के समय पूजास्थान पर चौकी पर भगवान विष्णु के वामन स्वरूप की स्वर्ण या चांदी या अष्टधातु की मूर्ति स्थापित करें।

प्रतिमा के सामने धूप-दीप जलायें।

फिर स्वर्ण के पात्र में जल लेकर उससे भगवान वामन की मूर्ति को अर्ध्य दें। अर्ध्य देते समय इस मंत्र का पाठ करें –

नमस्ते पद्मनाभाय नमस्ते जलः सिने।

तुभ्यं प्रयच्छामि वाल यामन अर्पिणे ॥1॥

नमः शांग धनुर्पाणि पादये वामनाय च।

यज्ञभुव फलदात्रेय वामनाय नमो नमः ॥2॥

फिर उनकी प्रतिमा को यज्ञोपवीत धारण करायें।

तत्पश्चात फल और पुष्प अर्पित करके उन्हे मिठाई का भोग लगायें।

इसके बाद वामन द्वादशी की कथा पढ़ें या सुनें।

इस दिन उपवास करें। दिन में एक ही समय फलाहार करें।

भगवान वामन को भोग लगाने बाद ब्राह्मणों को दही, चावल, चीनी, शरबत का दान करें और उन्हे सामर्थ्य अनुसार दक्षिणा देंकर संतुष्ट करें।

**वामन द्वादशी के व्रत की उद्यापन विधि**

==========

वामन जयंती के दिन व्रत के उद्यापन के लिये उपरोक्त विधि से पूजन करने के पश्चात उद्यापन के लिये ब्राह्मणों को एक माला, दो गौमुखी कमण्डल, लाठी, आसन, श्रीमद्भगवतगीता, फल, छतरी, चरण पादुका (खड़ाऊँ) के साथ सामर्थ्यानुसार दक्षिणा देकर विदा करें।

**वामन जयंती के व्रत की कहानी**

==========

पौराणिक कथा के अनुसार भक्त प्रहलाद के पौत्र राक्षसराज बलि ने अपनी शक्ति और दैत्यगुरू शुक्राचार्य के मार्गदर्शन से देवराज इंद्र और अन्य देवताओं को युद्ध में पराजित करके स्वर्ग लोक पर अधिकार कर लिया। स्वर्ग से निष्कासित होकर देवराज इंद्र अपनी माता अदिति की शरण में गये। देवताओं के राजा की ऐसी अवस्था को देखकर उनकी माता को बहुत दुख हुआ। अपने पुत्र पर आये उस संकट को दूर करने की इच्छा से माता अदिति ने अपने पति ऋषि कश्यप से सहायता माँगी। तब ऋषि कश्यप ने अपनी पत्नी अदिति को भगवान विष्णु के अतिविशेष और दुर्लभ पयोव्रत का अनुष्ठान करने की सलाह दी। तब भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिये माता अदिति ने उस व्रत का अनुष्ठान किया और कठिन तपस्या आरम्भ कर दी। उस व्रत के प्रभाव और उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने माता अदिति को कर्शन देकर उनसे वर माँगने के लिये कहा। तब माता अदिति ने भगवान विष्णु से देवताओं की सहायता करके उन्हे पुनःस्वर्ग में स्थापित करने की इच्छा व्यक्त करी। तब भगवान विष्णु ने माता अदिति से कहा, "आप व्यर्थ में परेशान ना हो। स्वर्ग देवताओं का हैं और वो उसे पुनः प्राप्त करेंगे। मैं आपके पुत्र के रूप में जन्म लेकर देवराज इंद्र का अनुज बनकर उनकी सहायता करूँगा। और उन्हे पुनः स्वर्ग के सिन्हासन पर स्थापित करूंगा।" माता अदिति को मनोवांछित वर प्रदान करके भगवान अन्तर्ध्यान हो गये।

भगवान ने माता अदिति के गर्भ से वामन द्वादशी के दिन अभिजीत मुहूर्त में वामन अवतार लिया। भगवान विष्णु को पुत्र रूप में पाकर माता अदिति कृतार्थ हो गई और देवताओं-ऋषि-मुनियों की खुशी का ठिकाना नही रहा। भगवान विष्णु के वामन रूप में अवतार लेने से पूरी पृथ्वी पर आनंद छा गया था। माता अदिति के गर्भ से जन्म लेकर भगवान विष्णु इंद्र के अनुज बने। इसलिये भगवान विष्णु का एक नाम उपेंद्र भी हैं। ऋषि कश्यप ने भगवान वामन का उपनयन संस्कार किया। वामन अवतार में भगवान की ऊचाँई मात्र बावन अंगुल ही थी। उधर राजा बलि ने अपने गुरू शुक्राचार्य के कहने पर भृगुकच्छ नाम के स्थान पर अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन किया। तब भगवान वामन को यह समाचार मिला तो वो यज्ञ के स्थान पर पहुँच गये। शीष पर जटा, बगल में मृगचर्म, कमर में मूज और यज्ञोपवीत धारण करके ब्रह्मचारी के रूप में भगवान वामन यज्ञ के स्थान पर पहुँच गये। उनका दिव्यरूप सबको अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। उन्हे देखकर सब आनंद का अनुभव कर रहे थे। भगवान वामन के दिव्य तेज से पूरी यज्ञशाला प्रकाशमान हो रही थी। इतने तेजस्वी ब्राह्मण को यज्ञ मे आया देखकर राजा बलि ने उनका सत्कार किया, उन्हे आसन पर बिठाकर उनकी चरण वंदना करके उन्हे दान में धन देना चाहा परंतु भगवान वामन ने धन लेने से मना कर दिया। तब उसने उनसे उनकी इच्छा पूछी तो भगवान वामन ने उनसे तीन पग भूमि देने के लिये कहा। राजा बलि ने उनसे और अधिक माँगने के लिये कहा। परंतु भगवान अपनी बात पर स्थिर रहें और राजा बलि से कहा- यदि तुम मुझे कुछ देना चाहते हो तो मुझे मेरे तीन पग जितनी भूमि दो। शुक्राचार्य वामन रूप मे आये भगवान विष्णु को पहचान गये। उन्होने राजा बलि को समझाया कि वो कोई साधारण ब्राह्मण नही हैं, स्वयं नारायण वामन रूप लेकर आये हैं। इसलिये वो उनकी बातों में ना आये। परंतु राजा बलि ने द्वार पर आये ब्राह्मण को बिना दान दिये भेजने से मना कर दिया। राजा बलि ने भगवान वामन को तीन पग भूमि देने के लिये संकल्प करने के लिये गंगासागर (जल का पात्र जिसमें पानी छोड़ने के लिये एक नली नुमा आकृति होती हैं) लिया तो शुक्राचार्य ने सूक्ष्म रूप लेकर उस जल के पात्र से जल छोड़ने वाली नली में प्रवेश करके उसे बंद कर दिया। वामन भगवान ने यह सब देख लिया उन्होने एक तिनका लेकर उस नली में ड़ालकर शुक्राचार्य की एक आँख फोड़ दी। शुक्राचार्य पीड़ा से चीखते हुये पात्र से बाहर आगये। तब राजा बलि ने तीन पग भूमि देने का संकल्प किया। राजा बलि के संकल्प का जल छोड़ते ही भगवान विष्णु ने विराट रूप धारण कर लिया। और देखते-देखते एक पग में पूरी पृथ्वी आकाश और दूसरे पग में स्वर्गादि समस्त लोकों को नाप लिया। फिर उन्होने राजा बलि से कहा राजन मैं तीसरा पग कहाँ रखूँ? तब राजा बलि ने उनसे कहा प्रभु सम्पत्ति का स्वामी सम्पत्ति से बड़ा होता है, इसलिये आप अपना तीसरा पग मेरे शीष पर रखों। राजा बलि की वचनपरायणता और भक्ति-भाव को देखकर वामन रूपधारी भगवान विष्णु उसपर प्रसन्न हो गये। और उन्होने अपना तीसरा पग राजा बलि के शीष पर रख दिया। तत्पश्चात भगवान ने राजा बलि से वर माँगने के लिये कहा, तब राजा बलि ने उनसे कहा कि आप हमेशा मेरे साथ ही रहिये। मैं जब चाहूँ आपके दर्शन कर सकूँ, इसलिये आप मेरे द्वारपाल बन कर रहिये।

भगवान ने राजा बलि को पाताल लोक का राज दे दिया और स्वयं उसके द्वारपाल बनकर उसके साथ रहने चले गये। और देवराज इंद्र को पुनः स्वर्ग के सिंहासन पर बिठा दिया। इस प्रकार भगवान विष्णु ने उपेंद्र बनकर देवराज इंद्र की इच्छा पूर्ण करी। और राजा बलि की मनोकामना पूर्ण करी।

# खग्रास चन्द्रग्रहण- 7 सितंबर 2025 (भारत में दिखेगा, नियम पालनीय है

ग्रहण समय- रात्रि 9 बजकर 57 मिनट से देर रात 1 बजकर 27 मिनट तक।

सुतक प्रारम्भ- 7 सितंबर, रविवार दोपहर 12:57 से

सूतक प्रारम्भ (बालक, वृद्ध, रोगी एवं गर्भवती महिलाओं के लिए) - 7 सितम्बर शाम 5-27 से ग्रहण प्रारम्भ होने तक

ग्रहण भारत में दिखेगा इसलिये ग्रहण के नियम पालनीय आवश्यक है।

ग्रहणकाल में क्या करें, क्या न करें ? सम्पूर्ण जानकारी

चन्द्रग्रहण में 3 प्रहर (9 घंटे) और सूर्यग्रहण में 4 प्रहर (12 घंटे) पहले से सूतक माना जाता है। इस समय सशक्त व्यक्तियों को भोजन छोड़ देना चाहिए। इससे आयु, आरोग्य, बुद्धि की विलक्षणता बनी रहेगी। परंतु जो बालक, बूढ़े, बीमार व गर्भवती स्त्रियाँ हैं वे ग्रहण से 1.5 प्रहर (4.5 घंटे) पहले तक चुपचाप कुछ खा-पी लें तो चल सकता है। इसके बाद खाने से स्वास्थ्य की बड़ी हानि होती है। गर्भवती महिलाओं को तो ग्रहण के समय खास सावधान रहना चाहिए।

सूतक (ग्रहण-वेध) के पहले जिन पदार्थों में कुश, तिल या तुलसी-पत्ते डाल दिये जाते हैं वे सूतक व ग्रहण काल में दूषित नहीं होते। दूध या दूध से बने व्यंजनों में तिल या तुलसी न डालें। कुश आदि डला पानी सूतककाल में उपयोग में ला सकते हैं।

**ग्रहणकाल में भूलकर भी न करें ?**

ग्रहण में अगर सावधानी रही तो थोड़े ही समय में बहुत पुण्यमय, सुखमय जीवन होगा। अगर असावधानी हुई तो थोड़ी ही असावधानी से बड़े दंडित हो जायेंगे, दुःखी हो जायेंगे।

**ग्रहणकाल में –**

(1) भोजन करनेवाला अधोगति को जाता है।

(2) जो नींद करता है उसको रोग जरूर पकड़ेगा, उसकी रोगप्रतिकारकता का गला घुटेगा।

(3) जो पेशाब करता है उसके घर में दरिद्रता आती है। जो शौच जाता है उसको कृमिरोग होता है तथा कीट की योनि में जाना पड़ता है।

(4) जो संसार-व्यवहार (सम्भोग) करते हैं उनको सूअर की योनि में जाना पड़ता है।

(5) तेल-मालिश करने या उबटन लगाने से कुष्ठरोग होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

(6) ठगाई करनेवाला सर्पयोनि में जाता है। चोरी करनेवाले को दरिद्रता पकड़ लेती है।

(7) जीव-जंतु या किसी प्राणी की हत्या करनेवाले को नारकीय योनियों में जाना पड़ता है।

(8) पत्ते, तिनके, लकड़ी, फूल आदि न तोड़ें। दंतधावन, अभी ब्रश समझ लो, न करें।

(9) चिंता करते हैं तो बुद्धिनाश होता है।

**ये करने से सँवरेगा इहलोक–परलोक**

(1) सूर्यग्रहण के समय रुद्राक्ष-माला धारण करने से पाप नष्ट हो जाते हैं परंतु फैक्ट्रियों में बननेवाले नकली रुद्राक्ष नहीं, असली रुद्राक्ष हों।

(2) मंत्रदीक्षा में मिले मंत्र का ग्रहण के समय जप करने से उसकी सिद्धि हो जाती है।

(3) महर्षि वेदव्यासजी कहते हैं: "चन्द्रग्रहण के समय किया हुआ जप लाख गुना और सूर्यग्रहण के समय किया हुआ जप 10 लाख गुना फलदायी होता है। यदि गंगा जल पास में हो तो चन्द्रग्रहण में एक करोड़ गुना और सूर्यग्रहण में दस करोड़ गुना फलदायी होता है।"

तो स्वास्थ्य-मंत्र जप लेना, ब्रह्मचर्य का मंत्र भी सिद्ध कर लेना।

ग्रहण के समय किया हुआ ऐसा-वैसा कोई भी गलत या पाप कर्म अनंत गुना हो जाता है और इस समय भगवद्-चिंतन, भगवद्-ध्यान, भगवद्-ज्ञान का लाभ ले तो वह व्यक्ति सहज में भगवद्-धाम, भगवद्-रस को पाता है।

ग्रहण के समय अगर भगवद्-विरह पैदा हो जाता है तो वह भगवान को पाने में बिल्कुल पक्का है, उसने भगवान को पा लिया समझ लो। ग्रहण के समय किया हुआ जप, मौन, ध्यान, प्रभु-सुमिरन अनेक गुना हो जाता है। ग्रहण के बाद वस्त्रसहित स्नान करें।

**कल्पनातीत मेधाशक्ति बढ़ाने का प्रयोग–**

नारद पुराण के अनुसार सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण के समय उपवास करे और ब्राह्मी घृत को उँगली से स्पर्श करे एवं उसे देखते हुए 'ॐ नमो नारायणाय।' मंत्र का 8000 बार (80 माला) जप करे। थोड़ा शांत बैठे। ग्रहण–समाप्ति पर स्नान के बाद घी का पान करे तो बुद्धि विलक्षण ढंग से चमकेगी, बुद्धिशक्ति बढ़ जायेगी, कल्पनातीत मेधाशक्ति, कवित्वशक्ति और वचनसिद्धि (वाक्–सिद्धि) प्राप्त हो जायेगी।

# प्रेम- पच्चीसा (भाग 20)

**राजेन्द्र रंजन गायकवाड़**
**सेवानिवृत्त जेल अधीक्षक**
**बिलासपुर,छत्तीसगढ़**

रोहन, भारत आर्थिक और सामाजिक समस्याओं के निराकरण के लिए महात्मा गांधी और डॉ. भीमराव अंबेडकर का अनुयायी है। वह मानता है कि स्वावलंबन, ग्राम स्वराज और दलित उत्थान के माध्यम से ही देश की जड़ें मजबूत हो सकती हैं। दूसरी तरफ, उसकी जीवन संगिनी, माया, डॉ. अमर्त्य सेन और डॉ. मनमोहन सिंह के आर्थिक सुधारों की प्रशंसक है। वह इन सुधारों को ग्रामीण इलाकों में अपने एनजीओ 'आदर्श समाज' के माध्यम से लागू करके समस्याओं को दूर करने में विश्वास रखती है। लेकिन इन दोनों विचारधाराओं के बीच का टकराव उनके वैवाहिक जीवन और सामाजिक कार्यों में एक अनोखी चुनौती पैदा करता है।

रोहन और माया की मुलाकात एक साहित्यिक सम्मेलन भोपाल में हुई थी, जहां रोहन की रचनाओं में प्रेम और करुणा का उभार था दूसरी तरफ सामाजिक- आर्थिक बदलाव के लिए गांधीवादी सिद्धांतों पर व्याख्यान देता था, जबकि माया आर्थिक उदारीकरण के प्रभाव पर चर्चा कर गाँव में लोकप्रियता हासिल कर रही थी। शुरुआत में, उनके मतभेद बहसों तक सीमित थे, लेकिन प्यार ने उन्हें एक-दूसरे के करीब ला दिया। शादी के बाद,राशि उनकी बेटी अब पप्रथमिक शिक्षा पास कर चुकी है। राशि के जन्म के बाद ही साहित्य - सृजन और पत्रकारिता के साथ उन्होंने 'आदर्श समाज' नामक एनजीओ की स्थापना की जो ग्रामीण भारत में शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में काम करता है। रोहन का जोर हमेशा स्थानीय संसाधनों पर आत्मनिर्भरता बढ़ाने पर रहता है जैसे ग्राम सभाओं को मजबूत करना, कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देना और जातिगत भेदभाव को खत्म करने के लिए जागरूकता अभियान चलाना। वह अंबेडकर के संविधानिक मूल्यों को आधार बनाकर कहता, ₹सामाजिक न्याय के बिना आर्थिक विकास अधूरा है।₹

माया, जो अर्थशास्त्र में पीएचडी है, डॉ. सेन की 'क्षमता दृष्टिकोण' और डॉ. मनमोहन सिंह के 1991 के सुधारों से प्रेरित है। वह मानती है कि बाजार-आधारित सुधार, विदेशी निवेश और तकनीकी नवाचार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति दे सकते हैं। उसके एनजीओ के कार्यक्रमों में माइक्रोफाइनेंस लोन, डिजिटल शिक्षा और कृषि स्टार्टअप शामिल हैं। वह कहती, ₹गांवों में गरीबी दूर करने के लिए हमें वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ना होगा, न कि अलग-थलग रहना।₹ लेकिन समस्या तब शुरू होती है जब रोहन के गांधीवादी तरीके और माया के उदारीकरण वाले दृष्टिकोण आमने-सामने आते हैं। दोनों के साथ सुधा जी और मालती जी बराबरी से अपने विचार और ज़मीनी अनुभव शेयर करते थे। उनके साथ समूह की महिला पुरुष भी विचार गोष्ठी में सम्मिलित होते हैं।

एक बार, उनके एनजीओ ने मध्य प्रदेश के एक गांव में एक परियोजना शुरू की, जहां किसान कर्ज के बोझ तले दबे थे। रोहन ने सुझाव दिया कि गांववासी सहकारी समितियां बनाएं, स्थानीय बीजों का उपयोग करें और स्वदेशी उत्पादों पर निर्भर रहें—गांधी के ग्रामोदय की तरह। रिया ने विरोध किया और कहा, ₹यह पुराना तरीका है। हमें बैंकिंग सुधारों का फायदा उठाना चाहिए। माइक्रोफाइनेंस के जरिए किसानों को लोन देकर आधुनिक बीज और मशीनरी उपलब्ध कराएं, ताकि उत्पादन बढ़े और बाजार से जुड़ें।₹ बहस गर्म हो गई, लेकिन अंत में उन्होंने एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाया: रोहन की टीम ने सामाजिक जागरूकता पर काम किया, जबकि माया की टीम ने आर्थिक प्रशिक्षण दिया। परिणामस्वरूप, गांव में न केवल कर्ज कम हुआ, बल्कि महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ी।सभी बच्चे खुशी से स्कूल जाते जिन्हें देखकर उनके माता-पिता का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है।

इतना सब कुछ होने के बाद भी, चुनौतियां और अवसर आते रहते हैं। एक दिन, माया के सुधारों के कारण गांव में एक विदेशी कंपनी का निवेश आया, जो जैविक खेती के लिए अनुबंध कर रही थी। रोहन को लगा कि यह गांधी के स्वावलंबन को कमजोर करेगा, जबकि माया इसे अवसर मानती थी। ₹क्या हम हमेशा पुराने ढर्रे पर चलेंगे?₹ रिया ने पूछा। रोहन ने जवाब दिया, ₹सुधार जरूरी हैं, लेकिन वे अंबेडकर के समानता के सिद्धांतों पर आधारित होने चाहिए, न कि सिर्फ लाभ पर।₹ इस टकराव ने उन्हें सोचने पर मजबूर किया कि कैसे दोनों विचारधाराएं एक-दूसरे को पूरक बना सकती हैं।

आगे चलकर, 'आदर्श समाज' ने एक नई पहल शुरू की—'संवाद- बे -विवाद' नामक वर्कशॉप, आयोजित की जहां गांधी, अंबेडकर, अमर्त्य सेन और डॉ मानमोहम सिंह के विचारों को एक साथ वर्तमान साकार के प्रयासों विस्तार से की गई। हरेक पखवाड़े में सभी ग्रामीणों को जोड़कर ग्रामीण समस्याओं का समाधान संस्था के हाल में खोजा जाता। रोहन और माया अब समझ चुके थे कि भारत की जटिल समस्याओं के लिए एकांगी दृष्टिकोण काफी नहीं। उनका एनजीओ अब एक मिसाल बन गया है, जहां परंपरा और आधुनिकता का मेल नई उम्मीद जगा रहा है।

विदेशी निवेश आने की खबर से रोहन और माया की टीम कि चर्चा समाचार पत्रों और सोशल मीडिया के माध्यम से गाँव से शहर और शहर से प्रदेश के अलावा आसपास के राज्यों में फैलती है फिर एक दिन,,,,

*(भाग 21)*

# गिलोय का एक पत्ता आपको 80 सालों तक बीमार नहीं होने देगा...

गिलोय एक ही ऐसी बेल है, जिसे आप सौ रोगों की एक दवा कह सकते हैं।

इसलिए इसे संस्कृत में अमृता नाम दिया गया है। कहते हैं कि देवताओं और दानवों के बीच समुद्र मंथन के दौरान जब अमृत निकला और इस अमृत की बूंदें जहां-जहां छलकीं, वहां-वहां गिलोय की उत्पत्ति हुई।

**1. गिलोय बढ़ाती है रोग प्रतिरोधक क्षमता :-**

गिलोय एक ऐसी बेल है, जो व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा कर उसे बीमारियों से दूर रखती है। इसमें भरपूर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो शरीर में से विषैले पदार्थों को बाहर निकालने का काम करते हैं। यह खून को साफ करती है, बैक्टीरिया से लड़ती है। लिवर और किडनी की अच्छी देखभाल भी गिलोय के बहुत सारे कामों में से एक है। ये दोनों ही अंग खून को साफ करने का काम करते हैं।

**2. ठीक करती है बुखार :-**

अगर किसी को बार-बार बुखार आता है तो उसे गिलोय का सेवन करना चाहिए। गिलोय हर तरह के बुखार से लडने में मदद करती है। इसलिए डेंगू के मरीजों को भी गिलोय के सेवन की सलाह दी जाती है। डेंगू के अलावा मलेरिया, स्वाइन फ्लू में आने वाले बुखार से भी गिलोय छुटकारा दिलाती है।

**3. गिलोय के फायदे – डायबिटीज के रोगियों के लिए**

गिलोय एक हाइपोग्लाइसेमिक एजेंट है यानी यह खून में शर्करा की मात्रा को कम करती है। इसलिए इसके सेवन से खून में शर्करा की मात्रा कम हो जाती है, जिसका फायदा टाइप टू डायबिटीज के मरीजों को होता है।

**5. पाचन शक्ति बढ़ाती है -:**

यह बेल पाचन तंत्र के सारे कामों को भली-भांति संचालित करती है और भोजन के पचने की प्रक्रिया में मदद कती है। इससे व्यक्ति कब्ज और पेट की दूसरी गड़बडियों से बचा रहता है।

**6. कम करती है स्ट्रेस -:**

गलाकाट प्रतिस्पर्धा के इस दौर में तनाव या स्ट्रेस एक बड़ी समस्या बन चुका है। गिलोय एडप्टोजन की तरह काम करती है और मानसिक तनाव और चिंता (एंजायटी) के स्तर को कम करती है। इसकी मदद से न केवल याददाश्त बेहतर होती है बल्कि मस्तिष्क की कार्यप्रणाली भी दुरूस्त रहती है और एकाग्रता बढ़ती है।

**7. बढ़ाती है आंखों की रोशनी :-**

गिलोय को पलकों के ऊपर लगाने पर आंखों की रोशनी बढ़ती है। इसके लिए आपको गिलोय पाउडर को पानी में गर्म करना होगा। जब पानी अच्छी तरह से ठंडा हो जाए तो इसे पलकों के ऊपर लगाएं।

**8. अस्थमा में भी फायदेमंद :-**

मौसम के परिवर्त न पर खासकर सर्दियों में अस्थमा को मरीजों को काफी परेशानी होती है। ऐसे में अस्थमा के मरीजों को नियमित रूप से गिलोय की मोटी डंडी चबानी चाहिए या उसका जूस पीना चाहिए। इससे उन्हें काफी आराम मिलेगा।

**9. गठिया में मिलेगा आराम :-**

गठिया यानी आर्थराइटिस में न केवल जोड़ों में दर्द होता है, बल्कि चलने-फिरने में भी परेशानी होती है। गिलोय में एंटी आर्थराइटिक गुण होते हैं, जिसकी वजह से यह जोड़ों के दर्द सहित इसके कई लक्षणों में फायदा पहुंचाती है।

**10. अगर हो गया हो एनीमिया, तो करिए गिलोय का सेवन :-**

भारतीय महिलाएं अक्सर एनीमिया यानी खून की कमी से पीड़ित रहती हैं। इससे उन्हें हर वक्त थकान और कमजोरी महसूस होती है। गिलोय के सेवन से शरीर में लाल रक्त कणिकाओं की संख्या बढ़ जाती है और एनीमिया से छुटकारा मिलता है।

**11. बाहर निकलेगा कान का मैल :-**

कान का जिद्दी मैल बाहर नहीं आ रहा है तो थोड़ी सी गिलोय को पानी में पीस कर उबाल लें। ठंडा करके छान के कुछ बूंदें कान में डालें। एक-दो दिन में सारा मैल अपने आप बाहर जाएगा।

**12. कम होगी पेट की चर्बी :-**

गिलोय शरीर के उपापचय (मेटाबॉलिजम) को ठीक करती है, सूजन कम करती है और पाचन शक्ति बढ़ाती है। ऐसा होने से पेट के आस-पास चर्बी जमा नहीं हो पाती और आपका वजन कम होता है।

**13. खूबसूरती बढ़ाती है गिलोय :-**

गिलोय न केवल सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है, बल्कि यह त्वचा और बालों पर भी चमत्कारी रूप से असर करती है....

**14. जवां रखती है गिलोय :-**

गिलोय में एंटी एजिंग गुण होते हैं, जिसकी मदद से चेहरे से काले धब्बे, मुंहासे, बारीक लकीरें और झुर्रियां दूर की जा सकती हैं। इसके सेवन से आप ऐसी निखरी और दमकती त्वचा पा सकते हैं, जिसकी कामना हर किसी को होती है। अगर आप इसे त्वचा पर लगाते हैं तो घाव बहुत जल्दी भरते हैं। त्वचा पर लगाने के लिए गिलोय की पत्तियों को पीस कर पेस्ट बनाएं।

प्रतिदिन गिलोय का एक पत्ता खाएँ और निरोगी रहें।

# मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्णय पर भारतीय जाटव समाज ने जताया आभार

जाटव समाज ने इस महत्वपूर्ण फैसले को एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताते हुए मुख्यमंत्री योगी महाराजजी का हृदय से अभिनंदन और आभार प्रकट किया

आउटसोर्स भर्ती में आरक्षण लागू करने को बताया ऐतिहासिक और सामाजिक न्याय की दिशा में बड़ा कदम

महाराजजी का यह निर्णय न केवल सामाजिक समानता को सुदृढ़ करता है, बल्कि यह भी प्रमाणित करता है कि योगी सरकार वंचित वर्गों के अधिकारों और अवसरों को सुरक्षित रखने के प्रति प्रतिबद्ध है – वरिष्ठ नेता उपेंद्र सिंह

**आगरा, संजय सागर सिंह।** उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आउटसोर्स कर्मचारियों की भर्ती प्रक्रिया में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, महिलाओं और दिव्यांगजनों के लिए आरक्षण का प्रावधान लागू किए जाने पर भारतीय जाटव समाज ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आभार जताया है। समाज ने इस फैसले को दलित और वंचित वर्गों के हित में लिया गया ऐतिहासिक निर्णय बताया है, जो सामाजिक न्याय की भावना को सशक्त करता है।

भारतीय जाटव समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्रसिंह, राष्ट्रीय संगठन सचिव अनिल कुमार (पूर्व न्यायाधीश) एवं प्रदेश अध्यक्ष नेत्रपाल सिंह ने 3 अगस्त 2025 को मुख्यमंत्री से लखनऊ स्थित उनके आवास पर मुलाकात की थी। इस दौरान समाज के प्रतिनिधियों ने आउटसोर्स कर्मचारियों की भर्ती में आरक्षण लागू किए जाने की मांग को लेकर एक ज्ञापन भी सौंपा था।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया था कि राज्य सरकार इस विषय पर गंभीरता से विचार कर रही है। समाज की इस पहल और सरकार के त्वरित निर्णय के परिणामस्वरूप अब यह नीतिगत घोषणा धरातल पर उतर चुकी है।

भारतीय जाटव समाज ने मुख्यमंत्री योगी महाराज जी के इस निर्णय को निजीकरण की प्रक्रिया में आरक्षण के भविष्य को लेकर उपजी आशंकाओं का स्पष्ट समाधान करार दिया।

साथ ही वरिष्ठ नेता उपेंद्र सिंह ने महाराज जी का हृदय से आभार व्यक्त कहा कि यह निर्णय न केवल सामाजिक समानता को सुदृढ़ करता है, बल्कि यह भी प्रमाणित करता है कि योगी सरकार वंचित वर्गों के अधिकारों और अवसरों को सुरक्षित रखने के प्रति प्रतिबद्ध है। समाज ने इस फैसले को एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का हृदय से अभिनंदन और आभार प्रकट किया है।

## संसार की बड़ी से बड़ी प्रयोगशाला में भी अभी तक कोई ऐसा कृत्रिम फिंगर प्रिंट नहीं बन सका जो किसी मनुष्य के फिंगरप्रिंट जितना बारीक, सजीव और अद्वितीय हो।

टेक्नोलॉजी जहाँ रुक जाती है, वहाँ से ईश्वर की कला शुरू होती है। उसके जैसा आज तक कोई निर्माता/कारीगर/कलाकार/सर्जन नहीं बना। भले हम माता के गर्भ से जन्म लेते हैं तो भी एक ही माता के सभी बच्चों की अंगुलियों की छाप एक जैसी नहीं होती। सभी बच्चों की बात छोड़ दें, एक ही बच्चे की सभी अंगुलियों की छाप/फिंगर प्रिंट भी एक जैसे नहीं होते। कितना अद्भुत सृजन है कि किसी एक अंगुली की छाप में भी, ना कोई मेल, ना कोई समानता, ना पूर्वजों से, ना अगली पीढ़ियों से। हर व्यक्ति की एक-एक अंगुली ईश्वर की ओर से लिखी गई एक विशिष्ट पहचान है। न एक कोशिका कम है न एक ज्यादा। आश्चर्य यह है कि कुछ जल जाये या कट लग जाए, तब भी रिपेयर होकर वहीं लकीरें/छाप पुनः बन जाती हैं। यहां आकर विज्ञान भी मौन हो जाता है। यह केवल मनुष्य की विशिष्टता नहीं है बल्कि ईश्वर की हस्तलिपि है। यदि हम इसे ठीक से देख/समझ सकते हैं तो हमारे भीतर कभी विक्षिप्तता/डिप्रेशन आ ही नहीं सकता क्योंकि हमारा यह भरोसा व्यापक हो जाता है कि कोई है हमारे साथ, जो हमें उस समय से भी जानता है जब हमने साँस भी नहीं ली थी। जब हम गर्भ में ही थे, तभी से हमें बनाना/सम्हालना जिसने शुरू कर दिया था तो अब वह किन्हीं परिस्थितियों में हमें अकेला कैसे छोड़ सकता है?

# पुलिस आयुक्त, दिल्ली ने कांस्टेबल करतार सिंह को बिना बारी के पदोन्नति प्रदान की





## पुलिस मुख्यालय में आयोजित एक समारोह में अगले पद पर पदोन्नत

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

**नई दिल्ली:** श्री सतीश गोलछा, आईपीएस, पुलिस आयुक्त, दिल्ली ने कांस्टेबल करतार सिंह को 1 अगस्त, 2025 की तड़के एशियाड विलेज, हौज़ खास के पास एक सशस्त्र मुठभेड़ के बाद एक कुख्यात अंतरराज्यीय डकैती गिरोह को पकड़कर असाधारण साहस, उत्कृष्ट बहादुरी और त्वरित प्रतिक्रिया का प्रदर्शन करने के लिए बिना बारी के पदोन्नति प्रदान की है ।पुलिस मुख्यालय में आयोजित एक समारोह में, पुलिस आयुक्त, दिल्ली ने कांस्टेबल करतार सिंह को हेड कांस्टेबल के अगले उच्च पद पर पदोन्नत किया। पुलिस आयुक्त, दिल्ली ने भी उन्हें इस उपलब्धि के लिए बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की-31 जुलाई-1 अगस्त, 2025 की मध्यरात्रि को, दक्षिण जिले के मालवीय नगर पुलिस चौकी के कांस्टेबल करतार सिंह को हाल ही में हुई घरों में चोरी की घटनाओं को देखते हुए अपराध की रोकथाम और पता लगाने हेतु गश्त पर तैनात किया गया था। कांस्टेबल करतार सिंह को इस बारे में जानकारी दी गई और अपराधियों का विवरण उनके साथ साझा किया गया। सुबह लगभग 4 बजे, रात्रि गश्त के दौरान कांस्टेबल करतार सिंह ने मोटरसाइकिल पर तीन संदिग्ध व्यक्तियों को देखा। चुनौती दिए जाने पर, संदिग्ध तेज़ गति से भाग निकले और कई कॉलोनियों में 30 मिनट तक उनका पीछा किया। पीछा खेल गाँव में समाप्त हुआ, जहाँ संदिग्धों को रोक लिया गया। मुठभेड़ के दौरान, उन्होंने कांस्टेबल करतार सिंह पर लोहे की छड़ों से हमला किया, जिसका निशाना उनका सिर था। उनके हेलमेट ने उन्हें गंभीर चोट से बचा लिया। संख्या में कम होने और सीधे हमले के बावजूद, कांस्टेबल करतार सिंह ने अनुकरणीय धैर्य बनाए रखा। मौखिक चेतावनी देने और हवा में एक चेतावनी भरी गोली चलाने के बाद, उसने आत्मरक्षा में एक नियंत्रित गोली चलाई, जिससे एक आरोपी के पैर में चोट लग गई। तीनों को जल्द ही काबू कर लिया गया। मुठभेड़ के बाद, एशियाड गाँव के निजी सुरक्षाकर्मियों ने आरोपियों को हिरासत में लेने और घायलों को अस्पताल पहुँचाने में पुलिस की मदद की। बाद में, उनकी पहचान सिकंदर (घायल व्यक्ति), दर्शन सिंह और विजेंद्र सिंह के रूप में हुई। उनके कब्जे से घर में सेंध लगाने वाले औजार और एक मोटरसाइकिल बरामद की गई। इस संबंध में हौज़ खास थाने में मामला दर्ज किया गया और पूछताछ के दौरान, उन्होंने खुलासा किया कि उन्होंने चोरी की थी और चोरी करने के लिए इलाके में रेकी कर रहे थे।

**स्टॉल प्रस्ताव:**
सिंगल साइड ओपन स्टोल: 2000
कॉर्नर साइड स्टोल: 3500
तीन साइड ओपन स्टोल: 4500
सिर्फ एक टेबल: 1000
सिर्फ दो टेबल: 1250

**कार्यक्रम विवरण:**
रक्षा गरबा-डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान: डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

**तारीखें: 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025**
* दुकान का आकार: 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ:
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

**भुगतान की शर्तें:**
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क: इंदु राजपूत
मोबाइल: 9210210071

**रक्षा द सेवियर की ओर से प्रस्तुत**
गरबा महोत्सव में विशेष अपील
हमारी रक्षा द सेवियर की ओर से
रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है—
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

**आप अपने घर से लाएँ और दान करें:**
- पुराने कपड़े
- पुराने कंबल
- पुराने जूते-चप्पल
- बच्चों के लिए बैग
- किताबें

आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है

**स्थान:**
रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

**विशेष सूचना**
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
- दशहरे के दूसरे दिन
- दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
- स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड

**स्थान विवरण:**
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

**संपर्क सूत्र:**
इंदु राजपूत – 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।


## आजादपुर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के पुन: अध्यक्ष बने भारत सिंह राघव

**नई दिल्ली।** दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेंद्र यादव व दिल्ली के प्रभारी निजामुद्दीन काजी ने भारत सिंह राघव को आजादपुर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी का पुनः अध्यक्ष नियुक्त किया है।

इस अवसर पर भारत सिंह राघव ने पार्टी के शीर्ष नेतृत्व का तहेदिल से धन्यवाद करते कहा कि पार्टी ने जो लगातार मुझ पर विश्वास किया है, मैं उस पर खरा उतरने की कोशिश करूंगा और पार्टी के लिए समर्पित रहूंगा। साथ ही पार्टी की नीतियों व कार्यो को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करूंगा। जननायक राहुल गांधी और दिल्ली के अध्यक्ष देवेंद्र यादव के हाथ मजबूत करने का काम करूंगा।



उन्होंने कहा कि कांग्रेस ही एकमात्र ऐसी पार्टी है जो सभी को साथ लेकर चलती है। कांग्रेस का इतिहास रहा है कि कांग्रेस ने जो कहा है वह करके दिखाया है आज जो आप दिल्ली में विकास देख रहे हैं वह कांग्रेस पार्टी की देन है, क्योंकि कांग्रेस कहने में नहीं करने में विश्वास रखती है।

## भीषण बाढ़ विभीषिका...!

लाखों परिवार अपने ही घरों में कैद,
भीषण बाढ़ विभीषिका झेलते खेद।
जीवन 'अस्तित्व' की लड़ाई में दिखा,
देश के अन्नदाता की हैं यह भूमिका।

इस घड़ी में जरूरी सभी हो एकजुट,
त्राहि-त्राहि करते रहें दम रहा हैं घुट।
आमजन अपने स्तर पे सहयोग करें,
सरकारी मशीनरी इसका ध्यान धरे।

समाजसेवी राहत कार्य में जुट चुके,
बॉलीवुडी मददगार हाथ खुल सकें।
सहयोग मानवीय संवेदनाएँ प्रतीक,
जन-जन आंसू पोंछे जवाब सटीक।
(संदर्भ-पंजाब में भीषण बाढ़ विभीषिका)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

**FREE HEALTH CHECK-UP CAMP**
Organised by :
St. John Ambulance Brigade Delhi
on 07th Sep. 2025 (Sunday) 09:00am to 02:00pm




Courtesy :-
Gurudwara Singh Sabha Giri Nagar &
Guru Amardas Sewa Trust
Govind Puri, Kalkaji, New Delhi
Contact No : Guru Amardas Sewa Trust
9350791313, 9268581313


# "संत दुर्बलनाथ जी महाराज : सत्य, साधना और समरसता के प्रकाशस्तंभ"

खटीक समाज ही नहीं, आज की बदलती दुनिया में उनकी शिक्षाएँ समाज को दिशा देने वाला प्रकाशस्तंभ हैं।

संत दुर्बलनाथ जी महाराज ने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि सत्य का पालन, साधना का अभ्यास और समाज में समरसता का प्रसार ही वास्तविक धर्म है। उन्होंने आडंबरों और भेदभाव का विरोध किया तथा शिक्षा, नैतिकता और सेवा को मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य बताया। आज जब समाज भौतिकता और विभाजन की ओर बढ़ रहा है, तब उनकी शिक्षाएँ हमें ठहरकर सोचने और सही मार्ग चुनने की प्रेरणा देती हैं। उनका जीवन और विचार आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा-स्रोत बने रहेंगे।

---*डॉ. सत्यवान सौरभ*

भारत की महान संत परंपरा में संत दुर्बलनाथ जी महाराज का नाम विशेष आदर और श्रद्धा के साथ लिया जाता है। उनका जीवन एक साधक का ही नहीं, बल्कि एक समाज सुधारक, शिक्षक और आध्यात्मिक पथप्रदर्शक का था। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि साधना का अर्थ केवल व्यक्तिगत मुक्ति नहीं, बल्कि पूरे समाज को प्रकाशमय करना है। उनका संदेश था कि सत्य की राह कठिन हो सकती है, लेकिन वही मनुष्य को उच्चतम शिखर तक ले जाती है।

संत दुर्बलनाथ महाराज (जन्म 1918 ग्राम बिचगाँव, जिला अलवर, राजस्थान) ने अपने जीवन को अध्यात्म, तप और साधना के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, ऊंच-नीच और असमानताओं को समाप्त करने का बीड़ा उठाया। उनका संदेश था कि ईश्वर एक है और हर व्यक्ति ईश्वर की संतान है। संत दुर्बलनाथ जी महाराज ने खटीक समाज को नई दिशा और प्रेरणा दी। उन्होंने इस समाज को शिक्षा, संगठन और एकता के महत्व को समझाया। उनका मानना था कि यदि समाज को प्रगति करनी है, तो उसे ज्ञान और नैतिकता दोनों में आगे बढ़ना होगा।

आज खटीक समाज जिन क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है, उसमें संत दुर्बलनाथ जी महाराज की शिक्षाओं का सीधा प्रभाव है। शिक्षा और सेवा की दिशा में उनके बताए मार्ग पर चलकर समाज ने अपनी पहचान बनाई है।

उनकी शिक्षाओं ने खटीक समाज को आत्मसम्मान, साहस और नई सोच दी। यही कारण है कि आज यह समाज न केवल अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है, बल्कि समाज सुधार और राष्ट्र निर्माण में भी सक्रिय योगदान दे रहा है।

संत दुर्बलनाथ जी महाराज ने अपने जीवन में तप, त्याग और सेवा को आधार बनाया। उन्होंने कभी भी दिखावे या आडंबर को महत्व नहीं दिया। उनके लिए भक्ति का अर्थ केवल मंदिरों की परिक्रमा नहीं था, बल्कि मानवता की सेवा करना था। वे मानते थे कि हर प्राणी में परमात्मा का अंश है और उसकी सेवा ही सच्ची पूजा है। उनकी साधना न केवल आत्मिक उन्नति की साधना थी, बल्कि समाज के उत्थान की भी साधना थी।

उनकी शिक्षाओं का एक केंद्रीय बिंदु था — सत्य। वे कहा करते थे कि झूठ पर आधारित कोई भी व्यवस्था टिक नहीं सकती। चाहे वह व्यक्ति का जीवन हो, परिवार हो या समाज, उसकी नींव सत्य पर ही टिकी रहनी चाहिए। यही कारण है कि उन्होंने अपने अनुयायियों को सदैव सत्य बोलने, सत्य स्वीकार करने और सत्य का पालन करने की प्रेरणा दी। उनका यह कथन आज भी उतना ही प्रासंगिक है कि ₹सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं और असत्य से बड़ा कोई पाप नहीं।₹

संत दुर्बलनाथ जी महाराज ने सामाजिक समरसता को अपने जीवन का मिशन बना लिया। वे जाति, वर्ग और धर्म के भेदभाव के खिलाफ थे। उनका मानना था कि जब तक समाज में विभाजन रहेगा, तब तक सच्ची शांति स्थापित नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि मनुष्य का मूल्य उसकी जाति या जन्म से नहीं, बल्कि उसके कर्म और आचरण से तय होता है। उनके प्रवचनों में हमेशा यह संदेश गूँजता था कि हमें हर इंसान को समान दृष्टि से देखना चाहिए, तभी समाज में समरसता स्थापित हो सकती है।

उनकी शिक्षाओं का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू शिक्षा था। वे मानते थे कि शिक्षा ही वह साधन है, जिससे अज्ञान का अंधकार दूर हो सकता है। लेकिन शिक्षा का अर्थ केवल अक्षर ज्ञान नहीं था, बल्कि नैतिक शिक्षा, मानवता का बोध और कर्तव्यपरायणता भी उसमें शामिल थी। वे चाहते थे कि हर बालक और हर युवा अपने भीतर ज्ञान का दीप जलाए और उसी ज्ञान से समाज का मार्ग प्रशस्त करे। आज जब शिक्षा केवल नौकरी पाने का साधन बन गई है, तब संत दुर्बलनाथ जी की शिक्षा संबंधी दृष्टि हमें मूल्यों की ओर लौटने की प्रेरणा देती है।

संत दुर्बलनाथ जी महाराज ने अपने जीवन से यह संदेश भी दिया कि साधना केवल पहाड़ों, जंगलों या मठों तक सीमित नहीं है। साधना वही है, जो जीवन के हर क्षण में, हर कार्य में की जाए। उन्होंने कहा था कि खेतों में हल चलाना भी साधना है, यदि वह ईमानदारी और परिश्रम से किया जाए। परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाना भी साधना है, यदि उसमें प्रेम और सत्य का भाव हो। उनका यह दृष्टिकोण जीवन को धर्म और धर्म को जीवन से जोड़ता है।

आज के दौर में जब समाज भौतिकता और उपभोग की दौड़ में उलझा हुआ है, तब संत दुर्बलनाथ जी महाराज की शिक्षाएँ हमें ठहरकर सोचने पर मजबूर करती हैं। वे हमें याद दिलाती हैं कि धन और पद की चमक क्षणिक है, लेकिन सत्य, साधना और सेवा अमर हैं। यदि हम केवल भौतिक सुख की खोज करेंगे तो भीतर से खाली हो जाएँगे। लेकिन यदि हम संतों की शिक्षाओं का पालन करेंगे तो जीवन में संतोष, शांति और उद्देश्य मिलेगा।

संत दुर्बलनाथ जी महाराज का जीवन यह भी सिद्ध करता है कि एक साधक केवल अपने लिए नहीं जीता, वह पूरे समाज के लिए जीता है। उनकी साधना का फल केवल उनके शिष्यों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समाज के हर वर्ग ने उससे लाभ पाया। आज भी उनके अनुयायी शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, जो उनके विचारों की जीवंत धारा है।

# लगातार बारिश, बढ़ते खतरे और हमारी जिम्मेदारी

"बारिश केवल राहत नहीं, जिम्मेदारी की भी परीक्षा है — बिजली से सावधानी, घर में रहकर सुरक्षा और समाज में जागरूकता ही सच्चा बचाव है।"

लगातार बारिश ने जनजीवन को चुनौती दी है। बिजली की लाइनें, खंभे और खुले तार मौत का जाल बन सकते हैं, वहीं पानी से भरी सड़कें और नालियां दुर्घटनाओं को न्योता देती हैं। ऐसे में नागरिकों की छोटी-सी लापरवाही बड़ी त्रासदी में बदल सकती है। प्रशासन ने चेतावनी दी है कि बारिश के दिनों में बिना वजह घर से बाहर न निकलें और बिजली से जुड़े उपकरणों से दूरी बनाए रखें। समाज को मिलकर जागरूकता फैलानी होगी। याद रखें — सुरक्षा ही बचाव है और ज़िंदगी है तो सब कुछ है।

*- डॉ. प्रियंका सौरभ*

बरसात का मौसम प्रकृति की सबसे सुंदर देन है। यह धरती की प्यास बुझाता है, फसलों को जीवन देता है, नदियों और तालाबों को भरता है और वातावरण को शुद्ध करता है। लेकिन जब यह बारिश लगातार और असामान्य रूप से होती है, तो यही वरदान कभी-कभी अभिशाप का रूप भी ले लेता है। भारत जैसे देश में, जहां अब भी बुनियादी ढांचे की मजबूती पूरी तरह से नहीं हो पाई है, वहां लगातार बारिश लोगों के लिए मुसीबत बन जाती है। पिछले कुछ वर्षों में हमने देखा है कि असामान्य बारिश के कारण कई राज्यों में बाढ़ जैसी स्थिति पैदा हुई, सैकड़ों लोग बेघर हो गए, बिजली और पानी की आपूर्ति बाधित हो गई और जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया।

ऐसे समय में केवल सरकार या प्रशासन पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि हर नागरिक का यह कर्तव्य बनता है कि वह स्वयं भी सावधानी बरते और दूसरों को जागरूक करे। यह सच है कि प्राकृतिक आपदाएँ पूरी तरह से हमारे नियंत्रण में नहीं होतीं, लेकिन सावधानी और अनुशासन से हम उनके प्रभाव को कम कर सकते हैं।

बरसात के दिनों में सबसे बड़ा खतरा बिजली से होता है। जब जमीन गीली हो, सड़कें पानी से भरी हों और चारों ओर नमी फैली हो, तो करंट लगने का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। बिजली विभाग ने समय रहते जनता को चेताया है कि इस मौसम में बिजली की तारों, खंभों, केबल और मीटर से दूरी बनाए रखें। ज़रा सी लापरवाही जानलेवा साबित हो सकती है। भारत में हर साल बारिश के मौसम में सैकड़ों लोग बिजली के करंट की चपेट में आकर अपनी जान गंवा बैठते हैं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो (NCRB) की रिपोर्ट के अनुसार, केवल बिजली से जुड़े हादसों में हर साल करीब 10-12 हज़ार लोगों की मौत होती है, जिनमें बड़ी संख्या बारिश के महीनों में होती है। यह आंकड़े इस बात को स्पष्ट करते हैं कि खतरा कितना गंभीर है।

गांव और कस्बों में अब भी खुले तार, ढीले खंभे और जर्जर पोल आम दृश्य हैं। लगातार बारिश में जब ये पानी में डूब जाते हैं, तो इनमें करंट फैलने की संभावना बढ़ जाती है। यह खतरा और भी बढ़ जाता है जब लोग असावधानीवश इनसे संपर्क में आ जाते हैं। कई बार बच्चे खेल-खेल में पानी के गड्ढों में उतर जाते हैं, जबकि उन्हें यह पता नहीं होता कि उसी पानी में कोई बिजली का तार गिरा हुआ है। ऐसी घटनाएं हर साल होती हैं और यह हमारे समाज की सबसे बड़ी असावधानी को दर्शाती हैं।

बरसात के दिनों में घर से बाहर निकलना भी जोखिम से खाली नहीं है। बिना वजह घर से बाहर निकलने से बचना चाहिए। आवश्यक काम भी हो तो सावधानी के साथ जाना चाहिए। फिसलन भरी सड़कें, गहरे गड्ढे और नालियां पानी में छिप जाती हैं और दुर्घटनाएं आम हो जाती हैं। कई बार तो लोग केवल जिज्ञासा या मनोरंजन के लिए पानी से भरी जगहों पर चले जाते हैं, वहां फोटो खिंचवाते हैं, वीडियो बनाते हैं और सोशल मीडिया पर डालते हैं। लेकिन यही जिज्ञासा उन्हें खतरे में डाल देती है। अनजाने में वे गहरे गड्ढे, नालों या करंट लगे पानी की चपेट में आ सकते हैं। हमें यह समझना होगा कि रोमांच या दिखावे से बड़ी चीज़ हमारी जान है। सच यही है कि ज़िंदगी है तो सब कुछ है।

लगातार बारिश केवल व्यक्तिगत सुरक्षा को ही नहीं, बल्कि प्रशासन के लिए भी बड़ी चुनौती लेकर आती है। बिजली विभाग को चौबीसों घंटे सतर्क रहना पड़ता है ताकि लोगों तक बिजली की आपूर्ति बनी रहे और हादसों से बचा जा सके। नगर निगम और पंचायतों को जलभराव की समस्या से निपटना होता है। स्वास्थ्य विभाग को डेंगू, मलेरिया और पानी से फैलने वाली बीमारियों से लड़ना पड़ता है। बारिश के बाद मच्छरों का प्रकोप बढ़ जाता है, जिससे अस्पतालों में मरीजों की संख्या अचानक कई गुना हो जाती है। यातायात विभाग को भी सड़क दुर्घटनाओं और ट्रैफिक जाम से जूझना पड़ता है। प्रशासन का यह प्रयास तभी सफल हो सकता है जब नागरिक भी जिम्मेदारी समझें और सहयोग करें।

बरसात जैसी प्राकृतिक चुनौती का सामना केवल प्रशासनिक उपायों से नहीं किया जा सकता। समाज को भी जागरूक होकर अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। मोहल्ले और गांव के लोग मिलकर नालियां साफ रखें ताकि जलभराव न हो। बिजली के खंभों और तारों की जानकारी विभाग तक पहुँचाएं। बच्चों को सिखाएं कि बारिश में खुले तार या पोल के पास न जाएं। सोशल मीडिया पर केवल सही जानकारी फैलाएं, अफवाहें नहीं। कई बार झूठी खबरें और अफवाहें स्थिति को और गंभीर बना देती हैं।

बरसात हमें केवल संकट ही नहीं देती, बल्कि यह हमें कई सबक भी सिखाती है। यह हमें बताती है कि हमें अपने बुनियादी ढांचे को और मजबूत करना चाहिए। यह याद दिलाती है कि बिजली और पानी जैसे प्राकृतिक तत्वों से खिलवाड़ करना जानलेवा हो सकता है। यह हमें सिखाती है कि अनुशासन और सावधानी ही जीवन की रक्षा करते हैं। अगर लोग थोड़ी सी सावधानी बरतें तो बड़ी से बड़ी आपदा का असर भी कम किया जा सकता है।

हमारे देश में कई बार देखा गया है कि जब भी कोई प्राकृतिक आपदा आती है, तो लोग मिलकर उसका सामना करते हैं। बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए स्वयंसेवी संगठन आगे आते हैं, लोग एक-दूसरे को आश्रय और भोजन देते हैं। यही सामूहिकता और सहयोग भारतीय समाज की सबसे बड़ी ताकत है। बरसात जैसी स्थिति में भी यही सहयोग और जागरूकता जरूरी है।

बरसात का मौसम जितना सुंदर और जीवनदायी है, उतना ही खतरनाक भी हो सकता है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम इसे वरदान बनाएँ या अभिशाप। यदि हम सावधान रहेंगे, प्रशासन की चेतावनियों को गंभीरता से लेंगे और सामाजिक जिम्मेदारी निभाएँगे, तो यह मौसम हमारे लिए आनंद और ताज़गी लेकर आएगा। लेकिन अगर हम लापरवाही करेंगे, बिजली के तारों और खंभों के पास जाएंगे, बिना वजह घर से निकलेंगे और अफवाहें फैलाएँगे, तो यह मौसम दुख और त्रासदी में बदल सकता है।

# बाबा रामदेव महाराज की दशमी पर आयोजित मेले में लाखों लोग हुए शामिल



स्वतंत्र सिहं भुल्लर

**नई दिल्ली।** दौसा जिले के सिकंदरा के निहालपुरा स्थित भगवान विष्णु के अवतार बाबा रामदेव जी महाराज के मंदिर परिसर में बाबा की दशमी के अवसर पर आयोजित बाबा रामदेव मेले का विशाल आयोजन किया गया। जहां लाखों लोग मेले में आते हैं।मुख्य अतिथि उप मुख्यमंत्री राजस्थान प्रेम चंद बैरवा,रमेश बिधूड़ी जी पूर्व सांसद मुख्य अतिथि रहे।इस दौरान समाज की प्रतिभाओं व भामाशाहों को भी सम्मानित किया।श्रद्धा और आस्था का प्रतीक यह मेला सामाजिक समरसता और लोकसंस्कृति का अद्भुत संगम है।

कार्यक्रम के दौरान सिकराय विधायक विक्रम बंशीवाल जी,पूर्व मंत्री श्रीमती ममता भूपेश जी, पूर्व राज्यसभा सांसद रामकुमार वर्मा जी, शिवचरण मेहरा जी (अध्यक्ष बाबा रामदेव ट्रस्ट),भामाशाह डॉ. कल्याण सहाय बैरवा जी (सरपंच), श्री सुल्तान बैरवा जी (प्रधान पं.स. सिकंदरा), श्री रामनारायण खन्ना जी (भामाशाह बैरवा समाज), पूरन धवन वरिष्ठ समाजसेवी बैरवा समाज, श्री राधेश्याम जी (प्रदेशाध्यक्ष बैरवा महासभा हरियाणा), नरेश धवन जी, चंद्रपाल बैरवा (पूर्व महामंत्री बैरवा समाज दिल्ली प्रदेश), अशोक भीतलवाल जी, दिलीप देवतवाल जी सहित प्रमुख जन उपस्थित रहे। बाबा रामदेव महाराज लोगों के आस्था एवं श्रद्धा का केंद्र है इसका अंदाजा यह इसी से लगाया जा सकता है कि इतनी भारी भीड़ इस मेले में उपस्थित हुई कि उसे नियंत्रित करना भी मुश्किल हो रहा था। लोगों ने बाबा रामदेव महाराज के पति अपनी आस्था एवं श्रद्धा व्यक्ति की तथा मेले का पूरा लुफ्त उठाया। मेला प्रबंधन समिति के तरफ से भी हर तरह की व्यवस्था की गई थी ताकि आंगन तुकों को किसी भी तरह की और सुविधा नहीं हो।

# राष्ट्रीय साहित्यान्चल सम्मान हेतु डॉ. प्रियंका सौरभ और डॉ. सत्यवान सौरभ का चयन

"देश-विदेश में सक्रिय लेखन, 27 पुस्तकों के रचयिता साहित्यकार दंपत्ति का साहित्यान्चल सम्मान हेतु चयन"

(हिसार, सिवानी मंडी)

**भीलवाड़ा,** राजस्थान – औद्योगिक नगरी के साथ-साथ साहित्य साधना की धरा बन चुके भीलवाड़ा से एक महत्वपूर्ण समाचार सामने आया है। साहित्यांचल संस्था द्वारा घोषित परिणामों में सिवानी मंडी के गाँव बड़वा के साहित्यकार दंपत्ति डॉ. प्रियंका सौरभ और डॉ. सत्यवान सौरभ का राष्ट्रीय स्तर के सम्मान हेतु चयन हुआ है।

घोषित सूची के अनुसार, डॉ. प्रियंका सौरभ का चयन "सुशीला देवी खमेसरा राष्ट्रीय साहित्यांचल सम्मान" (₹5100) और डॉ. सत्यवान सौरभ का चयन "स्वरूप सिंह खमेसरा राष्ट्रीय साहित्यांचल सम्मान" (₹5100) के लिए किया गया है।

यह दंपत्ति न केवल सक्रिय साहित्यकार हैं, बल्कि प्रतिदिन देश-विदेश के हज़ारों अख़बारों में विभिन्न भाषाओं में संपादकीय लेख लिखते हैं। डॉ. सत्यवान सौरभ की अब तक 17 पुस्तकें और डॉ. प्रियंका सौरभ की 10 पुस्तकें विभिन्न विधाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।

संसमयिक विषयों पर लेखन के साथ-साथ दोनों कवि-लेखक कविता, दोहे, कहानियाँ, लघुकथाएँ और बाल कविताएँ भी रचते हैं, जिससे उनकी रचनात्मकता का व्यापक स्वरूप सामने आता है। दोनों ही राजनीति विज्ञान में डॉक्टरेट उपाधि प्राप्त हैं।

डॉ. प्रियंका सौरभ ने चयन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा –

> "शब्द मेरे लिए केवल अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि जीवन का आधार हैं। यह चयन साहित्य साधना की यात्रा को नई प्रेरणा देगा।"

**वहीं डॉ. सत्यवान सौरभ ने कहा –**

> "साहित्य साधना का मार्ग कठिन होता है, लेकिन जब समाज और संस्थाएँ उसे मान्यता देती हैं, तो यह तपस्या सार्थक हो जाती है।"

गौरतलब है कि साहित्यांचल संस्था वर्षों से साहित्यकारों को मंच और सम्मान प्रदान कर रही है। संस्था का यह प्रयास साहित्यिक धारा को मजबूती देने के साथ-साथ नई पीढ़ी को भी प्रेरणा दे रहा है।

दोनों साहित्यकारों ने चयन हेतु साहित्यांचल परिवार, निर्णायक मंडल और अपने सभी शुभचिंतकों का आभार प्रकट किया और इसे अपनी साहित्यिक यात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव बताया।

# इनर व्हील क्लब ऑफ़ वृंदावन दिव्य शक्ति के द्वारा लगाया गया नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

### स्वस्थ नागरिकों से ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण संभव : निशा शर्मा

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)



**वृन्दावन।** अटल्ला चुंगी स्थित हिमांशी आरोग्य पर इनर व्हील क्लब ऑफ़ वृंदावन दिव्य शक्ति के द्वारा राधा अष्टमी के पावन पर्व पर नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ जिसमें 80 से भी अधिक रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।साथ ही उन्हें नि:शुल्क स्वास्थ्य किट प्रदान की गई।

इस अवसर पर क्लब की अध्यक्ष निशा शर्मा ने कहा कि किसी भी स्वस्थ राष्ट्र का भविष्य उसके स्वस्थ नागरिकों पर निर्भर है। जिस देश के नागरिक जितने स्वस्थ होंगे वह देश उतना ही अधिक प्रगति करेगा।

डॉ. पदम अग्रवाल ने कहा कि अधिकांश लोगों में वायरल फीवर के लक्षण पाए गए जिनको दवा वितरित की गई।

इसके अलावा बीड़ी, सिगरेट तथा तंबाकू खाने से होने वाले जो रोग उत्पन्न होते हैं, उन्हें भी दवाई दी गई।

क्लब की सदस्य नवीन थोकदार और शशि शर्मा ने कहा कि नियमित व्यायाम और योग से शरीर को बिना दवाई के स्वस्थ रखा जा सकता है।

ऋचा वर्मा एवं गीता गोस्वामी ने शिविर में आए सभी व्यक्तियों को भोजन में संतुलित तथा पौष्टिक आहार लेने का सुझाव दिया।स्वास्थ्य शिविर का संचालन सचिव राधिका गोस्वामी ने और आभार प्रदर्शन रेनु तिवारी ने किया।शिविर के समापन पर इनर व्हील क्लब ऑफ़ वृंदावन दिव्य शक्ति की सभी सदस्यों के द्वारा डॉक्टर पदम अग्रवाल को सम्मानित किया गया।

# शिक्षक : दायित्वबोध और सम्मान

डॉ. विनोद बब्बर

शिक्षक दिवस है तो वातावरण में 'गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागू पांय' से 'शिक्षक राष्ट्र निर्माता है', 'गुरु निर्माता है' का शोर तो होगा ही लेकिन इस शब्दजाल और नारों के प्रवाह में बहने से पहले यह समझना जरूरी है कि क्या शिक्षक गुरु है? क्या हम उसे पर्याप्त सम्मान दे रहे हैं? अगर नहीं तो क्या ये नारे प्रवंचना है? समाज से छल है? कहीं ऐसा तो नहीं कि समाज में नैतिक मूल्यों में आई गिरावट के जिम्मेवार शिक्षक से अधिक हम ही हैं? यह सर्वविदित है कि आषाढ़ पूर्णिमा गुरु पूजा उत्सव तो 5 सितम्बर शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। जब हम और हमारा समाज ही दोनों को एक नहीं मानता तो शिक्षक को गुरु कहें भी तो कैसे?

निजी विद्यालय का शिक्षक जो अपने आका का हर आदेश मानने के लिए बाध्य है। शिक्षक बनना उसकी प्राथमिकता भी नहीं थी। विश्वास न हो तो आज के किसी भी युवा से पूछो तो वह अपना लक्ष्य डाक्टर, इंजीनियर, पायलट, सीए, यहां तक कि नेता भी बताएगा लेकिन टीचर बनने से बचेगा। हाँ, यह बात अलग है कि जब कहीं नहीं हो सकी तो ऐसे बोझिल परिवेश में उससे छात्र के सर्वांगीण विकास की अपेक्षा करना क्या स्वयं को धोखा देना नहीं तो और क्या है?

गत वर्ष शिक्षक समारोह में एक मुख्यमंत्री ने कहा, 'आज कहीं कोई आपराधिक घटना होती है तो उस राज्य का मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री पुलिस प्रमुख को बुलाकर कहता है, 'एक सप्ताह में सब ठीक होना चाहिए।' लेकिन मेरा स्वप्न है कि जब भी कहीं कोई आपराधिक घटना हो तो मैं पुलिस चीफ को नहीं, स्कूलों, कालेजों के प्रमुखों और शिक्षामंत्री को बुलाकर कहूँ- 'एक सप्ताह में सब ठीक हो जाना चाहिए।' तालियों की गड़गड़ाहट तो होनी ही थी। लेकिन भावनाओं को उभारकर वोट तो पाये जा सकते हैं परंतु समस्या हल नहीं होती। उनके पास इस बात का कोई जवाब नहीं था कि पुलिस के पास बहुत से अधिकार हैं। लेकिन जो शिक्षक गलती करने पर छात्र को दण्ड देना तो दूर डांट भी नहीं सकता। जो खुद डरकर समय बिता रहा हो। किसी प्रयोग को भी केवल तक नहीं कर सकता उससे भय प्रयासमुक्त समाज की अपेक्षा आखिर किस आधार पर और क्यों करते हो?

निश्चित रूप से शिक्षा का उद्देश्य मात्र अक्षर-ज्ञान नहीं है। सच्ची शिक्षा वह है जो 'मस्तिष्क में ज्ञान, हृदय में गुण, शरीर में शक्ति और मन में सभी जीवों के प्रति दया, करुणा, सौहार्द का संचार करे। शिक्षक और विद्यार्थी किसी भी राष्ट्र की नींव के वे पत्थर हैं जिनका तन से ही नहीं, चरित्र से भी मजबूत होना आवश्यक है।

एक समय था जब छात्र को गुरुकुल में रह कर शिक्षण के साथ वहां की व्यवस्था से संबंधित अन्य कार्य जैसे- जंगल से लकड़ियाँ लाना, साफ-सफाई, भोजन बनाना आदि भी करने थे। राजा-प्रजा की सन्तानें एक समान, एक साथ रह कर शिक्षा प्राप्त करती थीं। विश्वामित्र, वशिष्ठ, चाणक्य, द्रोणाचार्य जैसे श्रेष्ठ गुरुओं की एक सुदीर्घ परम्परा के दर्शन भारतीय संस्कृति में होते हैं। तब अभिभावक अपनी प्रिय संतान को गुरु को सौंपते हुए कहते थे- यथेष्ट पुरुषोत्तम आचार्य- हे आचार्य! आप इस बालक को श्रेष्ठ विद्या प्रदान कर ऐसी शिक्षा दें कि यह पुरुष बन जाये।(पुरुष पृ अर्थात पालन और पूर्णयों धातु से बना है। जिसका अर्थ है- पालन करने वाला और पूर्ण) इस तरह गुरु से अपेक्षा की जाती थी कि उनके मार्गदर्शन में उनका पुत्र यशस्वी, मनस्वी और वर्चस्वी बने, पूर्ण पुरुष बने। मनुष्यत्व प्राप्त करे। तब गुरु का प्रताप था। उसके प्रति राजा से समाज तक श्रद्धा थी। ऐसे में उससे शिक्षा के सर्वांगीण विकास के लिए 'हर संभव' प्रयासों की अपेक्षा की जा सकती थी। तब गुरु-शिष्य दोनों से प्रतिदिन प्रार्थना करते थे- सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै। अर्थात हे प्रभु! हम दोनों को एक-दूसरे की रक्षा करने की सामर्थ्य दें। हम परस्पर मिलकर अपनी जाति, भाषा व संस्कृति की रक्षा करें। किसी भी शत्रु से भयभीत न हों। हमारी शिक्षा हमें एकता के सूत्र में बांधे, बुराईयों से मुक्त करे। हम एक-दूसरे पर विश्वास रखें।'

आज स्थिति क्या है? दोनों के हृदय में एक-दूसरे के प्रति अविश्वास एवं असंतोष का वातावरण है। आज का शिक्षक छात्र को केवल वही विषय पढ़ाता है जिसके लिए उसे रखा गया है। यथा- मैथ्स, कॉमर्स, से विज्ञान की हर शाखा की जानकारी देना वाला अलग शिक्षक। जहां 30 से अधिक बच्चे हैं। वह उन्हें विषय की जानकारी भर दे सकता है। पर छात्रों की विभिन्न गतिविधियों (?) के प्रति अनजान बने रहकर अपने विषय तक सीमित रहने के निर्देश भी हैं। ऐसे में यदि छात्र दिशाहीन होते हैं तो उस दायित्वहीनता का जिम्मेवार कौन है? क्या छात्र या उसके अभिभावक या वह राजनैतिक व्यवस्था जो बजट बढ़ाने का प्रचार तो खूब करती है परंतु छात्र शिक्षक अनुपात तय नहीं करती। अध्यापकों की कमी पूरा नहीं करती। ऐसे में चरित्र निर्माण की बाते भाषणों तक तो प्रशंसा पा सकती हैं परंतु व्यवहारिकता के धरातल पर उन्हें उपहास अथवा बकवास ही माना जाएगा।

कुछ लोग कहते हैं कि अध्यापक का कार्य नौकरी या व्यवसाय नहीं, सेवा है। लेकिन उनके पास इसका कोई जवाब नहीं है कि डाक्टर, सेना, पुलिस सहित आखिर कौन सा काम सेवा नहीं है। अध्यापकों के वैचारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिक, व्यावसायिक उत्तरदायित्व भी होते हैं। पढ़ाना उनका कार्य है लेकिन बच्चें, युवा पीढ़ी तथा समाज में प्रयुक्त सभी की सहायता से आदर्श एवं संस्कारों का रोपण संभव है। बेशक भारतीय संस्कृति में गुरु को उच्च स्थान प्राप्त था लेकिन आज शिक्षक से छात्र का दोस्त होने की अपेक्षा की जाती है। पर व्यवसाय बनती शिक्षा ने छात्र को 'क्लाइन्ट' और शिक्षक को 'सर्विस प्रोवाइडर' का रूप दे दिया है। ट्यूशन, कोचिंग फल-फूल रहे हैं क्योंकि आज शिक्षक को भी कोरा सम्मान नहीं, चंचला लक्ष्मी चाहिए क्योंकि उसके परिवार को भी उससे अपेक्षाएं हैं इसलिए उसकी भी जरूरतें हैं। मोटी फीस देने वाले छात्र के हृदय में शिक्षक के प्रति श्रद्धा है या नहीं, इसका कोई पैमाना नहीं है। ऐसे में अध्यापक अपने कार्य एवं दायित्व बंधनों के कारण सिमट कर रह गया है। परिवार पालन व जीविका में निरंतरता के लिए वह सरकारी अधिकारियों के आदेशों का पालन करने को विवश है। स्कूल में शिक्षण के अतिरिक्त प्रत्येक कार्य है। मिड डे मील जांचने से बांटने तक विद्यालय के वातावरण को शिक्षामित्र बनाते हैं। जनगणना, जाति गणना से मतदाता सूची तैयार करने, मतदान करवाने, मतगणना करने जैसे अनेकानेक कार्य भी शिक्षकों के कंधों पर है। ऐसे में वह अपने आप को केवल शैक्षिक कार्यों के प्रति एकाग्र कैसे करें?

# संदर्भ शिक्षक दिवस पर विशेष : गुरु शिष्य संबंध...तब और अब!

सुधा शर्मा
शिवम रेसिडेन्स, शांति नगर
बिलासपुर, छत्तीसगढ़






लो... फिर आ पहुंचा हम सबका चहेता शिक्षक दिवस! दिवस जो पुरानी पीढ़ी से यादों की पोटली खुलवाता है और नई को नवाचार का पाठ पढ़ने कहता है! यादें जो पुरातन सनातन परंपरा के गुरुस्थानों, आश्रमों से गुजरती है। जहां पग पग पर हैं इस रिश्ते की महक और गरिमा से पगे अनगिन किस्से! मर्यादा के प्रवाह और इसमें गोते लगाते सवाल जवाब! बहरहाल स्वतंत्रता के बाद देश के पहले उपराष्ट्रपति व दूसरे राष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जनम दिवस से जुड़े इस दिवस की महत्ता कई अर्थों में घर, समाज व देश हित के सरोकारों से वाबस्ता है।

**भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक आधार**

सम्बंध जहाँ शिक्षक ज्ञान और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, और शिष्य श्रद्धा, समर्पण और सीखने के भाव से ज्ञान ग्रहण करते हैं। शिष्य जो अपने अनुभव और नैतिक मूल्यों से शिष्य को जीवन के सही मार्ग पर चलने को प्रेरित करते हैं, और शिष्य गुरु के प्रति पूर्ण सम्मान और विश्वास से इसे आत्मसात करते हैं। संक्षेप में इस रिश्ते का सार ज्ञान के आदान-प्रदान, आध्यात्मिक सिद्धि और उच्चतम आदर्शों की ओर बढ़ने का बेजोड़ माध्यम है।

**पुरातन और नूतन परंपरा के बदलाव**

प्राचीन भारत में गुरु-शिष्य संबंध निःस्वार्थ, स्नेहपूर्ण और पूरी तरह से समर्पित होता था। गुरु का ज्ञान और शिष्य की श्रद्धा इस संबंध की नींव थी। आज के भौतिकतावादी समाज में, यह संबंध अक्सर व्यवसाय के रूप में चौंकाता है। धन को महत्व दिए जाने से शिक्षकों और छात्रों के बीच का स्नेह, शिक्षक- शिष्य की आपसी श्रद्धा पर अब यह प्रश्नचिन्ह है।

अब गुरु गूगल भए...एआई दे ज्ञान!

भावविह्वल संबंध का ना कोई स्थान!

गूगल गुरु और एआई के संग अपडेट होने के संग आज कबीर वाणी में भी रमा जाए..

कुछ दोहे प्रासंगिक होंगे...

गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान...
तीन लोक की सम्पदा, सो गुरु दीन्ही दान!
गुरु कुम्हार, शिष्य कुंभ है... गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट!
अन्तर हाथ देय सहारा, बाहर बाहै चोट!
सब धरती कागज करूं, लिखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूं, गुरु गुण लिखा न जाय!
गुरु की आज्ञा आवै, गुरु की आज्ञा जाय!
कहैं कबीर सो संत हैं, आवागमन नशाय!
गुरु पारस को अन्तरो, जानत हैं सब सन्त।
वह लोहा कंचन करे, ये करि लये महन्त!
कुमति कीच चेला भरा, गुरु ज्ञान जल होय...
जनम-जनम का मोरचा, पल में डारे धोय!
गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पाय...
बलिहारी गुरु आपनो जिन गोविंद दियो बताय!

# देश की ज्वलंत समस्याओं के संबंध में हुआ संगोष्ठी का आयोजन

### भारत नेपाल संबंध को और अधिक मधुर बनाने हेतु 30 सितंबर से 10 अक्टूबर 2025 तक नेपाल की यात्रा किए जाने का लिया गया निर्णय

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)



**वृन्दावन।** परिक्रमा मार्ग/श्याम कुटी क्षेत्र स्थित हरे कृष्ण फार्म में राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की स्मृति रक्षा और उनके परिवारीजनों के हितों की रक्षा हेतु संपर्पित संस्था ₹राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिवार₹ के द्वारा राधा अष्टमी के पावन पर्व पर देश की ज्वलंत समस्याओं के संबंध में संगोष्ठी का आयोजन किया गया।प्रमुख कांग्रेसी नेता और अधिवक्ता रमेश चंद्र गर्ग की अध्यक्षता में संपन्न हुई इस बैठक में मथुरा जनपद की समस्याओं पर भी गहन मंथन किया गया।साथ ही भारत नेपाल संबंध को और अधिक मधुर बनाने हेतु आगामी 30 सितंबर से 10 अक्टूबर 2025 तक 70 प्रबुद्ध व्यक्तियों के द्वारा नेपाल की यात्रा किए जाने का भी निर्णय लिया गया।

कार्यक्रम में पधारे सभी आगंतुक अतिथियों का संस्था के अध्यक्ष रमेश चंद्र गर्ग,एडवोकेट ने पटका ओढ़ाकर और ठाकुर बांकेबिहारी महाराज के प्राकट्य कर्ता,संगीत सम्राट स्वामी हरिदास महाराज का चित्रपट भेंट कर स्वागत किया।

बैठक का विश्राम खीर-मालपुए के सुरुचि पूर्ण भोज और राधा रानी व स्वामी हरिदासजी महाराज की जय-जय कार के साथ हुआ।

इस अवसर पर संस्था के 92 वर्षीय अध्यक्ष रमेश चंद्र गर्ग के अलावा पूर्व विधायक प्रदीप माथुर, प्रमुख कांग्रेसी नेता सोहन सिंह सिसोदिया, अशोक चतुर्वेदी, संग्राम सिंह, प्रख्यात साहित्यकार डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी,एडवोकेट, जगवीर चौधरी,लता चौहान, कीर्ति कौशिक, महेश गौतम, रासबिहारी शर्मा, श्याम लाल शर्मा, यतींद्र मुकद्दम, डॉक्टर राधाकांत शर्मा,अरविंदम चतुर्वेदी आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

# तेज रफ्तार प्राइवेट बस अनियंत्रित होकर पलटी

बस में सवार एक बच्चे और महिला की मौत
कई यात्रियों के बस के नीचे दबे होने की आशंका
सूचना के बाद मौके पर प्रशासन रेस्क्यू में जुटा
सूचना मिलते ही विधायक राजीव कुमार सिंह ₹बब्बू भैया₹ सीएचसी पहुंचे
विधायक घायलों से बात कर रहे हैं
विधायक ने मौके पर तत्काल पहुंचवाई राहत और बचाव टीम
दातागंज से बदायूं जाने वाले मार्ग पर हादसा
दातागंज कोतवाली के नाहरपुर के पास पलटी बस





# संपन्न हुई अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की बैठक : श्रमिक नेता राकेश मणि ने की रिपोर्ट पर केन्द्र से कार्यवाही की मांग

सुनील बाजपेई

**कानपुर।** महिलाओं की मातृत्व और सामाजिक सुरक्षा को लेकर सुरक्षा को लेकर अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ( आईएलओ ) भी बहुत चिंतित है। उसने आयोजित हुई कार्यशाला में प्रस्तावना 183 के तहत केन्द्रीय ट्रेड यूनियन के साथ मिलकर इसकी रिपोर्ट केंद्र सरकार को भी भेजी है।

हिंद मजदूर किसान पंचायत के राष्ट्रीय महामंत्री और अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठनके नेताओं में से एक राकेश मणि पांडे ने भेजी गई रिपोर्ट पर शीघ्र ही प्रभावी कदम उठाए जाने की मांग करते हुए बताया कि मजदूर और महिलाओं के हित में बहुत महत्वपूर्ण कार्यशाला में कामकाजी महिलाओं के मातृत्व सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए व्यवहारिक कथनों पर सहमति बनाने के लिए सभी केन्द्रीय श्रमिक संगठन एक साथ आये हैं। जो कि संयुक्त अनुसंशा इस मुद्दे को राष्ट्रीय एजेण्डा में बनाये रखने के लिए सामाजिक संवाद को गहरा करने और व्यवहारिक सुरक्षा में सुधार सम्बन्धित हित धारकों के साथ मिलकर काम करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

कार्यशाला के दौरान मातृत्व सुरक्षा के मुख्य तथ्यों, छुट्टी, नगद, एवं चिकित्सा लाभ, कार्य स्थल सुरक्षा, रोजगार संरक्षण स्तन पान सहायता के बारे में समझ और विचार किये जाने की जानकारी देते हुए

नेशनल फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन (एन एफ आई टी यू ) के केन्द्रीय सचिव एवं उत्तर प्रदेश के महामंत्री वरिष्ठ श्रमिक नेता राकेश मणि पांडे ने बताया कि इस महत्वपूर्ण कार्यशाला में औपचारिक व अनौपचारिक श्रमिकों तथा भारत में काम करने वाले कर्मचारियों को प्रभावित करने वाले मुख्य स्थितियों पर भी चर्चा करने के साथ ही सी-183 अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ( आईएलओ ) के पारित सम्मेलन पर कार्यवाही व संवाद को जारी रखने का प्रयास किया गया।

उन्होंने बताया कि इस सार्थक प्रयास में आईएलओ कनवेन्सन 183 के अनुसमर्थन को बढ़ावा, और कानूनी अन्तर विश्लेषण से समावेशी मातृत्व सुरक्षा में दबाव डालना तथा प्रगति में निगरानी करना ,राज्य व केन्द्र सरकार के स्तरों पर एकीकृत आवास सुनिश्चित किया जाना, निर्माण घरेलू कार्य, गिग/प्लेटफार्म कार्य तथा राज्य व मंत्रालय जैसे संवेदनशील परिस्थितियों में काम करने वाली महिला श्रमिकों की उपयोग साक्ष्य जुटाने सर्वोत्तम प्रथा को मॉडल बनाने, व्यापक परिवर्तन के लिए ट्रेड यूनियनों के भीतर जागरूकता, प्राथमिकता बढ़ाने, संगठन के प्रतिनिधित्व में संरक्षित करने, सामूहिक सौदेबाजी में शक्ति का विस्तार करने , इसके लिए सुरक्षा प्रशिक्षण को आगे बढ़ाने, के साथ ही सामाजिक प्रतिनिधियों के लिए ब्रिफिंग किया जाना सम्मिलित है। मजदूर और महिलाओं की समस्याओं को लेकर इस कार्यशाला में लिए गए निर्णय से अवगत कराते हुए नेशनल फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन (एन एफ आई टी यू) के केन्द्रीय सचिव एवं उत्तर प्रदेश के महामंत्री राकेश मणि ने बताया कि इसके लिए स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण व प्रचार प्रसार जागरूकता बढ़ायी जायेगी। जिससे इसका लाभ महिला कामगारों को मिल सके और उन्हें अपने अधिकारों की जानकारी हो सके।





अंतर राष्ट्रीय श्रम संगठन की इस महत्वपूर्ण बैठक में भाग लेने वाले नेशनल फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन ( एन एफ आई टी यू ) में उत्तर प्रदेश के महामंत्री वरिष्ठ श्रमिक नेता राकेश कुमार पांडेय ने यह भी बताया कि बैठक में मातृत्व सुरक्षा को यूनियन के एजेण्डा में जहां तक सम्भव हो सामुहिक सौदेबाजी में सम्मिलित किये जाने,प्रासंगिक परामर्श के साथ तकनीकी जानकारी क्षेत्र, स्वास्थ्य व श्रमिकों में साझा साझा किये जाने, उनकी जांच सुरक्षा व सहायता को प्राथमिकता दिए जाने की प्रतिबद्धता को भी दोहराते हुए नियोजकों के साथ सरकार की नीतियों व सामाजिक संवाद व जमीनी स्तर पर कार्यवाही की आवश्यकता भी बताई गई।

इस बैठक के साथ ही आई एल ओ के राष्ट्रीय कार्यालय भी पहुंचे नेशनल फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन ( एन एफ आई टी यू ) के केन्द्रीय सचिव एवं उत्तर प्रदेश के महामंत्री राकेश मणि पाण्डेय ने भी उत्तर प्रदेश और दिल्ली के दो - दो अन्य प्रतिनिधि श्रमिक नेताओं के साथ मिलकर एक रिपोर्ट भी साझा करते हुए उस पर सरकार से जल्द से जल्द कार्रवाई किए जाने की जोरदार मांग की है।

# भारत की सेमीकंडक्टर क्रांति- विक्रम चिप और वैश्विक डिजिटल शक्ति का नया अध्याय- सेमीकंडक्टर क्षेत्र में बड़ी छलांग

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत ने 2 सितंबर 2025 को सेमीकंडक्टर इंडिया कॉन्फ्रेंस का ऐतिहासिक उद्घाटन करके न केवल एक तकनीकी युग का शुभारंभ किया बल्कि वैश्विक राजनीति,अर्थव्यवस्था और तकनीक की दिशा में भी एक निर्णायक मोड़ ला दिया। इस कॉन्फ्रेंस में दुनियाभर से 100 से अधिक विशेषज्ञों और विभिन्न देशों ने भाग लिया। यह आयोजन भारत की उस महत्वाकांक्षा का प्रतीक था जिसमें वह स्वयं को केवल डिजिटल उपभोक्ता के रूप में नहीं बल्कि डिजिटल उत्पादक और तकनीकी नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित करना चाहता है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि, जिस प्रकार 20वीं सदी ने तेल की क्रांति से दुनियाँ का आर्थिक और राजनीतिक मानचित्र बदला था, ठीक उसी प्रकार 21वीं सदी में सेमीकंडक्टर चिप दुनियाँ का समीकरण बदल रही है और भारत इस बदलाव का केंद्र बनने की ओर अग्रसर है।तेल को 20वीं सदी का काला सोना कहा गया था। जिन देशों के पास तेल था उन्होंने न केवल आर्थिक समृद्धि पाई बल्कि विश्वराजनीति में भी प्रमुख भूमिका निभाई। अमेरिका और खाड़ी देशों का वर्चस्व इसी ऊर्जा राजनीति पर आधारित रहा। अब वही स्थिति सेमीकंडक्टर की है।तेल ने पिछली शताब्दी में औद्योगिक क्रांति और ऊर्जा आधारित भू-राजनीति को दिशा दी थी। चिप वह अदृश्य हीरा है जो हर मशीन, हर उपकरण और हर डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का दिमाग बन चुका है। चाहे वह मोबाइल फोन हो, लैपटॉप,टीवी,इलेक्ट्रिक गाड़ियां, कैलकुलेटर, घड़ी, रक्षा उपकरण या फिर अंतरिक्ष उपग्रह, किसी भी तकनीकी उत्पाद का संचालन बिना चिप के असंभव है। यही कारण है कि आज दुनियाँ का हर बड़ा देश इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और वर्चस्व के लिए संघर्ष कर रहा है।

साथियों बात अगर हम भारत में 2 सितंबर 2025 का दिन ₹चिप क्रांति का ऐतिहासिक दिन₹की करें तो सेमीकंडक्टर कॉन्फ्रेंस का आयोजन केवल एक उद्घाटन समारोह नहीं था बल्कि यह भारत के भविष्य का खाका था। पीएम ने जिस ₹डिजिटल डायमंड₹ की बात की,वह केवल एक प्रतीक नहीं बल्कि वास्तविकता की ओर बढ़ता हुआ कदम है। भारत ने यह दिखा दिया है कि वह केवल डेटा उपभोक्ता राष्ट्र नहीं बल्कि तकनीकीशिल्पकार बन सकता है।इस पूरे परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि 2 सितंबर 2025 का दिन भारतीय इतिहास में ₹चिप युग का आगाज₹ कहलाएगा।जैसे आजादी का दिन 15 अगस्त 1947 ने राजनीतिक स्वतंत्रता दी थी, वैसे ही 2 सितंबर 2025 ने तकनीकी स्वतंत्रता की दिशा में पहला कदम दिया है। विक्रम चिप भारत के आत्मनिर्भर भविष्य का प्रतीक है और यह भारत को 21वीं सदी में डिजिटल सुपरपावर बनने की दिशा में अग्रसर करेगा।यह वही क्षण है,जब भारत ने अपनी नई पहचान गढ़ते हुए यह घोषणा की कि आने वाले वर्षों में वह केवल चिप आयातक नहीं रहेगा बल्कि निर्यातक भी बनेगा। भारतीय पीएम ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि भारत अब डिजिटल उपभोक्ता नहीं बल्कि निर्माता बनने की राह पर है। उन्होंने भारत को ₹डिजिटल डायमंड₹ के रूप में परिभाषित करते हुए यह स्पष्ट किया कि देश में स्वदेशी क्रांति की नई नींव रखी जा चुकी है।

साथियों बात अगर कर हम सेमीकंडक्टर के वैश्विक महत्व की करें तो,सेमीकंडक्टर का महत्व केवल अर्थव्यवस्था तक सीमित नहीं है। यह राष्ट्रीय सुरक्षा और सामरिक शक्ति से भी जुड़ा है। आजकल के युद्ध केवल पारंपरिक हथियारों से नहीं लड़े जाते बल्कि साइबर युद्ध, ड्रोन, मिसाइल गाइडेंस सिस्टम और एआई आधारित तकनीकों से लड़े जाते हैं। इन सभी का संचालन चिप्स के बिना संभव नहीं। यदि किसी देश के पास अपनी चिप निर्माण क्षमता है तो वह न केवल आत्मनिर्भर रहेगा बल्कि अपने विरोधियों पर तकनीकी बढ़त भी बनाएगा। भारत के लिए यह रक्षा और अंतरिक्ष दोनों ही क्षेत्रों में निर्णायक साबित होगा। वैश्विक स्तर पर भारत की सेमीकंडक्टर पहल अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा के बीच संतुलनकारी भूमिका निभा सकती है। अमेरिका ताइवान और कोरिया पर निर्भर है लेकिन उसे भारत जैसे स्थिर और विश्वसनीय भागीदार की आवश्यकता है। चीन अपनी तकनीकी शक्ति बढ़ा रहा है, लेकिन उस पर भरोसा करने में पश्चिमी देश हिचकिचाते हैं। भारत यदि अपनी चिप इंडस्ट्री को तेजी से विकसित करता है तो वह न केवल आत्मनिर्भर बनेगा बल्कि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में भी एक निर्णायक हिस्सा होगा।

साथियों बात अगर हम सेमीकंडक्टर की परिभाषा समझनें की करें तो, यह बेहद महत्वपूर्ण है। सेमीकंडक्टर एक ऐसा पदार्थ होता है जिसकी चालकता( कंडक्टिविटी ) धातु और अचालक( इन्सुलेटर ) के बीच होतीहै,सिलिकॉन इसका सबसे प्रमुख उदाहरण है।जब इसमें डोपिंग की जाती है तो यह नियंत्रित तरीके से विद्युत प्रवाह को संचालित करता है और इसी से ट्रांजिस्टर, माइक्रोप्रोसेसर और मेमोरी चिप बनाए जाते हैं। सरल भाषा में कहा जाए तो सेमीकंडक्टर चिप किसी भी मशीन का दिमाग होता है। यह मशीन को सोचने, निर्णय लेने और सही समय पर सही कार्य करने की क्षमता देता है। यही कारण है कि इसे आधुनिक सभ्यता का आधारस्तंभ कहा जा सकता है।कोई भी देश जो सेमीकंडक्टर निर्माण और डिजाइन में अग्रणी है, वह केवल तकनीकी शक्ति ही नहीं बल्कि वैश्विक राजनीति में भी नियंत्रण स्थापित करता है। यही वजह है कि अमेरिका, चीन, ताइवान, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देश इस क्षेत्र में तीव्र प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। अमेरिका अपनी तकनीकी श्रेष्ठता बनाए रखने के लिए ताइवान जिसकी जनसंख्या भारत के दिल्ली से भी काम है लेकिन वह विश्व में चिप का टॉप निर्माता है उसकी टीएसएमसी और दक्षिण कोरिया की सैमसंग जैसी कंपनियों पर निर्भर है। चीन अपने ₹मेड इन चाइना 2025₹ मिशन के तहत इस क्षेत्र में भारी निवेश कर रहा है। ऐसे में भारत का इस क्षेत्र में कदम रखना केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि भू-राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

साथियों बातें अगर हम सेमीकंडक्टर बनाने की जटिल प्रक्रिया की करें तो, सेमीकंडक्टर निर्माण बेहद जटिल प्रक्रिया है। एक चिप बनाने के लिए सैकड़ों चरणों से गुजरना पड़ता है।इसके लिए ₹फैब यूनिट₹ की आवश्यकता होती है जिसे बनाना और चलाना अत्यंत महंगा और कठिन है। एक फैब यूनिट में 25, से 51हज़ार करोड़ रुपए तक का निवेश लगता है। इसके अलावा वहां स्वच्छता का स्तर इतना ऊंचा होता है कि उसकी तुलना अस्पताल के आईसीयू से भी नहीं की जा सकती। वास्तव में फैब यूनिट की स्वच्छता आईसीयू से हजार गुना अधिक होती है क्योंकि एक छोटे से धूलकण से भी पूरी चिप नष्ट हो सकती है। इसीलिए इसे दुनियाँ की सबसे जटिल उत्पादन प्रक्रिया कहा जाता है।भारत ने इस चुनौती को स्वीकार कर दुनियाँ को यह संदेश दिया है कि वह अब केवल उपभोक्ता नहीं रहेगा। यह कदम भारतीय युवाओं और इंजीनियरों के लिए भी अवसरों का नया द्वार खोलता है। भारत में बड़ी संख्या में इंजीनियरिंग स्नातक और आईटी पेशेवर मौजूद हैं।अब उन्हें सेमीकंडक्टर डिजाइनफैब्रिकेशन और टेस्टिंग जैसे क्षेत्रों में रोजगार मिलेगा। यह भारत की अर्थव्यवस्था के लिए गेमचेंजर साबित हो सकता है।

साथियों बात अगर हम भारत की₹विक्रम चिप₹ नाम रखने की करें तो,इसका नाम विक्रम साराभाई के नाम पर रखा गया है। विक्रम साराभाई को भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का जनक कहा जाता है। उन्होंने सीमित संसाधनों के बावजूद भारत को अंतरिक्ष शक्ति के रूप में खड़ा किया। आज इस नाम का उपयोग कर भारत ने यह संदेश दिया है कि जिस प्रकार अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत ने आत्मनिर्भरता पाई थी, उसी प्रकार सेमीकंडक्टर क्षेत्र में भी वह आत्मनिर्भर होगा। विक्रम चिप केवल तकनीक नहीं बल्कि एक राष्ट्रीय विरासत और आत्मनिर्भरता की पहचान है।

साथियों बात अगर हम भारत की इस क्रांति का असर ₹ग्लोबल साउथ₹ के देशों पर भी पड़ेगा। विकासशील देश अबतक तकनीक के मामले में पश्चिम और पूर्वी एशिया पर निर्भर थे। लेकिन भारत यदि एक मजबूत चिप सप्लायर बनता है तो वह इन देशों को भी विकल्प दे सकेगा। इससे तकनीकी साम्राज्यवाद की पकड़ ढीली होगी और विकासशील देशों को अधिक अवसर मिलेंगे।अर्थव्यवस्था की दृष्टि से देखें तो भारत की सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री आने वाले वर्षों में लाखों रोजगार उत्पन्न करेगी। निर्यात से अरबों डॉलर की आय होगी। ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, रक्षा और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता से आयात पर निर्भरता घटेगी और चालू खाता घाटा कम होगा। भारत का जीडीपी इस क्षेत्र से नई गति प्राप्त करेगा।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे कि भारत की सेमीकंडक्टर क्रांति- विक्रम चिप और वैश्विकडिजिटल शक्तिका नया अध्याय, सेमीकंडक्टर क्षेत्र में बड़ी छलांग चिप के बिना कोई भी इलेक्ट्रॉनिक व डिजिटल उपकरण कार्य नहीं कर सकता।सेमीकंडक्टर को आधुनिक युग का ₹डिजिटल ऑक्सीजन₹ कहा जा रहा है।

# 2027 तक भारत में लॉन्च होंगी 15 नई हाइब्रिड SUV, लिस्ट में Maruti, Hyundai से लेकर Mahindra तक की गाड़ियां

भारत में हाइब्रिड गाड़ियां तेजी से लोकप्रिय हो रही हैं क्योंकि ये फ्यूल एफिशिएंसी और दमदार परफॉर्मेंस का संतुलन बनाती हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों की तरह इनमें रेंज की चिंता नहीं होती। भारतीय बाजार में 2027 तक 15 नई हाइब्रिड एसयूवी लॉन्च होंगी। Maruti Suzuki Mahindra Hyundai Kia और Honda जैसी कंपनियां इस दौड़ में शामिल हैं जो विभिन्न हाइब्रिड मॉडल्स पेश करने की तैयारी में हैं।

**नई दिल्ली।** भारत में हाइब्रिड गाड़ियां तेजी से पॉपुलर हो रही है, क्योंकि यह फ्यूल एफिशिएंसी और दमदार परफॉर्मेंस के बीच बेहतर संतुलन बनाती है। इलेक्ट्रिक वाहनों के विपरीत, हाइब्रिड गाड़ियों में रेंज की चिंता नहीं होती है और न ही उन्हें व्यापक चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की जरूरत होती है। इसे देखते हुए भारतीय बाजार में 15 नई हाइब्रिड SUV साल 2027 तक लॉन्च होंगी। आइए विस्तार में जानते हैं कि भारत में कौन सी हाईब्रिड गाड़ियां लेकर आने वाली है।

**2027 तक आने वाली 15 हाइब्रिड SUV की लिस्ट**

आगामी हाइब्रिड SUV (Upcoming Hybrid SUV) संभावित लॉन्च (Expected Launch)

Maruti Escudo 3 सितंबर, 2025
Maruti Fronx Hybrid 2026
Mahindra XUV3XO Hybrid 2026
Mahindra Range Extender SUVs 2026–2027
New-Gen Hyundai Creta 2027
Hyundai Ni1i (7-seater) 2027
New-Gen Kia Seltos 2027
Kia Q4i (3-row SUV) 2027
Honda CR-V 2025 के अंत तक
Honda Elevate Hybrid दिवाली 2026
Honda 7-Seater SUV 2027
New-Gen Renault Duster 2026
Renault Boreal 2026–2027
Nissan C-Segment SUV 2026
Nissan 7-Seater SUV 2026–2027

**Maruti Suzuki की आने वाली हाइब्रिड गाड़ियां**

भारत की सबसे बड़ी यात्री वाहन निर्माता कंपनी Maruti Suzuki की Grand Vitara पर बेस्ड एक नई मिड-साइज SUV पेश करने की तैयारी कर रही है। कंपनी इसे 3 सितंबर, 2025 को लॉन्च करने वाली है। इसे 1.5L पेट्रोल-हाइब्रिड पावरट्रेन के साथ लेकर आया जाएगा। इसके अलावा, 2026 में मारुति अपनी इन-हाउस विकसित स्ट्रांग हाइब्रिड सिस्टम को फ्रोंक्स हाइब्रिड में पेश करेगी, जिसमें कंपनी की सीरीज हाइब्रिड प्रणाली के साथ 1.2L Z12E पेट्रोल इंजन होगा।

**Mahindra की आने वाली हाइब्रिड गाड़ियां**

महिंद्रा एंड महिंद्रा 2026 में अपनी XUV 3XO कॉम्पैक्ट SUV के एक स्ट्रांग हाइब्रिड वेरिएंट के साथ हाइब्रिड सेगमेंट एंट्री में कदम रखने की योजना बना रही है। इस मॉडल में एक 1.2L टर्बोचार्ज्ड पेट्रोल इंजन के साथ एक हाइब्रिड सिस्टम भी होगा। Mahindra BE 6 और XUV.e9 को भी हाइब्रिड सिस्टम के साथ लाने की तैयारी चल रही है। इसमें साल 2026 या 2027 तक रेंज एक्सटेंडर हाइब्रिड पावरट्रेन हो सकते हैं।

**Hyundai और Kia की आने वाली हाइब्रिड गाड़ियां**

Hyundai मोटर इंडिया अपनी दो हाइब्रिड SUV को लाने की तैयारी कर रही है। इसमें एक नई जनरेशन की क्रेटा हाइब्रिड के साथ ही एक 7-सीटर SUV लाने की तैयारी कर रही है। इन दोनों मॉडलों के 2026 तक आने की उम्मीद है।

Hyundai के साथ ही Kia भी हाइब्रिड सेगमेंट में एंट्री की तैयारी कर रही है। कंपनी नई जनरेशन की सेल्टोस को हाइब्रिड सिस्टम के साथ ला सकती है, जिसके साल 2027 तक लॉन्च होने की संभावना है। सके बाद एक बिल्कुल नई 3-रो वाली SUV भी आएगी, जिसमें हाइब्रिड तकनीक होगी।

**होंडा का हाइब्रिड लाइन-अप**

होंडा कार्स इंडिया द्वारा अपनी लोकप्रिय वैश्विक हाइब्रिड SUV, जेडआर-वी (ZR-V), को 2025 के अंत तक पेश करने की उम्मीद है। एलिवेट SUV का एक हाइब्रिड वर्जन दिवाली 2026 के आसपास आ सकता है। कंपनी एक नई 7-सीटर SUV पर भी काम कर रही है, जो होंडा के नए मॉड्यूलर प्लेटफॉर्म पर आधारित होगी।

## विनफ़ास्ट लाएगी नैनो से भी छोटी इलेक्ट्रिक कार, "एमजी धूमकेतु" को देगी कड़ी टक्कर

परिवहन विशेष न्यूज

वियतनामी वाहन निर्माता Vinfast जल्द ही भारतीय बाजार में अपनी इलेक्ट्रिक एसयूवी VF 6 और VF 7 को लॉन्च करेगी। कंपनी Vinfast Minio Green EV के लिए पेटेंट भी दायर किया है जो टाटा नैनो से भी छोटी होगी। इस 2-डोर इलेक्ट्रिक कार में 14.7 kWh का बैटरी पैक और 20 kW की इलेक्ट्रिक मोटर होगी जो 170 किमी की रेंज देगी। इसका मुकाबला MG Comet से होगा।

**नई दिल्ली।** Vinfast भारतीय बाजार में जल्द ही अपनी दो इलेक्ट्रिक SUV VF 6 और VF 7 को लॉन्च करने वाली है। कंपनी ने इसकी बुकिंग शुरू कर दी है। कंपनी ने हाल ही में Vinfast Minio Green EV के लिए पेटेंट दायर किया है। यह एक छोटी इलेक्ट्रिक कार होने वाली है। इस इलेक्ट्रिक कार की साइज टाटा नैनो से भी छोटा होने वाला है। भारतीय बाजार में इसका मुकाबला MG Comet से देखने के लिए मिलेगा। आइए विस्तार में जानते हैं कि Vinfast की यह छोटी इलेक्ट्रिक कार किन खास फीचर्स के साथ आने वाली है?

**स्टाइलिंग और फीचर्स**

वियतनामी बाजार में, Vinfast Minio Green को एक व्यावसायिक इलेक्ट्रिक वाहन के रूप में ऑफर किया जाता है। इसकी लंबाई 3,090 मिमी है। इसे 2-डोर ऑल-इलेक्ट्रिक सुपरमिनी सेगमेंट में पेश किया जाता है। इसे टॉल-बॉय प्रोफाइल दिया गया है, जो लोगों का काफी आसानी से ध्यान खींचती है। इसमें क्लोज्ड-ऑफ ग्रिल, अर्ध-वृत्ताकार-स्टाइल की हेडलाइट्स और प्रमुख बम्पर डिजाइन दिया गया है। इसमें छोटा बोनट, सर्कुलर व्हील आर्च, 13-इंच के पहिए और पारंपरिक दरवाजे के हैंडल दिए गए हैं। इसके पीछे की तरफ EV में एक शार्क फिन एंटीना, एक फ्लैट विंडस्क्रीन और वर्टिकली स्टैक्ड टेल लैंप भी मिलता है। इसे कुल 6 कलर ऑप्शन में लेकर आया जाएगा।

**Vinfast Minio Green का इंटीरियर**

इसमें डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले दिया गया है, जो इंफोटेनमेंट सिस्टम के रूप में भी काम करता है। इसमें डैश, दरवाज़े के हैंडल और अपहोल्स्ट्री पर नीले एक्सेंट के साथ एक ग्रे इंटीरियर थीम दिया गया है। बाकी फीचर्स के रूप में रोटरी डायल, कुछ फिजिकल बटन और एक फ्लैट बॉटम 2-स्पोक स्टीयरिंग व्हील दिए गए हैं। इसके साथ ही 4-तरफा एडजस्टेबल ड्राइवर सीट, फैब्रिक सीट अपहोल्स्ट्री और डे-एंड-नाइट इंटीरियर रियरव्यू मिरर भी मिलता है। इसमें पैसेंजर्स की सेफ्टी के लिए ड्राइवर एयरबैग, ABS और ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम जैसे फीचर्स मिलते हैं।

**परफॉरमेंस और रेंज**

Vinfast Minio Green में 14.7 kWh बैटरी पैक दिया जा सकता है। इसमें इलेक्ट्रिक मोटर 20 kW होगी, जो 27 PS की पावर और 65 Nm का पीक टॉर्क जनरेट करेगा। Minio Green की टॉप स्पीड 80 किमी/घंटा है। NEDC मानकों के अनुसार, रेंज 170 किमी है। EV 12 kW तक की चार्जिंग को सपोर्ट करती है।

## नई येज्दी रोडस्टर पुरानी के मुकाबले कितनी बदली?

येज्दी ने हाल ही में 2025 Roadster को नए फीचर्स और डिजाइन बदलावों के साथ लॉन्च किया है। इसमें कटा हुआ रियर फेंडर और स्विंगआर्म-माउंटेड नंबर प्लेट है। नई स्प्लिट-सीट राइडर की पसंद के अनुसार हटाई जा सकती है। टायर को 130/80-17 से बढ़ाकर 150/70-17 किया गया है। बाइक में 34cc लिक्विड-कूल्ड इंजन है जो 29.1hp की पावर देता है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत 2.10 लाख रुपये से शुरू होती है।

**नई दिल्ली।** येज्दी ने हाल ही में 2025 Roadster को लॉन्च किया है। इसे कई नए फीचर्स के साथ लेकर आया गया है, इसके साथ ही इसके डिजाइन में भी कई बदलाव किए गए हैं। इसके डिजाइन में बदलाव की वजह से इसकी स्टाइल को बदलते हैं और इसके चलाने के तरीके को भी बदल सकते हैं। हम यहां पर आपको विस्तार में बता रहे हैं कि नई Yezdi Roadster पुरानी के मुकाबले कितनी बदली है?

नई Yezdi Roadster में एक कटा हुआ रियर फेंडर और एक स्विंगआर्म-माउंटेड नंबर प्लेट होल्डर दिया गया है, जो इसे एक बोल्ड और ज्यादा बॉबर इंसपायर लुक देने का काम करता है। इसमें नई मॉड्यूलर स्प्लिट-सीट दी गई है, जो राइडर के पसंद के आधार पर पीछे की सीट को पूरी तरह से हटाने की अनुमति देती है। इसके सामने की तरफ बदलाव काफी कम है, लेकिन में नया हैंडलबार और एडजस्टेबल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया गया है। इसमें हैंडलबार, क्रैश गार्ड, वाइजर और टूरिंग गियर सहित 20 से ज्यादा एक्सेसरीज के कई कॉम्बिनेशन के साथ छह फैक्ट्री कस्टम किट भी पेश किया जा रहा है।

2025 Yezdi Roadster का चेसिस

बदलावों में मजबूत फ्रेम और एक चौड़ा रियर टायर शामिल है। इसमें सबसे बड़ा बदलाव पीछे की तरफ देखने के लिए मिलता है। इसमें टायर अब 130/80-17 से बढ़कर 150/70-17 हो गया है, जिससे बाइक को एक मजबूत लुक और एक बड़ा संपर्क क्षेत्र मिलता है जो ट्रैक्शन और कॉर्नरिंग स्थिरता में सुधार करेगा। इसके सामने का टायर 100/90-18 यूनिट ही रहता है।

नई Yezdi Roadster में पहले की तरह ही डबल-क्रैडल फ्रेम का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन इसे अपडेटेड मैन्युफैक्चरिंग के जरिए मजबूत किया गया है। इसमें नया सबफ्रेम दिया गया है। इसका सस्पेंशन और ब्रेक में काफी हद पहले जैसा ही है, हालांकि इसमें अपग्रेड स्प्रिंग और डैम्पिंग रेट दिया गया है।

बाकी बदलावों की बात करें तो ऊंचाई में 5 मिमी की बढ़ोतरी करके 795 मिमी हो गई है, जबकि कर्ब वजन 183.4 किलोग्राम हो गया है। Yezdi फ्यूल के बिना कर्ब वजन बताती है, इसलिए 12.5-लीटर टैंक 90 प्रतिशत तक भरा होने पर, वास्तविक आंकड़ा 190-192 किलोग्राम के करीब होना चाहिए।

**2025 Yezdi Roadster का इंजन**

नई Roadster में संशोधित गियरिंग के साथ Alpha2 इंजन मिलता है। इसमें 34cc लिक्विड-कूल्ड सिंगल-सिलेंडर Alpha2 का इस्तेमाल किया गया है, जो 29.1hp की पावर और 29.6Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह इंजन प्रत्येक मॉडल के लिए अलग तरह से ट्यून किया गया है, इसलिए हम उम्मीद कर सकते हैं कि नई Roadster का अपने सिबलिंग्स से एक अलग कैरेक्टर होगा। इसमें रियर स्प्रोकेट लगाकर फाइनल ड्राइव रेशियो को भी अपग्रेड किया गया है, जिससे कम स्पीड पर राइडबिलिटी में सुधार देखने के लिए मिल सकता है।

**2025 Yezdi Roadster की कीमत**

नई Roadster की कीमत पुराने की तुलना में 4,000 रुपये महंगी है। नई Yezdi Roadster की एक्स-शोरूम कीमत 2.10 लाख रुपये से शुरू होकर 2.26 लाख रुपये तक पहुंचती है। यह कीमतें वेरिएंट और कलर ऑप्शन के ऊपर निर्भर करती है। इसे दो वेरिएंट में पेश किया गया है, जो Standard और Premium है। Standard वेरिएंट को चार कलर ऑप्शन, जबकि Premium को एक सिंगल, ब्लैक-आउट पेंट स्कीम लेकर आया गया है। Premium में एक फ्लैट हैंडलबार, ब्लैक-आउट रिम और एक चिकनी असेंबली में इंटीग्रेटेड टेल-लाइट/टर्न-इंडिकेटर यूनिट दी गई है।

## 2026 केटीएम 690 एंड्यूरो आर और 690 एसएमसी आर पेश; नए इंजन, इलेक्ट्रॉनिक्स और डिजाइन से लैस

KTM ने 690 Enduro R और 690 SMC R मोटरसाइकिलें पेश की हैं जिनमें नया इंजन इलेक्ट्रॉनिक्स एर्गोनॉमिक्स और स्टाइलिंग अपडेट हैं। 79hp पावर और 73Nm टॉर्क के साथ इनमें अपडेटेड TFT डिस्प्ले KTMconnect स्मार्टफोन पेयरिंग और कॉर्नरिंग ABS जैसे फीचर्स हैं। सितंबर 2025 में ग्लोबल लॉन्च की उम्मीद है भारत में लॉन्च की तारीख अभी अज्ञात है। आइए इनके बारे में जानते हैं।

**नई दिल्ली।** KTM ने अपनी दो मोटरसाइकिल 690 Enduro R और 690 SMC R को पेश किया है। यह दोनों ही बाइक को पूरी तरह से बदला हुआ इंजन, नए इलेक्ट्रॉनिक्स, अपडेटेड एर्गोनॉमिक्स और नए स्टाइलिंग के साथ लेकर आया गया है। इसके बाद भी यह अपनी अलग ऑफ-रोड और सुपरमोटो पहचान को बरकरार रखती है। आइए जानते हैं कि यह दोनों बाइक किन खास फीचर्स के साथ आने वाली है?

**इंजन में हुआ बदलाव**

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R को इंजन बदलाव के साथ लेकर आया गया है। इसके साथ ही क्रैंककेस, क्लच और स्टेटर कवर, ऑयल-डिलीवरी सिस्टम और फ्यूल पंप के डिजाइन में भी हल्के बदलाव किए गए हैं। इसमें अपडेटेड वाल्व टाइमिंग दी गई है। इससे इसने लेटेस्ट मानदंडों का पालन करते हुए 79hp की पावर और 73Nm का टॉर्क जनरेट करता है, जो पिछले मॉडल से 5hp ज्यादा है।

इसके साथ ही कंपन को कम करने के लिए रबर इंजन माउंट्स पेश किए गए हैं। इसमें से सरल इंटेक लेआउट के लिए सेकेंडरी एयर सिस्टम को हटा दिया गया है और ज्यादा कॉम्पैक्ट मफलर के साथ एग्जॉस्ट को फिर से तैयार किया गया है। इसमें नई 65-डिग्री ट्विस्ट ग्रिप के कारण थ्रॉटल रिएक्शन को तेज किया गया है।

**अपडेटेड टेक्नोलॉजी**

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R के लिए बड़ा अपडेट पुराने LCD डैश को एक 4.2-इंच के कलर TFT डिस्प्ले से बदल दिया गया है। इसमें KTMconnect स्मार्टफोन पेयरिंग, USB-C चार्जिंग, संगीत और कॉल कंट्रोल, और टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन जैसी सुविधाएं दी जाती है। इसमें नए बैकलिट स्विचगियर और एक डेडिकेटेड ABS-ऑफ बटन के साथ जोड़ा गया है।

राइडर एड्स में अब लीन-सेंसिटिव कॉर्नरिंग ABS और कॉर्नरिंग MTC मानक रूप से दिया गया है, जिसमें Enduro R में एक रैली मोड जोड़ा गया है, जो एडजस्टेबल ट्रैक्शन और मोटर-स्लिप रेगुलेशन देता है। SMC R को लॉन्च कंट्रोल, 5-स्टेज एंटी-व्हीली, स्लिप एडजस्टर और सुपरमोटो-विशिष्ट ABS सेटिंग्स के साथ एक ट्रैक मोड के साथ लेकर आया गया है।

**डिजाइन और चेसिस में बदलाव**

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R में अब नई LED हेडलाइट, टेल-लाइट और इंडिकेटर दिया गया है। इसके चेसिस में बदलाव किया गया है और स्टील ट्रेलिस फ्रेम को पहले की तरह बरकरार रखा गया है। इसमें सस्पेंशन ट्यूनिंग अपग्रेड किया गया है।

Enduro R को अपग्रेड बॉडीवर्क, LED लाइटिंग, नए इन-मोल्ड ग्राफिक्स के साथ लेकर आया गया है। इसमें ट्रांसफर्ड सेंटर-स्टैंड माउंट दिया गया है। दोनों WP सस्पेंशन और एक स्टील ट्रेलिस फ्रेम का इस्तेमाल पहले की तरह जारी रखा गया है।

**कम होगी लॉन्च?**

नई KTM 690 Enduro R और 690 SMC R को सितंबर 2025 में ग्लोबल लेवल पर लॉन्च किया जाएगा। अभी तक इन दोनों के भारत में लॉन्च की तारीख और कीमत की जानकारी सामने नहीं आई है।

## फिल्म पुष्पा के विलेन Fahadh Faasil ने खरीदी Ferrari, कीमत इतनी की जानकर उड़ जाएगा होश

मलयालम फिल्म स्टार फहाद फाजिल ने हाल ही में Ferrari Purosangue खरीदी है जो केरल की पहली Purosangue है। सफेद रंग की इस कार को उन्होंने अपनी पसंद के अनुसार कस्टमाइज करवाया है। इस एसयूवी में 6.5-लीटर का पेट्रोल इंजन है। फहाद फाजिल के कार कलेक्शन में Lamborghini Urus Mercedes-Benz G63 AMG Land Rover Defender 90 V8 और Porsche 911 Carrera S जैसी कई लग्जरी गाड़ियाँ शामिल हैं।

**नई दिल्ली।** मलयालम फिल्म स्टार फहाद फाजिल ने अपनी कार कलेक्शन में एक और नई लग्जरी कार शामिल की है। उन्होंने अपनी पहली फेरारी खरीदी है, और वह कोई आम मॉडल नहीं, बल्कि Ferrari Purosangue है। यह कार केरल राज्य की पहली Purosangue भी है। यह कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है। आइए इसके बारे में विस्तार में जानते हैं कि यह किन खास फीचर्स के साथ आती है और फहाद फाजिल के कार कलेक्शन में और कौन-सी गाड़ियां शामिल है?

**फहाद फाजिल ने खरीदी Ferrari Purosangue**

फहाद फाजिल ने अपनी इस पहली फेरारी के लिए बियांको सेर्विनो (Bianco Cervino) एक चमकदार सफेद कलर चुना है, जो धूप में बहुत आकर्षक लगता है। उन्होंने इसमें कई अतिरिक्त ऑप्शन भी शामिल किए हैं, जैसे कि फ्रंट बंपर गार्निश और अन्य कार्बन पार्ट्स। कार में ड्यूल-टोन अलॉय व्हील्स भी हैं।

कार के बाहरी हिस्से से लेकर इंटीरियर तक, अभिनेता ने इसे पूरी तरह से अपनी पसंद के अनुसार कस्टमाइज करवाया है। कार के ब्रेक कैलिपर्स चमकीले नीले रंग के हैं, जिस पर सफेद फेरारी लिखा हुआ है। इंटीरियर में उन्होंने अजुरो सैंटोरिनी ब्लू (Azzurro Santorini Blue) लेदर अपहोल्स्ट्री को चुना है, जिसमें सफेद कॉन्ट्रास्ट स्टिचिंग और हेडरेस्ट पर सफेद फेरारी का लोगो लगा है।

**Ferrari Purosangue के फीचर्स**

Purosangue फेरारी की पहली और फिलहाल एकमात्र एसयूवी है। इसे 2022 में लॉन्च किया गया था और इसे फेरारी के परफॉर्मेंस और एसयूवी का शानदार कॉम्बीनेशन माना जाता है। इसमें एक बड़ा 6.5-लीटर नेचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन दिया गया है। यह 725 PS की पावर और 716 Nm का टॉर्क जनरेट करका है।

Ferrari Purosangue की एक्स-शोरूम कीमत 10 करोड़ रुपये हैं। फहाद फाजिल ने कई कस्टम ऑप्शन को चुना है, जिसकी वजह से उन्हें फेरारी की कार के लिए कहीं ज्यादा कीमत चुकानी पड़ी होगी।

**फहाद फाजिल का कार कलेक्शन**

फहाद फाजिल के पास कारों का एक शानदार कलेक्शन है। हाल ही में, उन्होंने 53 लाख रुपये की की Volkswagen Golf GTI और 3.5 करोड़ रुपये की Lexus LM 350h Ultra लग्जरी MPV भी खरीदी है। उनके कलेक्शन में पहले से ही Lamborghini Urus, Mercedes-Benz G63 AMG, Land Rover Defender 90 V8, और Porsche 911 Carrera S जैसी कारें शामिल हैं।

# भोजन में बदलाव सूक्ष्मजीवों में विकास का कारण बन सकता है

विजय गर्ग

शोधकर्ताओं ने सूक्ष्मजीवों के एक समूह को डेयरी उत्पादों में पाए जाने वाले शर्करा, ग्लूकोज और गैलेक्टोज का मिश्रण दिया और दूसरे समूह को उसी ग्लूकोज और गैलेक्टोज से बनी जटिल शर्करा दी, और सूक्ष्मजीवों को लगातार विभाजन के जरिये पनपते रहने दिया। आइआइटी बाम्बे में इस अध्ययन का नेतृत्व करने वाले प्रोफ़ेसर सुप्रीत सैनी कहते हैं, 'हमने ऐसी शर्कराएं चुनीं जो रासायनिक असर रखती हैं । हमारा लक्ष्य यह देखना था कि क्या सूक्ष्मजीवों को इस बात की परवाह है कि भोजन कैसे दिया जाता है।'

आइआइटी बाम्बे के शोधकर्ताओं ने पाया है कि सूक्ष्मजीवों के भोजन में मामूली बदलाव भी उन्हें अलग-अलग तरीकों से विकसित कर सकते हैं। शोधकर्ताओं का दावा है कि यह खोज इस बात को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकती है कि विकास कितना महत्त्वपूर्ण है और इसे औद्योगिक और चिकित्सा उद्देश्यों के लिए कैसे नियंत्रित किया जा सकता है। आइआइटी बाम्बे ने सूक्ष्मजीवों का उपयोग करके प्रयोगशाला में विकास से संबंधित एक अध्ययन किया। रासायनिक इंजीनियरिंग विभाग के शोधकर्ताओं ने दो सूक्ष्मजीवों - सामान्य रूप से आंत में पाये जाने वाले जीवाणु ई कोलाई और बेकिंग सामग्री में इस्तेमाल होने वाले यीस्ट का उपयोग यह पता लगाने के लिए किया कि समान शर्करा का अलग-अलग तरीके से इस्तेमाल करने पर वे कैसे संसाधित और विकसित होते हैं।

शोधकर्ताओं ने सूक्ष्मजीवों के एक समूह को डेयरी उत्पादों में पाए जाने वाले शर्करा, ग्लूकोज और गैलेक्टोज का मिश्रण दिया और दूसरे समूह को उसी ग्लूकोज और गैलेक्टोज से बनी जटिल शर्करा दी, और सूक्ष्मजीवों को लगातार विभाजन के जरिये पनपते रहने दिया। आइआइटी बाम्बे में इस अध्ययन का नेतृत्व करने वाले प्रोफ़ेसर सुप्रीत सैनी कहते हैं, 'हमने ऐसी शर्कराएं चुनीं जो रासायनिक असर रखती हैं । हमारा लक्ष्य यह देखना था कि क्या सूक्ष्मजीवों को इस बात की परवाह है कि भोजन कैसे दिया जाता है।' शोधकर्ताओं ने पाया कि शर्करा की संरचना के आधार पर, सूक्ष्मजीवों का प्रत्येक समूह दो अप्रत्याशित विकासवादी पथों को चुनता है। आनुवंशिक अध्ययन से पता चला कि इसके पीछे कारण कई उत्परिवर्तन हैं। दोनों अध्ययनों की पोस्ट-डाक्टरल शोधकर्ता और लेखिका नीतिका अहलावत ने कहा, 'हमें उम्मीद नहीं थी कि भोजन और पोषक तत्वों में ये सूक्ष्म अंतर पूरी तरह से अलग नतीजे देंगे। निष्कर्ष बताते हैं कि एक कोशिका पोषक तत्व के प्रति जिस तरह से प्रतिक्रिया करती है, वह इस बात को प्रभावित कर सकता है कि कौन से उत्परिवर्तन लाभदायक हैं और विकास कैसा हो सकता है।' आश्चर्यजनक रूप से जब शोधकर्ताओं ने ई कोलाई और यीस्ट, दोनों की इन विकसित आबादियों को शर्करा स्रोतों के एक नए समूह में स्थानांतरित किया, तो उनकी वृद्धि एक पूर्वानुमानित पैटर्न के अनुसार हुई। अध्ययन में पाया गया कि हालांकि जिन वातावरणों में ई कोलाई और यीस्ट की नई आबादी तैयार हुई वहां उनका प्रदर्शन अप्रत्याशित था, लेकिन विकास के दुष्प्रभावों का सफलतापूर्वक अनुमान लगाया जा सकता था। आइआइटी बाम्बे की पूर्व पीएचडी छात्रा और ई कोलाई पर अध्ययन की लेखिका पवित्रा वेंकटरमन ने कहा 'यह उत्साहजनक नतीजा है कि विकास लचीला भी है और सीमित भी । समान वातावरण में परिणाम अप्रत्याशित थे, जो विकास में संभावित लचीलेपन को दर्शाता है।'

अध्ययन में कहा गया है कि निष्कर्षों का बड़े पैमाने पर औद्योगिक अनुप्रयोगों में उपयोग किया जा सकता है। इसमें कहा गया है कि बेहतर विकास दर और बेहतर चयापचय क्षमता वाले सूक्ष्मजीवों का उपयोग खाद्य और पेय पदार्थ, फार्मास्यूटिकल्स और जैव ईंधन उद्योग जैसे व्यावसायिक अनुप्रयोगों में किया जा सकता है।

## हार्ले की सवारी से ब्रिक्स तक: भारत की आर्थिक कूटनीति

भारत और अमेरिका के बीच व्यापारिक रिश्ते एक जटिल और गतिशील ताने-बाने की तरह हैं, जहां तनाव और अवसर एक साथ उभरते हैं। हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हार्ले-डेविडसन मोटरसाइकिल का जिक्र कर भारत पर ऊंचे टैरिफ का आरोप लगाया, इसे एकतरफा व्यापार नीति वाला देश करार दिया। उनके अनुसार, भारत अमेरिकी उत्पादों पर दुनिया में सबसे अधिक टैरिफ थोपता है। लेकिन भारत के दृष्टिकोण से यह कहानी सिर्फ टैरिफ की नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, रणनीतिक कूटनीति और वैश्विक व्यापार में अपनी मजबूत स्थिति कायम करने की है।

ट्रंप का हार्ले-डेविडसन बयान कोई नई बात नहीं। 2018 में भी उन्होंने भारत के टैरिफ को अनुचित ठहराया था, दावा करते हुए कि हार्ले पर 200% टैरिफ था, जो बाद में 50% हुआ। हकीकत में, टैरिफ अधिकतम 100% था, जिसे 2018 में भारत ने घटाकर 50% कर दिया। यह कठौती भारत की लचीली और सहयोगी व्यापार नीति का सबूत थी। फिर भी, भारत के लिए टैरिफ महज राजस्व का साधन नहीं, बल्कि घरेलू उद्योगों खासकर छोटे और मध्यम उद्यमों, किसानों और पशुपालकों के लिए सुरक्षा कवच है। हार्ले-डेविडसन जैसी सुपरबाइक, जिसकी कीमत लाखों में है, भारत के मध्यम वर्ग की पहुंच से परे है। ऐसे लक्जरी उत्पादों पर ऊंचा टैरिफ भारत की उस आर्थिक रणनीति का हिस्सा है, जो स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देती है, आयात पर निर्भरता घटाती है और आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार करती है। यहाँ कहानी सिर्फ आंकड़ों की नहीं, बल्कि भारत की उस महत्वाकांक्षा की है, जो वैश्विक मंच पर आर्थिक संप्रभुता और संतुलन को प्राथमिकता देती है।

भारत का दृष्टिकोण न केवल रक्षात्मक, बल्कि दूरदर्शी और रणनीतिक रूप से परिपक्व है। ट्रंप के ऊंचे टैरिफ के आरोपों के जवाब में वाणिज्य मंत्री ने दमदार और स्पष्ट शब्दों में कहा कि भारत और अमेरिका के बीच व्यापारिक समझौते पर बातचीत जोरों पर है, और नवंबर 2025 तक एक अंतरिम समझौता संभव है। यह कूटनीतिक परिपक्वता भारत की उस महत्वाकांक्षा को रेखांकित करती है, जो न केवल अमेरिका के साथ व्यापारिक संतुलन साधती है, बल्कि वैश्विक मंच पर भारत को एक अग्रणी आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित करती है। इसके लिए भारत ने चतुराई भरे कदम उठाए हैं। मिसाल के तौर पर, अमेरिकी टैरिफ के प्रभाव को कम करने के लिए भारत ने 40 अन्य देशों के साथ वस्त्र निर्यात को बढ़ावा देने की ठोस रणनीति बनाई है। इसके साथ ही, भारत ने अमेरिकी लॉबिंग फर्म मरक्यूरी पब्लिक अफेयर्स के साथ 225,000 डॉलर का अनुबंध किया है, ताकि ट्रंप प्रशासन के साथ बातचीत को और प्रभावी बनाया जा सके। यह कदम भारत की सधी हुई रणनीति का प्रतीक है—न टकराव की राह, न दबाव में झुकना, बल्कि स्मार्ट कूटनीति और आर्थिक चतुराई के साथ वैश्विक व्यापार में अपनी धाक जमाना। भारत का यह दृष्टिकोण न केवल रक्षात्मक ढाल है, बल्कि एक ऐसी तलवार भी है, जो वैश्विक मंच पर उसकी आर्थिक संप्रभुता को और तेज करती है।

हार्ले-डेविडसन का उदाहरण भारत के लिए न केवल एक व्यापारिक सबक है, बल्कि एक गहरा सांस्कृतिक और आर्थिक संदेश भी देता है। 1903 में विलियम एस. हार्ले और डेविडसन बंधुओं ने एक छोटे से शेड में शुरू की गई यह मोटरसाइकिल आज अमेरिकी संस्कृति का गौरव है, लेकिन भारत में भी इसका जादू कम नहीं। ऑटो विशेषज्ञ टूटू धवन बताते हैं कि हार्ले की अनूठी डिज़ाइन और ऐतिहासिक विरासत इसे भारत में स्टाइल और रुतबे का प्रतीक बनाती है। दिल्ली जैसे शहरों में, जहां कारी चलाना चुनौतीपूर्ण है, हार्ले सड़कों पर शान और शक्ति का पर्याय है। भारत में इसकी बढ़ती मांग को देखते हुए हार्ले ने स्थानीय उत्पादन शुरू किया, जिसने न केवल टैरिफ के प्रभाव को कम किया, बल्कि स्थानीय रोजगार को बढ़ावा देकर "मेक इन इंडिया" की भावना को साकार किया। यह भारत की उस दूरदर्शी नीति का प्रतीक है, जो विदेशी निवेश को आकर्षित करते हुए आत्मनिर्भरता को मजबूत करती है।

भारत-अमेरिका व्यापारिक रिश्तों की कहानी टैरिफ की सतही जंग से कहीं गहरी है। भारत अमेरिका को सस्ती जेनेरिक दवाएं, कपड़ा, और रत्न-आभूषण जैसे उत्पाद निर्यात करता है, जो अमेरिकी उपभोक्ताओं के लिए वरदान हैं। 2024 में भारत ने 12.5 अरब डॉलर की जेनेरिक दवाएं निर्यात कीं, जो अमेरिकी स्वास्थ्य सेवा प्रणाली की रीढ़ बनीं। दूसरी ओर, अमेरिका भारत से कृषि और डेयरी क्षेत्रों में अधिक बाजार पहुंच चाहता है, जिसे भारत ने अपनी घरेलू प्राथमिकताओं और किसानों के हितों को ध्यान में रखकर अस्वीकार किया। यह अस्वीकृति भारत की आत्मनिर्भरता की दृढ़ नीति को रेखांकित करती है। ट्रंप द्वारा रूस से तेल खरीदने पर लगाए गए 25% अतिरिक्त टैरिफ ने तनाव को और गहराया, लेकिन भारत ने इसका जवाब ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) जैसे मंचों पर अपनी वैश्विक साख को और मजबूत करके दिया। यह भारत की वह रणनीतिक चतुराई है, जो न केवल आर्थिक संप्रभुता की रक्षा करती है, बल्कि वैश्विक मंच पर भारत को एक सशक्त और स्वाभिमानी शक्ति के रूप में स्थापित करती है।

ट्रंप की "अमेरिका फर्स्ट" नीति और भारत की "आत्मनिर्भर भारत" दृष्टि के बीच का टकराव वैश्विक व्यापार की एक रोमांचक और गतिशील गाथा है। ट्रंप की आक्रामक शैली, जहां वह टैरिफ को हथियार की तरह इस्तेमाल करते हैं, भारत के लिए चुनौती तो लाती है, मगर यह भारत को अपनी कूटनीतिक और आर्थिक रणनीति को और धारदार बनाने का सुनहरा अवसर भी देती है। भारत ने न केवल अमेरिका के साथ बातचीत को अटल रखा है, बल्कि यूरोपीय संघ के साथ मुक्त व्यापार समझौते और जापान जैसे देशों के साथ गहरे व्यापारिक रिश्तों के जरिए अपनी वैश्विक साख को अभूतपूर्व ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। यह भारत की उस बढ़ती ताकत का प्रतीक है, जो वैश्विक व्यापार के मैदान में नई मिसालें गढ़ रही है।

इस पूरे विवाद में भारत का रुख क्रिस्टल की तरह साफ है: न तो वह दबाव में झुकेगा, न ही अनावश्यक टकराव की राह अपनाएगा। भारत की नीति संतुलन, संयम और साझेदारी की मजबूत नींव पर टिकी है। नवंबर 2025 तक प्रस्तावित व्यापार समझौता इस दिशा में एक ऐतिहासिक कदम साबित हो सकता है, जो न केवल टैरिफ विवादों को शांत करेगा, बल्कि भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी को नई ऊर्जा देगा। चाहे हार्ले-डेविडसन का सड़कों पर दबदबा हो या व्यापारिक कूटनीति की सधी हुई चाल, भारत अपनी राह पर अडिग और आत्मविश्वास के साथ बढ़ रहा है। यह भारत केवल एक उभरती अर्थव्यवस्था नहीं, बल्कि एक ऐसी वैश्विक शक्ति है, जो व्यापार और कूटनीति के नए नियम लिखने को तैयार है, अपनी शर्तों पर, अपनी ताकत से।

## रनवे से परे

विजय गर्ग

फैशन की दुनिया में, "परे रनवे" एक ऐसा है जो पारंपरिक, अनन्य कैटवॉक शो से उद्योग की व्यापक, अधिक समावेशी और बहुमुखी समझ पर ध्यान केंद्रित करने में बदलाव का प्रतीक है। इसमें वह सब कुछ शामिल है जो प्रभावित करता है और रनवे प्रस्तुति के नियंत्रित वातावरण के बाहर फैशन से प्रभावित होता है। यहां कुछ प्रमुख अवधारणाएं और तत्व दिए गए हैं जो फैशन में ₹परे रनवे₹ की छतरी के नीचे आते हैं:

स्ट्रीट स्टाइल और सबकल्चर: यह शायद ₹रनवे से परे₹ का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। यह मानता है कि फैशन के रुझान अब अपने स्टूडियो में डिजाइनरों द्वारा पूरी तरह से तय नहीं किए गए हैं। इसके बजाय, वे सड़कों पर व्यक्तियों की रचनात्मकता से पैदा होते हैं, विभिन्न उपसंस्कृतियों (जैसे, पंक, हिप-हॉप, स्केट संस्कृति) और विविध शहरी वातावरण में। स्ट्रीट स्टाइल डिजाइनरों के लिए प्रेरणा का एक शक्तिशाली स्रोत बन गया है, कई रनवे संग्रह सीधे उधार लेते हैं या लोगों को उनके दैनिक जीवन में क्या पहना जाता है, उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं।

सोशल मीडिया और इन्फ्लुएंसर कल्चर: इंस्टाग्राम, टिकटोक और यूट्यूब जैसे प्लेटफार्मों के उदय ने फैशन को लोकतांत्रिक बना दिया है। कोई भी एक फैशन प्रभावक हो सकता है, और वे अपने अनुयायियों के साथ जो संगठन साझा करते हैं, उनका अक्सर इस बात पर अधिक प्रभाव पड़ता है कि लोग पारंपरिक रनवे शो की तुलना में क्या खरीदते हैं और पहनते हैं। इसने एक नया पारिस्थितिकी तंत्र बनाया है जहां रुझानों की पहचान की जाती है, प्रवर्धित किया जाता है, और एक अभूतपूर्व गति से विश्व स्तर पर फैलाया जाता है।

स्थिरता और नैतिक फैशन: फैशन के आसपास की बातचीत अपने पर्यावरण और सामाजिक प्रभाव को संबोधित करने के लिए ₹रनवे से परे₹ चली गई है। उपभोक्ता अपनी आपूर्ति श्रृंखला, श्रम प्रथाओं और टिकाऊ सामग्री के उपयोग के बारे में ब्रांडों से पारदर्शिता और जवाबदेही की मांग कर रहे हैं। इससे सर्कुलर फैशन (जैसे, किराये और पुनर्विक्रय प्लेटफार्मों), साइकिल चलाने और धीमे फैशन पर ध्यान केंद्रित करने में वृद्धि हुई है।

प्रौद्योगिकी और डिजिटल फैशन: प्रौद्योगिकी फैशन में नई सीमाओं का निर्माण कर रही है जो शारीरिक कपड़ों से कहीं अधिक है। इसमें शामिल है:

डिजिटल फैशन: वीडियो गेम, मेटावर्स या डिजिटल-ओनली फोटो शूट के लिए उपयोग के लिए आभासी कपड़ों का निर्माण।

फैशन फिल्म्स और स्टोरीटेलिंग: ब्रांड एक संग्रह के सरल प्रदर्शन को आगे बढ़ाते हुए, उपभोक्ताओं के साथ अपनी दृष्टि और भावनात्मक संबंध को व्यक्त करने के लिए सिनेमाई आख्यानों और लघु फिल्मों का उपयोग कर रहे हैं।

एआई और डेटा एनालिटिक्स: कंपनियां रुझानों की भविष्यवाणी करने, सिफारिशों को निजीकृत करने और उत्पादन का अनुकूलन करने के लिए एआई का उपयोग कर रही हैं, जिससे उद्योग अधिक कुशल और उत्तरदायी है।

फैशन का व्यवसाय: ₹रनवे से परे₹ भी उद्योग के महत्वपूर्ण, लेकिन अक्सर अनदेखी, व्यापार पक्ष को संदर्भित करता है। इसमें खुदरा रणनीतियाँ, ई-कॉमर्स, मार्केटिंग, ब्रांडिंग और वित्तीय निर्णय शामिल हैं जो एक ब्रांड की सफलता का निर्धारण करते हैं। यह समझने के बारे में है कि रनवे संग्रह को पहनने योग्य, बिक्री योग्य वस्तुओं में कैसे अनुवादित किया जाता है जो वैश्विक उपभोक्ता आधार के साथ प्रतिध्वनित होते हैं।

विशिष्टता और प्रतिनिधित्व: फैशन की दुनिया को विभिन्न प्रकार के शरीर, जातीयता, लिंग और क्षमताओं के प्रतिनिधित्व में अधिक समावेशी होने के लिए धक्का दिया जा रहा है। यह बदलाव विज्ञापन अभियानों में अधिक विविध कास्टिंग, कपड़ों के आकार में अधिक पहुंच और दुनिया की विविध आबादी के अधिक प्रामाणिक प्रतिनिधित्व की मांग करके ₹रनवे से परे₹ चला गया है। संक्षेप में, ₹परे रनवे₹ एक मान्यता है कि फैशन केवल कैटवॉक पर कपड़ों के बारे में नहीं है। यह एक गतिशील और विकसित सांस्कृतिक बल, समाज का प्रतिबिंब और जटिल आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी आयामों के साथ एक बहु-बिलियन डॉलर उद्योग है।

*सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्,*

## नकली उत्पादों से घिरा आनलाइन बाजार

विजय गर्ग

मौजूदा डिजिटल क्रांति के दौर में इंटरनेट की सुलभता और स्मार्टफोन की सर्व- व्यापकता ने खरीदारी के पुराने तौर- तरीकों को बदल दिया है। अब लोग घर बैठे एक क्लिक पर हर वह वस्तु मंगवा सकते हैं। कपड़े हों या किताबें, दवाइयां हों या सौंदर्य प्रसाधन, इलेक्ट्रानिक्स हों या लक्जरी ब्रांड सबकुछ उपभोक्ता की चौखट तक पहुंच रहा है, परंतु सुविधा की यह चमचमाती दुनिया अब एक बड़े खतरे से रूबरू है। नकली और जाली सामान ने आनलाइन बाजार के भरोसे को गहरी चोट पहुंचाई है। वर्ष 2023 में जहां नकली सामान की महज 2,211 शिकायतें दर्ज हुई थीं, वहीं 2024 में यह संख्या 4,997 तक पहुंच गई। 2025 के शुरुआती केवल छह महीनों में ही 7,221 उपभोक्ता इस समस्या से पीड़ित होकर हेल्पलाइन का दरवाजा खटखटा चुके हैं। आनलाइन बाजार के विकास के साथ-साथ नकली उत्पाद और धोखाधड़ी की बढ़ती प्रवृत्ति वैध बाजार और अर्थव्यवस्था के लिए खतरनाक है।

सर्वेक्षण बताते हैं कि हर पांचवें आनलाइन खरीदार को कम से कम एक बार नकली सामान मिला है। इनमें सर्वाधिक शिकायतें जूतों, सौंदर्य प्रसाधनों और सुगंध से जुड़ी रहीं। लक्जरी ब्रांड की तो हालत और भी बदतर है, जहां उपभोक्ता हजारों रुपये खर्च करने के बावजूद नाम और पैकेजिंग के धोखे का शिकार हो जाते हैं। इलेक्ट्रानिक सामान जैसे चार्जर, पावर बैंक और हेडफोन उपभोक्ताओं की सुरक्षा को खतरे में डालते हैं तो नकली दवाइयां और स्वास्थ्य उत्पाद सीधे जीवन पर आघात करते हैं। यह समस्या अब केवल आर्थिक ठगी नहीं रही, यह स्वास्थ्य, सुरक्षा और उपभोक्ता- अधिकारों पर खुला हमला है।

भारत में कई ऐसे सेक्टर हैं जहां नकली उत्पादों से देश को हर साल एक लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का नुकसान हो रहा है। बीते कुछ वर्षों में दुनियाभर में होने वाले व्यापार में नकली सामानों की हिस्सेदारी बढ़कर 3.3 प्रतिशत तक पहुंच गई है। आंकड़ों के अनुसार, यह बाजार 2026 तक 200 अरब डालर तक पहुंच सकता है। हालांकि नकली उत्पादों पर नकेल कसने के लिए सरकार ने भी प्रयास किए हैं। भारतीय मानक ब्यूरो समय-समय पर छापेमारी कर नकली सामान जब्त करता है। वर्ष 2025 की शुरुआत में बीआइएस ने ई-कामर्स गोदामों से चार हजार से अधिक नकली उत्पाद जब्त किए। वर्ष 2024 में 22 तलाशी अभियान भी चलाए गए। किंतु यह प्रयास समुद्र में महज एक बूंद के समान है। ई-कामर्स कंपनियों को अपने प्लेटफार्म पर विक्रेताओं की कड़ी जांच करनी होगी और नकली पाए जाने पर उन्हें सदा के लिए प्रतिबंधित करना होगा। प्रत्येक उत्पाद पर क्यूआर कोड और होलोग्राम जैसी तकनीक अनिवार्य की जाए, ताकि उपभोक्ता खरीदारी के समय ही प्रामाणिकता जांच सके।

## अतिथि शिक्षकों की यह कैसी मेहमाननवाजी

ओ पी सोनिक

ऐसा माना जाता है कि भारतीय समाज के व्यवहार में अतिथि को देवता के समान मानने की भावना समाहित है। पिछले कई वर्षों से भारत की शिक्षा व्यवस्था में शिक्षकों के लिए प्रयुक्त अतिथि शब्द जितना ट्रेंड करता रहा है, उतना पहले कभी नहीं देखा गया। जब शिक्षकों की भारी कमी का मुद्दा विभिन्न माननीय न्यायालयों में सरकारों के गले की फांस बनने लगा तो सरकारों द्वारा शिक्षकों की कमी को पूरा करने के लिए एक ऐसा अस्थाई जुगाड़ ईज़ाद कर लिया जिससे देश की डगमगाती शिक्षा व्यवस्था फिर से चलने लगी। सरकारी शिक्षण संस्थानों में नियमित शिक्षकों की अपेक्षा अतिथि शिक्षकों की बढ़ती संख्या को देखकर लगता है कि फिर से चलने वाली व्यवस्था अब लंगड़ी व्यवस्था का रूप ले रही है। विभिन्न राज्यों में ऐसे शिक्षकों को अतिथि शिक्षक, शिक्षा मित्र, संविदा शिक्षक, पारा शिक्षक, शिक्षक सेवक और विद्या वालंटियर्स जैसे भावनात्मक नामों से जाना जाता है। काम चाहें चुनाव का हो या मतदाता सूचियों का या किसी अन्य गैर शैक्षिणिक गतिविधि का, आमतौर पर नियमित शिक्षक उक्त गतिविधियों में व्यस्त रहते हैं। ऐसे में बच्चों को पढ़ाने का ज्यादा दायित्व अतिथि शिक्षकों के कंधों पर टिका होता है।

अधिकांश राज्यों में शिक्षकों के प्रति राजनीतिक उदासीनता ने उन्हें मजदूरों के स्तर पर लाकर खड़ा कर दिया है। मजदूरों को भी कार्य दिवसों के हिसाब से पारिश्रमिक मिलता है और अतिथि शिक्षकों को भी। जिन राज्यों में मासिक आधार पर निर्धारित धनराशि देने का प्रावधान है भी तो वह अपर्याप्त है। मजदूरों और अतिथि शिक्षकों में बस फर्क सिर्फ इतना रह गया है कि अतिथि शिक्षकों को मजदूरों की तरह काम के लिए चौराहों पर खड़ा नहीं होना पड़ता। महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना में मजदूरों को वर्ष में 100 दिनों के रोजगार की सरकारी गारंटी है, लेकिन सरकारी शैक्षणिक संस्थानों में काम करने वाले अतिथि शिक्षकों को वर्ष में कितने दिन का काम मिलेगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है। लाला जी की दुकान पर काम करने वालों और घरों में काम करने वाली महिलाओं को महीने की तय धनराशि के आधार पर काम पर रखा जाता है। आमतौर पर इन्हें सप्ताह में एक दिन छुट्टी मिलती है जिसके पैसे नहीं कटते। और इन कार्यों को करने के लिए कोई शैक्षणिक योग्यता भी निर्धारित नहीं है, जो मानवीय पहलू के सकारात्मक पक्ष को दर्शाता है।

शैक्षणिक योग्यता प्राप्त अतिथि शिक्षक विपरीत परिस्थितियों से जूझ रहे हैं। अधिकांश राज्यों में उन्हें कोई साप्ताहिक अवकाश नहीं मिलता। रविवार एवं राजपत्रित अवकाशों के पैसे काट लिए जाते हैं। दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरने वाले देश में क्या राज्य सरकारें आर्थिक रूप से इतनी कमजोर हो गयी हैं कि अतिथि शिक्षकों को रविवार एवं राजपत्रित अवकाशों के पैसे देने में असमर्थ हैं। अतिथि शिक्षकों पर कभी भी कार्यमुक्त होने का खतरा मंडराता रहता है। ऐसे शिक्षकों के रोजगार की अनिश्चितता शोले फिल्म के उस डायलाग की याद दिलाती है जिसमें गब्बर सिंह बसंती को डांस करने को मजबूर करता है और फिर कहता है, कि जब तक तेरे पैर चलेंगे, तब तक उसकी यानी वीरू की सांसे चलेंगी। अतिथि शिक्षकों की नौकरी भी तभी तक लगातार चल पाती है जब तक कि उस पोस्ट पर कोई नियमित शिक्षक नहीं आ जाता। नियमित शिक्षक के आने पर अतिथि शिक्षक स्वतः ही कार्यमुक्त हो जाते हैं।

## (शिक्षक दिवस के लिए विशेष) महान छात्र महान शिक्षक बनाते हैं

विजय गर्ग

शिक्षण को अक्सर कुलीन व्यवसायों में से एक के रूप में मनाया जाता है, लेकिन इसके दिल में एक शक्तिशाली सत्य निहित है: महान छात्र महान शिक्षक बनाते हैं। एक शिक्षक की सफलता केवल वे जो सिखाते हैं, उससे नहीं मापी जाती है, बल्कि उनके छात्र कितनी अच्छी तरह सीखते हैं, सवाल करते हैं और बढ़ते हैं। रिश्ता एकतरफा नहीं है; यह एक ऐसा चक्र है जहां चौकस, जिज्ञासु और प्रतिबद्ध छात्र अपने शिक्षकों में सर्वश्रेष्ठ लाते हैं।

एक्सेसिबिलिटी एंड केयर: शिक्षक जो न केवल छात्रों के लिए बल्कि परिसर में सभी के लिए स्वीकार्य हैं, किसी भी समस्या या चिंताओं का समाधान पा सकते हैं। महान शिक्षक जिनके पास अच्छे सुनने का कौशल है, वे यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक छात्र स्कूल के दरवाजों के बाहर अपना व्यक्तिगत सामान छोड़ दे। युवा की समस्याओं को लचीले ढंग से संभाला जाना चाहिए।

**जिज्ञासा की शक्ति**

महान छात्र वे नहीं हैं जो सभी उत्तरों को जानते हैं लेकिन जो सार्थक प्रश्न पूछने की हिम्मत करते हैं। उनकी जिज्ञासा शिक्षकों को गहराई से सोचने, आगे शोध करने और अपनी समझ को परिष्कृत करने के लिए प्रेरित करती है। जिज्ञासु शिक्षार्थियों से भरी कक्षा एक तरह के निर्देश के बजाय साझा खोज का स्थान बन जाती है। इस तरह, छात्र शिक्षकों को खुद आजीवन सीखने वाले बनने के लिए प्रेरित करते हैं।

**अनुशासन और समर्पण की भूमिका**

शिक्षकों ने अपने सर्वोत्तम प्रयासों को तब रखा जब वे जानते हैं कि उनके छात्र सीखने की प्रक्रिया को महत्व देते हैं। एक अनुशासित, समर्पित छात्र शिक्षकों को अधिक देखभाल, स्पष्टता और रचनात्मकता के साथ सबक डिजाइन करने के लिए प्रेरित करता है। जब छात्र अपनी शिक्षा के प्रति ज्ञान और जिम्मेदारी के लिए सम्मान दिखाते हैं, तो शिक्षक अधिक देने के लिए प्रोत्साहित और सशक्त महसूस करते हैं।

**ग्रोथ का फीडबैक लूप**

अच्छे छात्र सिर्फ अवशोषित नहीं करते हैं; वे जवाब देते हैं, संलग्न करते हैं और प्रतिबिंबित करते हैं। उनकी प्रतिक्रिया - चाहे प्रदर्शन, भागीदारी या यहां तक कि रचनात्मक आलोचना के माध्यम से - शिक्षक के तरीकों को आकार देता है। हर संदेह उठाया, हर नया विचार पेश किया, और छात्रों द्वारा किया गया हर ईमानदार प्रयास शिक्षक के विकास में योगदान देता है।

**कक्षा से परे प्रेरणा**

कई शिक्षक स्वीकार करेंगे कि उनके सर्वश्रेष्ठ शिक्षण क्षण उनके छात्रों से प्रेरित थे। एक चुनौतीपूर्ण प्रश्न, एक अनूठा परिप्रेक्ष्य, या एक छात्र के दृढ़ संकल्प अक्सर शिक्षण में नवाचार स्पार्क्स । महान छात्र शिक्षकों को याद दिलाते हैं कि उन्होंने इस पेशे को क्यों चुना - परिवर्तन को देखने के लिए और सफलता की ओर किसी की यात्रा का हिस्सा बनने के लिए।

रचनात्मकता और नवाचार: शानदार छात्र यह सुनिश्चित करने के लिए प्रस्तुतियां देने के नए तरीके ढूंढते हैं कि हर दूसरा छात्र प्रमुख अवधारणाओं को समझता है। शिक्षक भी ठोस मार्गदर्शन के साथ जवाब देता है। शिफ्टिंग गियर दिन का क्रम है।

सहयोग: खुद को कमजोर समझने के बजाय क्योंकि वे मदद चाहते हैं, महान छात्र सहयोग को एक साथी पेशेवर से सीखने के तरीके के रूप में देखते हैं। एक महान शिक्षक एक शिक्षक के रूप में विकसित होने के अवसर के रूप में रचनात्मक आलोचना और सलाह का उपयोग करता है। आयु, अनुभव और वरिष्ठता नहीं लगाई जा सकती।

व्यावसायिकता: अच्छे छात्र व्यक्तिगत रूप से संगठनात्मक कौशल और अनुकरणीय संचार कौशल के अलावा प्रत्येक दिन के लिए तैयारियों के लिए अलग-अलग तरीकों से शिक्षकों का अनुकरण करते हैं। महान शिक्षक को उसके पेशेवर तरीके के कारण जो सम्मान मिलता है, वह उसके आसपास के लोगों के लिए स्पष्ट है। रोल मॉडलिंग शिक्षण का एक रचनात्मक तरीका है।

**आपसी महानता का एक संबंध**

अंततः, छात्रों और शिक्षकों की महानता परस्पर जुड़ी हुई है। महान छात्र अपने शिक्षकों, और महान शिक्षकों को, बदले में, छात्रों को नेताओं, विचारकों और चेंजमेकर्स में आकार देते हैं। शिक्षा सबसे शक्तिशाली है जब दोनों पक्ष जुनून, सम्मान और विकास के लिए एक साझा प्रतिबद्धता के साथ योगदान करते हैं।

निष्कर्ष: एक शिक्षक ज्ञान का दीपक जला सकता है, लेकिन यह छात्र की जिज्ञासा और समर्पण है जो इसे उज्ज्वल बनाए रखता है। यही कारण है कि हम कहते हैं: महान छात्र महान शिक्षक बनाते हैं।

*सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार*
*प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर*
*पंजाब - 152107*

# उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वनों की कटाई से हर साल 28,000 से अधिक मौतें !

वन जीवन का मुख्य आधार व प्रकृति का खज़ाना हैं।जंगल केवल कार्बन स्टोर नहीं बल्कि जीवन रक्षक ढाल भी हैं—छाया, वाष्पन-शीतलन और ताप नियंत्रण के माध्यम से यह आसपास के समुदायों को बचाने में अहम भूमिका निभाते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि मानव जीवन, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था – तीनों को ही जंगलों से सीधा लाभ मिलता है। वास्तव में जंगल वे प्राकृतिक संसाधन हैं, जिनसे हमें लकड़ी – घर, फर्नीचर, कागज, औज़ार, नाव, पुल आदि के लिए, ईंधन – लकड़ी, कोयला, वन उपज जैसे कि– गोंद, रेज़िन, रबर, बांस, गन्ना, बेंत, पत्ते (पत्तल/दोने),खाद्य पदार्थ – फल, जामुन, शहद, मशरूम, जड़ी-बूटियाँ, बीज, मेवे और विभिन्न औषधियाँ जैसे आयुर्वेद और आधुनिक दवाओं के लिए जड़ी-बूटियाँ, जैसे नीम, तुलसी, अरंडी, सतावर आदि प्राप्त होते हैं। इतना ही नहीं, ऑक्सीजन उत्पादन,कार्बन अवशोषण, जल व मृदा संरक्षण के साथ ही साथ ये जंगल ही हैं,जो बारिश लाने में सहायक होते हैं तथा धरती के तापमान को भी नियंत्रित रखते हैं। जैव-विविधता को बनाए रखने में जंगलों का स्थान महत्वपूर्ण और अहम्है, लेकिन बहुत ही दुखद है कि आज वनों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है और वनों की कटाई मनुष्य के लिए बहुत ही घातक सिद्ध हो रही है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज जंगल सिकुड़ते चले जा रहे हैं और उनकी जगह शहरीकरण व खनन ले रहे हैं।कहीं हिमखंड और ग्लेशियर पिघल रहे हैं, तो इससे समुद्र का स्तर लगातार बढ़ रहा है। हालांकि, कुछ जगहों पर हरित आवरण (ग्रीन कवर) बढ़ा भी है, खासकर उन देशों में जहाँ वृक्षारोपण और संरक्षण अभियानों को बल मिला है, लेकिन यह भी एक कड़वा सच है कि आज नदियों के स्वरूप और तटीय इलाकों में भी बड़े बदलाव दिखे हैं, कई स्थानों पर नदी का रुख बदल चुका है या किनारे कटकर बह गए हैं। शहरों का फैलाव तो आज बहुत स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जो पर्यावरण पर सीधा असर डालता है। इस क्रम में हाल ही में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वनों की कटाई से हर साल लगभग 28,000 से 28,330 अतिरिक्त मौतें होती हैं, जो मुख्यतः उष्माघात (हीट-रिलेटेड इल्नेस) के कारण होती हैं। गौरतलब है कि यह अध्ययन भारत, ब्राजील और इंडोनेशिया समेत 15 देशों में किया गया है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि अध्ययन में उष्णकटिबंधीय वनों की कटाई (साल 2001–2020 तक) और स्थानीय तापमान में वृद्धि, साथ ही उससे जुड़ी मौतों का अनुमान शामिल है तथा यह शोध 'नेचर क्लाइमेट चेंज' पत्रिका में हाल ही में प्रकाशित हुआ है। जानकारी के अनुसार कुल लगभग 345 मिलियन लोग वनों की कटाई से उत्पन्न स्थानीय गर्मी के संपर्क में आए तथा इनमें से लगभग 2.6 मिलियन लोग ऐसे थे जिन्हें +3 °C या उससे अधिक की तापमान वृद्धि का सामना करना पड़ा।परिणामस्वरूप, सालाना अनुमानित 28,330 मौतें हुईं। उल्लेखनीय है कि दक्षिण-पूर्व एशिया में सबसे अधिक मौतें (₹15,680 सालाना) हुईं, इसके बाद दक्षिणी ऊष्णकटिबंधीय अफ्रीका और मध्य/दक्षिण अमेरिका में मौतें हुईं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इस शोध में व्यापक क्षेत्रीय गर्मी और अन्य स्वास्थ्य प्रभावों को इसमें शामिल नहीं किया गया है। कितनी बड़ी बात है कि दो दशकों में अंधाधुंध जंगल काटे गए हैं। रिपोर्ट बताती है कि, दक्षिणी अमेजन क्षेत्र, इंडोनेशिया के सुमात्रा और कालीमंतन में सबसे अधिक तापमान वृद्धि के कारण वनों का सबसे अधिक नुकसान हुआ। दो दशक में उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में 1.6 मिलियन वर्ग किमी वनक्षेत्र (10% से अधिक) नष्ट हो गया। इन क्षेत्रों में 3.5 अरब से ज्यादा लोग रहते हैं, जिनमें से लगभग 45.2 करोड़ (या 13 प्रतिशत) ऐसे क्षेत्रों में रहते हैं, जहां दो दशकों के दौरान अंधाधुंध वनों की कटाई हुई। इस वजह से लगभग 34.5 करोड़ लोग वनों की कटाई से प्रेरित गर्मी के संपर्क में आए।वैज्ञानिकों ने उष्णकटिबंधीय मध्य और दक्षिण अमेरिका में वार्षिक औसत तापमान वृद्धि 0.34 डिग्री, अफ्रीका में 0.10 डिग्री और दक्षिण एशिया में सबसे अधिक 0.72 डिग्री दर्ज किया है। अंत में यही कहूंगा कि वनों की कटाई धरती के पारिस्थितिक संतुलन को बिगाड़ती है, और अगर इसे रोका न गया तो भविष्य की पीढ़ियों के लिए जीवन कठिन हो जाएगा। अतः हमें यह चाहिए कि हम वनों को बचाएं,इनका संरक्षण करें।

**सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।**

# श्री आईजी क्षत्रिय सीरवी विकास सेवा समिति ने शिक्षा के क्षेत्र में एक लाख चालीस हजार रुपए का दिया सहयोग

**तेलंगाना** हैदराबाद श्री आईजी क्षत्रिय सीरवी विकास सेवा समिति ने शिक्षा प्रेमी दानदाताओं अमुल्य सहयोग से पांच परिवारों को शिक्षा के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। समिति ने बिलाड़ा में 21 हजार व दुसरे परिवार बुसी गांव में नारी शक्ति को 51 हजार तथा तीसरे परिवार आगेवा गांव में 35 हजार एवं चौथे परिवार नाडोल में 11 हजार और पांचवा परिवार बाली से बिलाड़ा में अध्यनरत परिवार को 21 हजार कि सहयोग दिया। कुल एक लाख चालीस हजार रुपये का सहयोग दिया है। समिति के पूर्व अध्यक्ष सुजाराम गेहलोत ने बताया कि यह सहयोग जरुरतमंद छात्रों को अपनी शिक्षा पूरी करने में मदद करेगा। गेहलोत ने बताया कि समिति की स्थापना 2017 में की गई थी। जब से लगाकर अब तक समिति 90 लाख से अधिक राशि जरुरतमंद शिक्षा के क्षेत्र में दिया गया है। जिसमें दो एम्बुलेंस कोरान काल में दी गई वो भी सामिल है। पूर्व अध्यक्ष व वर्तमान वरिष्ठ सलाहकार सुजाराम गेहलोत ने कहा कि श्री आईजी क्षत्रिय सीरवी विकास सेवा समिति शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही है। समिति का उद्देश्य है कि कोई भी समाज का विद्यार्थी शिक्षा से वंचित न रहे। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए समिति भामाशाहों की मदद से जरुरतमंद विद्यार्थियों को आर्थिक सहयोग प्रदान कर रही है। समिति ने 2017 से 2025 तक समाज के दानदाताओं के सहयोग से समाज के तिन सौ परिवारों को लाभान्वित किया गया कोराना काल में मानवीय सेवा के लिए दो एम्बुलेंस जो एक सोजत रोड व दुसरी जैतारण में सेवाएं दे रही है। समिति के संरक्षक रामलाल सैणचा गांधीधाम, व बाबुलाल हैदराबाद, इन्दरलाल सोलंकी बैंगलोर, संस्थापक गुदडराम काग व भीमाराम सोलंकी पुना समिति के अध्यक्ष भेराराम हाम्बड बेलकवाड़ी, महासचिव जगदीश सोलंकी, कोषाध्यक्ष करमाराम परिहार मैसूर, सचिव भगवान राठौड़ वर्तमान संचालन कर रहे है।

# नसिया जी में पारस प्रभु की प्रतिमा पर हुआ अतिशय द्वारा जलाअभिषेक का चमत्कार

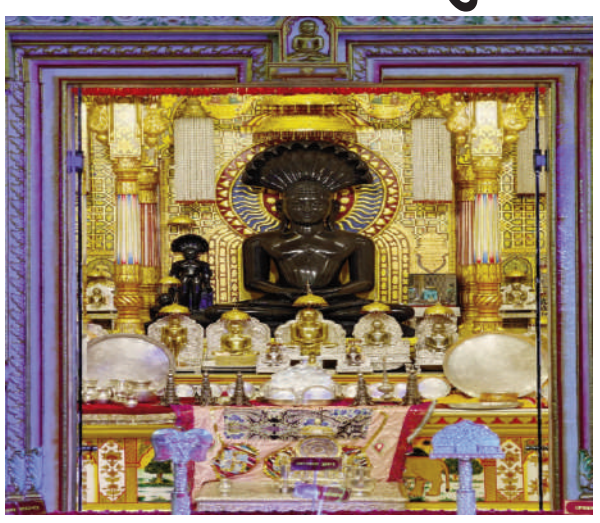

परिवहन विशेष न्यूज

इन्दौर में धूप दशमी के पावन पर्व की संध्या में करीब 7-30 बजे बाद श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर जबरी बाग़ नसिया जी इन्दौर में देवों के द्वारा नसिया मंदिर के मूल नायक चिंतामणि प्रभु श्री पारसनाथ भगवान के अतिशय द्वारा जलाअभिषेक देखा गया। जिसे देर रात तक समस्त इन्दौर के भक्तों ने देखा। इस विषय में नसिया समाज के प्रकाश चन्द्र शास्त्री व महेंद्र कुमार जैन ने बताया कि यहां मंदिर बहुत चमत्कारी व मनोकामना पूर्ण करने वाला है। यहां शहर का सबसे प्राचीनतम दिगंबर जैन जिनालय है जो लगभग 118 साल पुराना बताया जा रहा है। जिसकी स्थापना सर सेठ हुकुमचंद जी ने की थी। वहीं विभिन्न भक्तों ने जिन्होंने यहां पारस बाबा का स्वयं अभिषेक होते हुए देखा, उसमें तिलक नगर के निलय जैन ने बताया कि मैं बचपन से इस मंदिर जी में आता हूं पर आज जो चमत्कार देखा मानों कोई आलोकित व दिव्य शक्ति है जो प्रभु का अभिषेक कर रही है। वहीं एडवोकेट धर्मेन्द्र जैन जिनकी तीसरी पीढ़ी इस नसिया जी के मंदिर से जुड़ी हुई है वह कहते हैं कि बचपन में हमें इसी प्रंगाण में पाठशाला में गुलाब बाई जी ने पढ़ाया था। कभी कभी ऐसा अतिशय पुण्य कर्मों के उदय से देखने को मिलते हैं जब आकाश मार्ग से देवगण भगवान का अभिषेक करते हैं। वहीं विशाल जैन सियागंज वालों ने बताया कि इस मंदिर का जीर्णोद्धार समाधिस्थ संत ऐलक श्री निशंक सागर जी ने कराया था उसके बाद निरंतर यहां की कीर्ति हमेशा इसी तरह बनी रही । वहीं आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज दो बार आये वहीं सभी जैन संत जो शहर में आते हैं वह इस अतिशय कारी मंदिर जी में दर्शन करने जरूर आते हैं। नसिया समाज के महेंद्र कुमार जैन, राजेश कुमार जैन, दीपक जैन, सचिन जैन उज्वल जैन ने संयुक्त रूप से बताया शाम से देर रात तक यहां दिव्य अभिषेक में जलधारा की बूंदों को देखने बहुत दूर दूर से जो भक्तजन आयें। जो एक बार दर्शन करके धूप चढ़ा कर चले गए थे, वहां दोबारा नसिया जी के मंदिर में चमत्कार देखने देर-रात तक आते रहे, मंदिर जी में जनसैलाब उमड़ा रहा था। यहां जानकारी मिडिया प्रभारी व स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान ने प्रेस विज्ञप्ति में दी है।

# 35वें राज्य फिल्म पुरस्कार-2023 और 36वें राज्य फिल्म पुरस्कार-2024 के लिए आवेदन आमंत्रित

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

**भुवनेश्वर:** ओड़िया भाषा, साहित्य एवं संस्कृति विभाग ने 35वें राज्य फिल्म पुरस्कार-2023 और 36वें राज्य फिल्म पुरस्कार-2024 के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। इच्छुक प्रायोजक आवश्यक दस्तावेजों और फिल्म की सॉफ्ट कॉपी (पेन ड्राइव) के साथ 4 अक्टूबर, 2025 (04.10.2025) तक या उससे पहले पंजीकृत डाक/स्पीड पोस्ट/पार्सल द्वारा विभाग को आवेदन पत्र जमा कर सकते हैं। 35वें राज्य फिल्म पुरस्कार-2023 के लिए भेजी गई फिल्मों को 01.01.2023 और 31.12.2023 के बीच सेंसरशिप प्रमाणपत्र प्राप्त होना चाहिए। इसी प्रकार, 36वें राज्य फिल्म पुरस्कार-2024 के लिए भेजी गई फिल्मों को 01.01.2024 और 31.12.2024 के बीच फिल्म प्रमाणपत्र प्राप्त होना चाहिए। इच्छुक लेखक/लेखिकाएँ ओडिया फिल्मों पर ओडिया/अंग्रेज़ी भाषा में लिखे गए सर्वश्रेष्ठ लेख (पुस्तक/मोनोग्राफ) के लिए पुरस्कार हेतु आवेदन कर सकते हैं और उक्त पुस्तक/मोनोग्राफ की दस प्रतियाँ ओडिया भाषा, साहित्य एवं संस्कृति विभाग को 4.10.2025 तक पंजीकृत डाक/स्पीड पोस्ट/पार्सल के माध्यम से जमा कर सकते हैं। राज्य फिल्म पुरस्कारों से संबंधित विवरण और नियम ओडिया भाषा, साहित्य एवं संस्कृति विभाग की वेबसाइट culture.odisha.gov.in पर उपलब्ध हैं।

# हमारी पार्टी के किसी नेता ने प्रधानमंत्री की मां का अपमान नहीं किया: कांग्रेस

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

**भुबनेश्वर:** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की माँ के खिलाफ़ तीखी टिप्पणियों को लेकर राजनीति जोरों पर है। कांग्रेस ने उपमुख्यमंत्री पार्वती परिदा के कल दिए गए बयान पर पलटवार किया है। कांग्रेस प्रवक्ता सोनाली साहू ने कहा, हमारी पार्टी के किसी भी नेता ने प्रधानमंत्री की माँ का अपमान नहीं किया है।प्रधानमंत्री बिहार चुनाव में सहानुभूति बटोरने की कोशिश कर रहे हैं। राहुल गांधी को उनके बयानों के लिए दोषी ठहराया जा रहा है। नरेंद्र मोदी अपनी मां के साथ राजनीति कर रहे हैं। इससे पहले सोनिया गांधी के खिलाफ गोरी चमड़ी और नाचने जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया था। उस समय कांग्रेस ने पूछा था कि पार्वती परीदा कहां थीं। नरेंद्र मोदी अपनी मां के साथ राजनीति कर रहे हैं। इससे पहले सोनिया गांधी के खिलाफ गोरी चमड़ी और नाचने जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया था। उस समय कांग्रेस ने पूछा था कि पार्वती परीदा कहां थीं। श्रीमती साहू ने कहा कि लोक सेवा भवन में आधिकारिक पीआईए और निमंत्रण के साथ राहुल गांधी की आलोचना करना संविधान की हत्या करने जैसा है। तर्क और विवेक को भूलकर, कंगना रनौत उपमुख्यमंत्री पार्वती परीदा के पीछे हैं। वह कंगना की तरह मोदी के करीब आने की कोशिश कर रही हैं।

# एक शाम वीर तेजाजी महाराज के जागरण सम्पन्न

हैदराबाद वनस्थलीपुरम, अलमासगुड़ा स्थित जाट समाज ट्रस्ट मंदिर भवन में परमेश्वर महादेव मंदिर में वीर तेजाजी महाराज के मंदिर प्रांगण मे भादवा मास के पावन अवसर पर दो दिवसीय वीर तेजाजी महाराज का भव्य जागरण सोमवार 1 सितम्बर एवं मंगलवार 2 सितम्बर पुजा- पुजा-अर्चना व जाट समाज समाज बन्धुओं व भक्तों के सानिध्य मे आयोजित किया गया। जारी प्रेस विज्ञप्ति मे जाट समाज ट्रस्ट मंदिर भवन अलमासगुड़ा के अध्यक्ष दुदाराम बाबल संरक्षक सोहनलाल बागड़ा बाबूलाल पूनिया, कोषाध्यक्ष लिकमाराम खोरखर ने संयुक्तरुप से बताया कि हर वर्ष की भाति भादवा मास की नवमी के पावन अवसर पर वीर तेजाजी महाराज का भव्य जागरण समाज बन्धुओं के सानिध्य मे आयोजित किया गया। वीर तेजाजी महाराज का विशेष श्रृंगारकर, पूजा-अर्चना व आरती के पश्चात पधारे भक्तों एवं समाज बन्धुओं व रात्रि 9.15 बजे ज्योत प्रज्वलितकर एक शाम वीर तेजाजी के नाम जागरण का आयोजन किया गया। सर्व प्रथम गणपति वन्दना के साथ कार्यक्रम का आगाज किया व देर रात तक मरुधरा की भजन गायक किशोर मालवीय ने वीर तेजाजी महाराज भजनों के पुष्प अर्पित किये। जिसमे वीर तेजाजी महाराज के भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। भक्तों ने वीर तेजाजी महाराज अमर रहे के नारे लगाकर नाचते गाते हुए मंदिर प्रांगण को भक्तिमय बना दिया। समाज गणमाव्य पदाधिकारियों का सम्मान किया गया ।समाज बन्धुओं ने मंगलवार 2 सितम्बर दशमी को प्रात: वेला मे पूजा-अर्चना, दर्शन-वंदनकर, श्री तेजाजी महाराज के चरणों मे धूप बती, नारियल एवं पुष्प अर्पितकर खुशहाली की कामना की। प्रात: 11.30 बजे से महाप्रसादी की व्यवस्था की गयी। जिसका जाट समाज बन्धुओं ने सपरिवार लाभ लिया। कार्यक्रम मे जाट समाज ट्रस्ट मंदिर भवन अलमासगुड़ा के समस्त कार्यकारणी सदस्य व समाज बन्धु सपरिवार उपस्थित रहे। मंच का संचालन बाबूलाल पूनिया ने किया। आरती के पश्चात कार्यक्रम का समापन हुआ ।

# यूपी में झारखंड का पुनः एक अपराधी पुलिस मुठभेड़ में घायल, आग्नेयास्त्र जप्त

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

**रांची।** झारखंड से सटे उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले के रेणुकूट स्थित गांधी नगर रेलवे मार्केट स्टेशन वार्ड नंबर एक से छह वर्ष की बच्ची के अपहरण के प्रयास में झारखंड के गढ़वा जिला अंतर्गत धुरकी थाना के पुतुर गांव निवासी जगदीश बैठा का 29 वर्षीय पुत्र चंद्रेश कुमार बैठा, पुलिस के साथ मुठभेड़ में गोली लगने से घायल हो गया।

चंद्रेश बैठा सोनभद्र रेणुकूट स्थित गांधी नगर रेलवे मार्केट में 6 साल की बच्ची खुशी कुमारी का अपहरण की कोशिश की थी. पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी को धुरकी थाना क्षेत्र के पुतुर गांव से पकड़ा. पकडे जाने के बाद आरोपी ने पुलिस टीम पर फायरिंग शुरू कर दी. आत्मरक्षा में पुलिस ने जवाबी कार्रवाई की तो आरोपी को पैर में गोली लगने से घायल हो गया. घायल आरोपी को तत्काल सीएससी म्योरपुर अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसका इलाज चल रहा है. पुलिस ने आरोपी के पास से अवैध तमंचा और कारतूस भी बरामद किया है. बता दें कि एसपी अशोक कुमार मीणा ने आरोपी आरोपी चंद्रेश कुमार बैठा की गिरफ्तारी के लिए 25 हजार रुपये का इनाम घोषित किया था.

बच्ची के चाचा दिनेश मेहता की शिकायत के अनुसार, आरोपी बच्चों को टॉफी-बिस्कुट बांट रहा था और अपहरण की कोशिश की. स्थानीय लोगों ने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह भाग निकला.

मामले की जानकारी देते हुए पिपरी क्षेत्राधिकारी अमित कुमार ने हुए बताया कि 31 अगस्त को पिपरी थाना क्षेत्र में छह साल की बच्ची को टॉफी दिलाने के बहाने अगवा कर लिया गया था. इस मामले में चंद्रेश कुमार बैठा पुत्र जगदीश बैठा निवासी ग्राम पुतुर, थाना धुरकी, जिला गढ़वा (झारखंड) को नामजद आरोपी बनाया गया था. घटना के बाद से वह फरार चल रहा था. एसपी अशोक कुमार मीणा के निर्देश पर आरोपी की गिरफ्तारी के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे थे, और उसके बारे में सूचना देने पर 25 हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया था.

मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने सोमवार रात धौकी नाला के पास घेराबंदी की. खुद को घिरा पाकर आरोपी ने पुलिस टीम पर फायरिंग शुरू कर दी. आत्मरक्षा में पुलिस ने जवाबी कार्रवाई की तो आरोपी गोली लगने से घायल हो गया. घायल आरोपी को तत्काल सीएससी म्योरपुर अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसका इलाज चल रहा है. बताते चलें कि इससे पहले बीते महीने यूपी पुलिस ने धनबाद के अपराधी आशीष रंजन सिंह को मुठभेड़ में मार गिराया था.

## भाजपा का मंत्रिमंडल विस्तार पर लॉबिंग और दबाव

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

**भुबनेश्वर: राज्य** में भाजपा सरकार के 15 महीने बीत जाने के बाद भी पूर्ण मंत्रिमंडल के गठन पर अभी तक कोई फैसला नहीं हो पाया है। मंत्रिमंडल को लेकर शीर्ष नेतृत्व स्तर पर बार-बार कोशिशों के बावजूद, विभिन्न कारणों से यह संभव नहीं हो पाया है। इस बीच, पार्टी के दो दर्जन नेता छह रिक्त मंत्री पदों के लिए दावेदारी का इंतजार कर रहे हैं इसी तरह, मंत्रिमंडल में शामिल कुछ मौजूदा मंत्रियों को भी हटाने की योजना बनाई जा रही है, लेकिन लॉबिंग और दबाव के चलते यह संभव नहीं हो पा रहा है।

हाल ही में पार्टी के वरिष्ठ विधायक जय नारायण मिश्रा ने मंत्रिमंडल को लेकर कई ऐसी अभद्र टिप्पणियाँ की हैं जो पार्टी को दुविधा में डाल सकती हैं, और मंगलवार को भी उन्होंने यही दोहराया। जय नारायण ही नहीं, विधायक प्रकाश सोरेन ने भी मंत्रिमंडल में वरिष्ठ मंत्री को जगह देने की माँग रखी है। जय नारायण ने कहा कि विस्तार पर चर्चा होती रहती है। चूँकि मंत्रिमंडल खाली है, इसलिए चर्चा होना स्वाभाविक है। विस्तार का फैसला मुख्यमंत्री की ज़िम्मेदारी है। वह जब चाहेंगे, इसे पूरा करेंगे। वह अकेले भी मंत्रिमंडल चला सकते हैं। मैं पार्टी का एक छोटा कार्यकर्ता हूँ, मुझे ज़मीनी स्तर का काम आता है; मुझे ऊँची बातों की जानकारी नहीं है। राजनीति में वरिष्ठ अनुभव का कोई महत्व नहीं है। ईमानदारी से काम करना और पार्टी के लिए केस लड़ना बेकार है। इन सब बातों का कोई मतलब नहीं है। कौन जाने सरकार मेरे लिए आई है या किसके लिए? जनता ही फैसला करेगी। लेकिन कई लोग कह रहे हैं कि हम स्वीकार करते हैं कि सरकार उनके लिए आई है, "जय नारायण ने कहा। इसी तरह, पार्टी के विधायकों में से एक प्रकाश सोरेन ने भी कहा कि वरिष्ठों को मंत्री बनना चाहिए। वरिष्ठ और अनुभवी विधायकों को मंत्री बनना चाहिए। मैं ठमेश मंत्री बनने के लिए उत्सुक हूं। मुझे जो भी विभाग दिया जाएगा, मैं उसका प्रभार लेने के लिए तैयार हूं। जय नारायण मिश्रा पहले मंत्री थे, पार्टी के एक वरिष्ठ नेता। इसलिए, उन्हें मंत्री बनना चाहिए, श्री सोरेन ने कहा। जबकि मुख्यमंत्री मंत्रिमंडल के विस्तार पर कोई ठोस निर्णय लेने में असमर्थ हैं, एक वरिष्ठ विधायक का ऐसा बयान उनके लिए एक अजीब स्थिति पैदा कर रहा है। विभिन्न समीकरणों को ध्यान में रखते हुए, निश्चित रूप से मुख्यमंत्री के लिए एक पूर्ण मंत्रालय बनाना एक चुनौती होगी जो सभी कॉकस को खुश करे, राजनीतिक टिप्पणीकारों ने राय दी।

# मयंक सिंह का बडा खुलासा हथियार खरीद हेतु पाकिस्तान भेजी गई धनराशि

## ड्रोन के जरिए पाकिस्तान से पंजाब होते हुए झारखंड लाये जाते थे हथियार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

**रांची**, कुख्यात अमन साव गिरोह के अपराधी सुनील सिंह मीणा उर्फ मयंक सिंह ने छह दिनों तक झारखंड की आतंकवाद निरोधक दस्ता (एटीएस) की रिमांड पर पूछताछ के दौरान कई सनसनीखेज खुलासा किया है. उसने अपने अपराध का पूरा इन्वेस्टमेंट इकोनोमिक्स साझा किया है. करीब 50 लाख रुपये उसने हथियार आपूर्ति के एवज में पाकिस्तान को भुगतान किया था. लेवी-रंगदारी में उसने करोड़ों रुपये की उगाही की. हवाला व वेस्टर्न यूनियन मनी ट्रांसफर के सहारे करोड़ों रुपये का ट्रांजेक्शन हुआ है. अब एटीएस मयंक सिंह से जुड़े बैंक खातों का भी विश्लेषण कर रही है. एटीएस को मयंक सिंह के करीब दस सहयोगियों की जानकारी मिली है, जिनकी भविष्य में गिरफ्तारी हो सकती है.

इन सहयोगियों में झारखंड के भी तीन सहयोगी हैं, जो मयंक के निर्देश पर लेवी-रंगदारी के रुपये वसूलते थे और मयंक तक पहुंचाते थे. एटीएस पंजाब के उस स्थल का भी सत्यापन करेगी, जहां मयंक सिंह ने पाकिस्तान से ड्रोन से हथियार आने की जानकारी दी है. पंजाब से हथियार रेलमार्ग व सड़क मार्ग से झारखंड पहुंचता था

इन सभी बिंदुओं पर एटीएस अब साक्ष्य जुटाएगी, ताकि मयंक सिंह पर चार्जशीट के दौरान पुख्ता साक्ष्य पेश किया जा सके. झारखंड के कुख्यात अमन साव गिरोह व उससे संबद्ध गुर्गे सुनील सिंह मीणा उर्फ मयंक सिंह के पाकिस्तानी कनेक्शन की पुष्टि के बाद राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआइए) भी सतर्क है. एटीएस में मयंक सिंह की स्वीकारोक्ति के बाद अब एनआइए की भी इस केस पर नजर है.

मयंक सिंह ने पाकिस्तान से ड्रोन से पंजाब में हथियार आने व वहां से सड़क या रेल मार्ग से हथियार झारखंड पहुंचाए जाने, विदेश में बैठकर झारखंड सहित विभिन्न राज्यों में आतंकी गतिविधियां संचालित करने, लेवी-रंगदारी की वसूली आदि यूएपी अधिनियम के तहत आता।

# झारखंड मंत्रिपरिषद बैठक में 67 प्रस्तावों को स्वीकृति प्रदान की गयी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

**रांची**, झारखंड केबिनेट की महत्वपूर्ण बैठक रांची में हुई ।जिसमें विस्थापन एवं पुनर्वास आयोग के गठन को लेकर प्रारूप को स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। आयोग में एक अध्यक्ष, दो सदस्य और तीन आमंत्रित सदस्य होंगे।

सभी का कार्यकाल तीन वर्षों का होगा। आयोग के गठन को लेकर बनी नियमावली के अनुसार इसका मुख्य काम विस्थापित परिवारों का सामाजिक आर्थिक अध्ययन कराना होगा।

इस अध्ययन के अनुरूप सामाजिक रूप से पिछड़े परिवारों के पुनर्वास को लेकर आयोग योजनाएं बनाएगा।

मंगलवार को राज्य कैबिनेट की बैठक में आयोग के गठन के साथ-साथ कुल 67 प्रस्तावों को स्वीकृति प्रदान कर दी गई।

विधानसभा में की गई घोषणा के अनुरूप मंगलवार को राज्य कैबिनेट की बैठक में विस्थापन और पुनर्वास आयोग के गठन को ले इसके लिए बनी नियमावली के प्रारूप को स्वीकृति प्रदान कर दी गई। प्रारूप के अनुसार आयोग में एक अध्यक्ष, दो सदस्य एवं तीन आमंत्रित सदस्य हो सकते हैं। अध्यक्ष का मनोनयन राज्य सरकार करेगी और इसके लिए सामुदायिक विकास कार्यक्रमों अथवा विस्थापन एवं पुनर्वास क्षेत्र में न्यूनतम दस वर्षों का कार्य अनुभव होना अनिवार्य है।

इनके अलावा प्रशासनिक अनुभव रखने वाले अधिकारी को सदस्य बनाया जाएगा, जो संयुक्त सचिव से ऊपर के पदों का कार्य अनुभव रखता होगा। इसके साथ ही सेवानिवृत्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश अथवा 40 वर्ष से अधिक उम्र के अधिवक्ता को सदस्य बनाया जा सकेगा। आमंत्रित सदस्यों में स्थानीय पुरुष अथवा महिला शामिल होंगे।

इनका पद अवैतनिक होगा। सरकार उप सचिव से वरीय पदों पर काम करने का अनुभव रखने वाले किसी सरकारी अधिकारी को सदस्य सचिव के तौर पर मनोनीत करेगी।

सभी का कार्यकाल तीन वर्षों का होगा और इन्हें अपना पद त्यागने अथवा इस्तीफा देने के लिए एक माह पूर्व सरकार को सूचित करना होगा। आयोग पर राजस्व, निबंधन एवं भूमि सुधार विभाग का पूर्ण प्रशासनिक नियंत्रण होगा।

**शिबू की व्यक्तिगत इस्तेमाल की चीजें संरक्षित करना जरूरी**

रांची में मोरहाबादी मैदान के निकट स्थित पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन का आवास उनकी पत्नी रूपी सोरेन के नाम पर आवंटित होगा।नगर विकास विभाग के मंत्री सुदिव्य कुमार ने इससे संबंधित प्रस्ताव कैबिनेट में पेश किया जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान कर दी गई।कहा गया कि इस आवास के कोने-कोने में शिबू सोरेन की यादें बसी हुई हैं। उनके व्यक्तिगत इस्तेमाल की चीजें भी आवास में मौजूद हैं जिनका संरक्षण और देखरेख जरूरी है। भवन निर्माण एवं आवास विभाग को इसके लिए प्रक्रिया पूरी करने का निर्देश दिया गया है।

झारखंड मुख्यमंत्री मंइयां सम्मान योजना के क्रियान्वयन में आवेदन के समय आवेदिका का लाइव फोटो लेने की अनिवार्यता को क्षांत करने की घटनोत्तर स्वीकृति दी गई।झारखंड राज्य ललित कला अकादमी के गठन को स्वीकृति प्रदान की गई। इसका उद्देश्य ललित कला और अनुप्रयुक्त कलाओं के क्षेत्र में सक्रिय रूप से काम करने के माध्यम से राज्य की सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देना है।झारखंड प्रयुक्त विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के बीच साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देने और इनके समग्र विकास के लिए झारखंड राज्य साहित्य अकादमी के गठन की स्वीकृति दी गई। झारखंड में संगीत नाटक और अनुप्रयुक्त कलाओं के क्षेत्र में सक्रिय रूप से काम करने और गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए झारखंड राज्य संगीत नाटक अकादमी के गठन की स्वीकृति दी गई।झारखंड निशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार (द्वितीय संशोधन) नियमावली, 2025 की स्वीकृति दी गई। चालू वित्तीय वर्ष 2025-26 में विधि व्यवस्था संधारण के लिए जिलों से प्राप्त अधियाचना के आलोक में झारखंड आकस्मिकता निधि से जिलों को कुल 20 करोड़ रुपये अग्रिम के रूप में देने को स्वीकृति मिली। झारखंड में केंद्र सरकार द्वारा लिए गए फैसले के अनुरूप जनगणना कराया जाएगा। डा. फरहाना, स्त्री रोग विशेषज्ञ, सदर अस्पताल, गिरिडीह, डा. भावना, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मरकच्चो की चिकित्सा पदाधिकारी, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र टुंडी की डा. ज्योति कुमारी, चंदनक्यारी की डा. रिंकू कुमारी सिंह एवं सदर अस्पताल, साहेबगंज के डा. इंदनाथ प्रसाद को सेवा से बर्खास्त करने की स्वीकृति दी गई।

झारखंड में डिजीज्ड डोनर आर्गेन एवं टिसू ट्रांसप्लांटेशन के लिए दिशानिर्देश जारी किया गया। पुनासी जलाशय योजना के लिये 1851.6 करोड़ के तृतीय पुनरीक्षित प्राक्कलन की प्रशासनिक स्वीकृति दी गई। विदेशों में किसी कारण से जान गंवानेवाले श्रमिकों का पार्थिव शरीर को वापस घर लाने के लिए मुख्यमंत्री झारखंड अंतरराष्ट्रीय प्रवासी श्रमिक अनुदान एंव सहायता कोष के गठन के प्रस्ताव पर स्वीकृति दी गई ।देवघर के सत्संगनगर-भिरखीबाद पथ जसीडीह-वैद्यनाथधाम स्टेशन के बीच ओवरब्रिज निर्माण कार्य के लिए 40.63 करोड़ रुपये रेल मंत्रालय को उपलब्ध कराने की स्वीकृति दी गई। झारखंड कोचिंग सेंटर कंट्रोल बिल को घटनोत्तर स्वीकृति प्रदान की गई।

# कस्टमर भगवान है, पर भगवान भी रिटर्न पॉलिसी पूछते हैं!

संजय अग्रवाला, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल

बचपन से हम सुनते आए हैं कि ग्राहक भगवान होता है। दुकानदार हो या बड़ी कंपनी, हर कोई यही नारा लगाता है कि उनके लिए ग्राहक सबसे ऊपर है। लेकिन जैसे-जैसे जमाना डिजिटल हुआ, भगवान बनने वाले ग्राहकों की हालत भी थोड़ी अजीब सी हो गई है। अब ग्राहक भगवान तो है, लेकिन ऐसा भगवान जो हर चीज़ पर सवाल करता है, ऑफर पर शक करता है और सबसे ज्यादा तो रिटर्न पॉलिसी पूछता है। मार्केटिंग की दुनिया में ग्राहक को खुश करना सबसे बड़ा धर्म माना जाता है। कंपनी वाले कहते हैं कि हम आपके लिए चाँद-तारे तोड़ लाएँगे, बस एक बार हमारा प्रोडक्ट खरीद लो। लेकिन जब वही प्रोडक्ट घर पहुँचता है और ग्राहक को लगता है कि इसमें तो वैसा दम ही नहीं है जैसा ऐड में दिखाया गया था, तब उसका भगवान वाला अवतार 'कंज्यूमर कोर्ट' की ओर बढ़ जाता है। यही कारण है कि आज की मार्केटिंग में रिटर्न और रिफंड की पॉलिसी सबसे महत्वपूर्ण पूजा-पाठ बन गई है।

पुराने जमाने में दुकानदार और ग्राहक का रिश्ता बिल्कुल परिवार जैसा हुआ करता था। मोहल्ले की किराने की दुकान पर ग्राहक कभी दूध में पानी मिलाने पर भी ज्यादा शोर नहीं मचाता था, क्योंकि विश्वास था। लेकिन अब जमाना बदल गया है। आज ग्राहक मोबाइल निकालकर तुरंत प्रोडक्ट की तुलना कर लेता है, ऑनलाइन रिव्यू पढ़ लेता है और अगर थोड़ा भी शक हुआ तो तुरंत कह देता है... "भैया, मुझे यह पसंद नहीं आया, मैं इसे वापस करना चाहता हूँ।" दुकानदार बेचारा सोचे कि आखिर भगवान भी अगर प्रसाद लौटा दे तो वह पुजारी क्या करेगा?

ई-कॉमर्स के इस युग में तो रिटर्न पॉलिसी ने ग्राहक की शक्ति को और बढ़ा दिया है। अब भगवान केवल दुकानों में नहीं, बल्कि अमेज़न और फ्लिपकार्ट की वेबसाइट पर भी बैठा है। पहले भगवान को प्रसाद चढ़ाना पड़ता था, अब भगवान खुद प्रसाद मंगाता है और फिर नापसंद हुआ तो बिना सोचे-समझे वापस कर देता है। हालत यह हो गई है कि कंपनियों को हर प्रोडक्ट पर मोटे अक्षरों में लिखना पड़ता है... "7 दिन की आसान रिटर्न पॉलिसी" या "नो क्वेश्चन आस्क्ड रिटर्न।" यानी भगवान जो भी निर्णय लें, सवाल नहीं किया जाएगा।

ग्राहक की इस बढ़ती ताकत ने मार्केटिंग मैनेजरों की नींदें उड़ा दी हैं। उनके सामने सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर कैसे इस भगवान को खुश रखा जाए। पहले तो केवल अच्छे विज्ञापन और सुंदर पैकेजिंग से काम चल जाता था, लेकिन अब ग्राहक इतना होशियार हो गया है कि ऐड देखने के बाद भी वह रिव्यू पढ़ता है, दोस्तों से पूछता है और फिर भी संतुष्ट न हुआ तो ऑर्डर कैंसिल कर देता है। भगवान अब पूरा रिसर्च स्कॉलर बन चुका है।

इस पूरे खेल में कंपनियाँ भी कम चालाक नहीं हैं। वे जानते हैं कि भगवान को खुश रखने के लिए केवल पूजा नहीं, बल्कि मनौती भी चढ़ानी पड़ेगी। इसलिए वे बार-बार कहते हैं कि "Customer is our Priority", "We value our customers" और "Your happiness is our reward." लेकिन सच्चाई यह है कि अगर ग्राहक जरा सी नाराज़गी दिखा दे तो वही कंपनी उसकी कॉल रिसीव करने में सौ बहाने लगाने लगती है। भगवान को खुश रखने का नाटक चलता रहता है, लेकिन अंदर ही अंदर हर कंपनी सोचती है कि इस भगवान से बचने का भी कोई उपाय निकले।

आजकल तो ग्राहकों ने भी कंपनियों को खूब सबक सिखाना शुरू कर दिया है। कई बार तो लोग केवल सेल का फायदा उठाने के लिए सामान खरीदते हैं और फिर आराम से रिटर्न कर देते हैं। कंपनियों के लिए यह स्थिति बेहद चुनौतीपूर्ण हो गई है। वे न तो रिटर्न पॉलिसी खत्म कर सकती हैं, न ही ग्राहक को नाराज़ कर सकती हैं। आखिर भगवान की नाराज़गी का मतलब है सोशल मीडिया पर खराब रिव्यू और फिर ब्रांड की बदनामी।

सोशल मीडिया ने तो इस भगवान को और भी शक्तिशाली बना दिया है। पहले अगर ग्राहक नाराज़ होता था तो वह दुकानदार को ही डाँटकर शांत हो जाता था। अब अगर ग्राहक को गुस्सा आया तो वह ट्विटर, फेसबुक और इंस्टाग्राम पर पोस्ट डाल देता है और देखते ही देखते लाखों लोग उस कंपनी के खिलाफ नारे लगाने लगते हैं। यानी भगवान अब केवल अकेला भक्त नहीं, बल्कि ट्रेंडिंग टॉपिक भी बन सकता है। कंपनियाँ डरती हैं कि कहीं उनके खिलाफ #Boycott हैशटैग न चल पड़े। इसलिए वे भगवान को खुश करने के लिए हर संभव प्रयास करती हैं।

ग्राहक का यह भगवान रूप भले ही कंपनियों को परेशान करता हो, लेकिन सच तो यह है कि इसी कारण मार्केटिंग मैनेजमेंट में सुधार भी हुआ है। अगर ग्राहक सवाल न पूछे, रिटर्न की मांग न करे और अपनी राय न दे तो कंपनियाँ कभी अपनी सर्विस और प्रोडक्ट की क्वालिटी सुधारने की जरूरत ही महसूस न करें। भगवान का यह 'ट्रांसपरेंट अवतार' ही मार्केटिंग को सही दिशा में ले जा रहा है। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि भगवान होना भी आसान काम नहीं है। ग्राहक को हर बार डिस्काउंट चाहिए, हर बार ऑफर चाहिए और साथ ही क्वालिटी भी चाहिए। भगवान को अगर पाँच रुपये का भी नुकसान हो जाए तो उसका क्रोध असीमित हो जाता है। कंपनियाँ इसीलिए बार-बार सेल लगाती हैं, कैशबैक ऑफर देती हैं और वॉलेट में पैसे डालकर भगवान की नाराज़गी शांत करती हैं।

कह सकते हैं कि आज का मार्केटिंग मैनेजमेंट ग्राहक की आरती उतारते-उतारते ही चलता है। हर कंपनी यह मान चुकी है कि ग्राहक भगवान है, लेकिन अब वे यह भी समझ गई हैं कि यह भगवान बिना रिटर्न पॉलिसी के नहीं माना करता। इस भगवान को खुश रखने के लिए प्रसाद से ज्यादा जरूरी है "कस्टमर केयर नंबर" हमेशा एक्टिव रखना। इसलिए अगली बार जब कोई कंपनी कहे कि "Customer is God", तो आप भी मुस्कुराकर सोचिएगा.... हाँ, भगवान हूँ, लेकिन भगवान भी अगर प्रोडक्ट पसंद न आए तो रिटर्न पॉलिसी ज़रूर पूछते हैं! यही आज के जमाने का सबसे बड़ा मार्केटिंग मैनेजमेंट का सत्य है।

**[लेखक पिछले 18 वर्षों से वाणिज्य-अर्थशास्त्र के शिक्षक, वित्तीय एवं कर सलाहकार हैं] "खरीद के सामान जब दिल न बहलाए,**

# जमशेदपुर के ज्वैलरी दुकान में चोरों ने दिनदहाड़े फायरिंग कर लूट को अंजाम दिया

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

**जमशेदपुर।** चाईबासा के बैंक आफ बड़ौदा के सामने छीनताई के अभी दो दिन नहीं हुए हैं आज पुनः जमशेदपुर के सोनारी थाने अन्तर्गत डिस्पेंसरी रोड पर स्थित वर्द्धमान ज्वेलर्स में छह हथियारबंद अपराधी क़रीब 12 लाख रुपये के आभूषण लूटकर फरार हो गए. घटना के समय दुकान में कर्मचारी मौजूद थे.

जानकारी के अनुसार, पांच हथियारबंद अपराधी ज्वेलरी शॉप में घुसे और वहां मौजूद कर्मियों को पिस्टल दिखाकर धमकाया. अपराधियों ने उनकी कनपटी पर पिस्टल रखकर दहशत फैलाई. लूट के दौरान अपराधियों ने तीन राउंड फायरिंग भी की, जिससे इलाके में हड़कंप मच गया. लूट को अंजाम देने के बाद सभी अपराधी मौके से फरार हो गए.

इधर घटना की सूचना मिलते ही सोनारी पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी. पुलिस फिलहाल सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है और अपराधियों की तलाश में जुटी है. इस घटना से क्षेत्र के व्यापारियों और आम लोगों में डर का माहौल है.

इधर अभी शाम को मिली जानकारी के अनुसार चोरों ने अपने बाईक को तलाब में फेंक कर फरार हो गये है । पुलिस बाईक निकल कर थाने ले गयी तथा वरीय अधिकारियों ने शीघ्र लूट कांड का उद्वेदन हो जाने की बात कही है।

# प्रकृति के साथ छेड़छाड़ का नतीजा है तबाही।

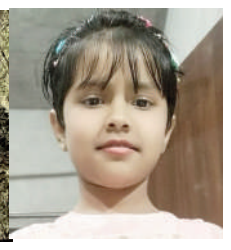

प्रकृति के साथ खिलवाड़ मनुष्य के लिए जीवन-यापन को कठिन और खतरनाक बनाता है, इसलिए प्रकृति का संरक्षण और उसके साथ संतुलन बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे जीवन में नदियां हमारी जीवनदायिनी हैं, एक दिन ऐसा भी आयेगा जब पेयजल समस्या भयावह रूप धारण कर लेगी तब पारिस्थितिक तंत्र भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा। इसके परिणामस्वरूप खाद्य संकट, जल की कमी, बड़े पैमाने पर विस्थापन, और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न होती हैं, जो मानव अस्तित्व के लिए एक गंभीर खतरा पैदा करती हैं।

हैदराबाद के पास कांचा गाचीबोवली के 400 एकड़ जंगल को आईटी पार्क बनाने के लिए काटा गया, जिसे हैदराबाद का लंग्स भी कहा जाता है. मार्च 2025 में इस जंगल की बड़े पैमाने पर कटाई की गई, जिसका छात्रों और पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने कड़ा विरोध किया और पेड़ कटाई पर रोक लगाई।

**प्रकृति के साथ छेड़छाड़ के परिणाम**

**प्राकृतिक आपदाएं:** पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, अत्यधिक बांध निर्माण, और वनों के विनाश से बाढ़, भूस्खलन, बादल फटना, और तूफान जैसी आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता बढ़ जाती है।

**जलवायु परिवर्तन:**

वनों को काटना, प्रदूषण बढ़ाना, और संसाधनों का अत्यधिक दोहन पर्यावरण को असंतुलित करता है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन होता है।

**जैव विविधता का नुकसान:**

पेड़ों और वनस्पतियों की कटाई से कई जीव-जंतुओं और प्रजातियों का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है, और उनकी संख्या में भारी गिरावट आती है।

**संसाधनों की कमी:**

अंधाधुंध औद्योगिक विकास और रासायनिक कृषि के कारण जल, जमीन और हवा दूषित हो जाती है, जिससे पीने योग्य पानी की कमी हो जाती है और मिट्टी की उर्वरता घट जाती है।

**मानव जीवन पर प्रभाव**

स्वास्थ्य पर असर: प्रदूषण और प्राकृतिक असंतुलन के कारण बीमारियों का प्रकोप बढ़ जाता है, जैसा कि डाईक्लोफेनाक के उपयोग के बाद गिद्धों की आबादी में कमी से रेबीज के मामलों में वृद्धि से देखा गया था।

**आर्थिक और सामाजिक प्रभाव:**

प्राकृतिक आपदाएं जान-माल का नुकसान करती हैं, जिससे पुनर्वास और मरम्मत पर भारी खर्च आता है।

**खाद्य संकट:**

वनों की कटाई और मृदा अपरदन से कृषि उत्पादन प्रभावित होता है, जिससे भोजन की कमी हो सकती है।

**विस्थापन और संघर्ष:**

जल या भोजन जैसे संसाधनों की कमी होने पर लोग बड़े पैमाने पर पलायन करते हैं और स्वच्छ पानी के लिए संघर्ष कर सकते हैं।

***प्रियांशी विद्यार्थी कक्षा पांचवी***
***रिद्धनाथ वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय***
***बालक जिला हिसार***

# ट्रैक्टर पर सवार होकर बाढ़ प्रभावित लोगों का हाल जानने पहुंचे डिप्टी कमिश्नर और जिला पुलिस प्रमुख

लोगों के स्वास्थ्य और मकानों के नुक़सान का लिया जायज़ा
ज़िले की 1,17,000 से अधिक आबादी बाढ़ से प्रभावित
अब तक तीन लोगों की मौत

अजनाला, 3 सितम्बर (साहिल बेरी)

रावी नदी की बाढ़ से सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र, विशेषकर रमदास से आगे के गाँवों में रह रहे लोगों का हाल जानने के लिए आज डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी साहनी और जिला पुलिस प्रमुख श्री मनिन्दर सिंह ट्रैक्टर पर सवार होकर पहुँचे। इस दौरान उनके साथ अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्री रोहित गुप्ता, एसडीएम अजनाला श्री रविन्द्र सिंह, श्री खुशहाल सिंह धालीवाल, रेड क्रॉस सचिव श्री सैमसन मसीह तथा राहत कार्यों में जुटे अन्य अधिकारी भी मौजूद थे।

टीम ने नंगे पाँव कई किलोमीटर तक पानी में चलकर अड़ाया, बौली, मौली सहित कई गाँवों और डेरों में जाकर लोगों से मुलाकात की। अधिकारियों ने ग्रामीणों की सेहत की जानकारी ली और उनके घरों, पशुओं तथा खेती-बाड़ी को हुए नुक़सान का जायज़ा लिया।

डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि प्रशासन की टीमें लगातार प्रभावित इलाकों में

मौजूद हैं, जिनमें डॉक्टरों के साथ पशु विशेषज्ञ भी शामिल हैं। उन्होंने विशेष रूप से उन लोगों से अपील की जिनके घरों को अधिक नुक़सान हुआ है कि वे राहत कैंपों में पहुँचे, ताकि किसी प्रकार की जनहानि न हो। उन्होंने यह भी कहा कि कई लोग अपने घरों की सुरक्षा अथवा अन्य आवश्यकताओं के कारण पानी से घिरे होने के बावजूद घर खाली नहीं कर पाए हैं, जिनकी जरूरतों का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए गए हैं।

डिप्टी कमिश्नर ने जानकारी दी कि ज़िले के 140 गाँव बाढ़ से प्रभावित हुए हैं, जिनमें लगभग 1 लाख 17 हज़ार से अधिक की आबादी प्रभावित है। अब तक बाढ़ में 3 लोगों की मौत हो चुकी है। इसके अतिरिक्त 6 पशुओं के मरने, 73 मकानों के ढहने, लगभग 23 हज़ार हेक्टेयर फ़सल नष्ट होने और खेती-बाड़ी की मशीनरी को नुक़सान या बह जाने की रिपोर्टें मिली हैं।

उन्होंने बताया कि बाढ़ प्रभावित इलाकों में 16 राहत कैंप चलाए जा रहे हैं, जहाँ ज़रूरतमंदों को आवश्यक सामग्री और पशुओं के लिए चारा उपलब्ध कराया जा रहा है। साथ ही मेडिकल टीमें इंसानों और पशुओं दोनों का इलाज कर रही हैं।

डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि प्राकृतिक आपदा से होने वाले नुक़सान को रोक पाना संभव नहीं था, लेकिन प्रशासन की पूरी कोशिश है कि किसी भी प्रकार की लापरवाही से आगे और कोई नुक़सान न हो। उन्होंने लोगों से अपील की कि किसी भी संकट की स्थिति में तुरंत जिला हेल्पलाइन नंबर 0183-2229125 पर संपर्क करें, ताकि उन्हें तत्काल सहायता दी जा सके।

# फौज/पैरामिलिट्री फोर्स हेतु पंजाब सरकार की ओर से निःशुल्क फिजिकल और लिखित परीक्षा की ट्रेनिंग सी-पाइट कैंप रणीके, अमृतसर में प्रारंभ

अमृतसर, 3 सितम्बर (साहिल बेरी)

सी-पाइट कैंप रणीके, अमृतसर के अधिकारी ऑनरेरी कैप्टन अजीत सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि जिला अमृतसर और गुरदासपुर के वे युवा, जिन्होंने फौज और पंजाब पुलिस की लिखित परीक्षा पास कर ली है, उनके लिए फिजिकल ट्रेनिंग कैंप रणीके में पूरे जोश और उत्साह के साथ जारी है। बारिश का भी इस प्रशिक्षण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। इच्छुक युवा सी-पाइट कैंप रणीके, अमृतसर में आकर अपनी फिजिकल तैयारी बिना समय गंवाए कर सकते हैं।

इसके साथ-साथ पैरामिलिट्री फोर्सेज जैसे सी.आर.पी.एफ., बी.एस.एफ., आई.टी.बी.पी., सी.आई.एस.एफ., जेल वार्डन तथा अन्य सरकारी विभागों में भर्ती होने के इच्छुक उम्मीदवारों के लिए भी पंजाब सरकार द्वारा कैंप में निःशुल्क फिजिकल टेस्ट और लिखित परीक्षा की तैयारी करवाई जा रही है। कैम्प में शामिल होने के लिए इच्छुक अभ्यर्थियों को आवश्यक दस्तावेजों की फोटोकॉपी, आधार कार्ड, 10वीं अथवा 12वीं कक्षा का प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र और दो पासपोर्ट साइज फोटो साथ लानी होंगी। कैंप अधिकारी ने बताया कि ट्रेनिंग के दौरान युवाओं को पंजाब सरकार की ओर से निःशुल्क भोजन और आवास की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। अधिक जानकारी के लिए इच्छुक युवा मोबाइल नंबर 7009317626 और 9872840492 पर संपर्क कर सकते हैं अथवा सीधे सी-पाइट कैंप आई.टी.आई. रणीके (अमृतसर) पहुँचकर प्रशिक्षण का लाभ उठा सकते हैं।

# भारी बारिश और बाढ़ के बावजूद सप्लाई चेन को निरंतर बनाए रखने में अमृतसर की एडीसीपी ट्रैफिक श्रीमती अमनदीप कौर अग्रणी भूमिका निभा रही हैं

अमृतसर 3 सितम्बर (साहिल बेरी)

पंजाब के किसी भी हिस्से से अमृतसर ज़िले के बाढ़ प्रभावित इलाकों—अजनाला और रमदास बेल्ट—तक राहत सामग्री पहुँचाने के लिए राहत ट्रक और ट्रालियाँ अमृतसर शहर से होकर गुज़रती हैं। अमृतसर, जो कि एक बड़ा और व्यस्त शहर है, यहाँ दिन के समय ट्रैफिक जाम एक बड़ी चुनौती होती है। इस चुनौती को स्वीकारते हुए पुलिस कमिश्नर श्री गुरप्रीत सिंह भुल्लर द्वारा इस ज़िम्मेदारी को एसपी ट्रैफिक अमनदीप कौर को सौंपा गया है।

अमनदीप कौर, जिन्हें लोग पहले से ही "लेडी सिंघम" के नाम से जानते हैं, शहर की ज़रूरतों और समस्याओं को समझते हुए यह सुनिश्चित कर रही हैं कि पंजाब भर से आने वाली राहत सामग्री बिना किसी रुकावट के प्रभावित इलाकों तक समय पर पहुँचे।

लगातार बारिश, टूटी हुई सड़कें और जगह-जगह जाम के बावजूद अमनदीप कौर अपनी ड्यूटी पूरी निष्ठा से निभा रही हैं। वल्ला बाईपास पर निर्माणाधीन पुल, गुमटाला बाईपास और फतेहगढ़ चूरियां चौक पर ट्रैफिक को सुचारू रखना इस समय उनकी सबसे बड़ी चुनौती बनी हुई है।

उल्लेखनीय है कि कुछ दिन पहले अमृतसर पुलिस की ओर से भेजे गए तीन राहत ट्रकों की सामग्री भी अमनदीप कौर के नेतृत्व में पुलिस टीम ने स्वयं प्रभावित गाँव—सुधार और नानौके—में जाकर ज़रूरतमंदों को बाँटी थी।

# पंजाबी गायक पम्मी बाई ने दवाइयाँ और डॉक्टर लेकर पहुँचाए बाढ़ प्रभावितों की मदद

अजनाला, 3 सितम्बर (साहिल बेरी)

अजनाला क्षेत्र बाढ़ की मार झेल रहा है। ऐसे कठिन समय में जहाँ सरकार लगातार राहत कार्यों में जुटी हुई है, वहीं समाजसेवी संस्थाएँ और जानी-मानी हस्तियाँ भी मदद का हाथ बढ़ा रही हैं।

आज प्रसिद्ध पंजाबी गायक पम्मी बाई अपनी टीम के साथ चमियारी और सुधार क्षेत्र में बाढ़ पीड़ितों के लिए आवश्यक दवाइयाँ और महिला डॉक्टर लेकर पहुँचे। इस अवसर पर बातचीत करते हुए पम्मी बाई ने कहा कि मीडिया में खबरें देखकर हर पंजाबी का दिल पिघल गया है। चाहे कोई दुनिया के किसी भी कोने में बैठा हो, वह अपने लोगों की मदद के लिए तत्पर है। उन्होंने बताया कि उनकी आने वाली फिल्म "चक 35" की टीम की ओर से यह राहत सामग्री और डॉक्टर उपलब्ध कराए गए हैं, ताकि खासकर बीमार महिलाओं का उपचार समय पर हो सके।

उन्होंने आगे कहा कि पंजाब गुरुओं की धरती है और हर पंजाबी इस पीड़ा को अपनी पीड़ा समझ रहा है। यह किसी पर उपकार नहीं बल्कि हमारा फर्ज है।

इस मौके पर उपायुक्त श्रीमती साक्षी साहनी ने पम्मी बाई सहित सभी कलाकारों, गायकों और संस्थाओं का धन्यवाद किया जो राहत कार्यों में सहयोग कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रशासन ने 16 स्थानों पर राहत कैंप स्थापित किए हैं, जहाँ मदद पहुँचाई जा रही है और आगे ज़रूरतमंदों तक वितरित की जाएगी।

# भारी बारिश के कारण मजदूरों को रोजगार न मिल पाने पर 100 मजदूर परिवारों को इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन करमजीत सिंह रिंटू द्वारा राशन सामग्री उपलब्ध करवाई

अमृतसर, 3 सितंबर (साहिल बेरी)

इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन करमजीत सिंह रिंटू, सीनियर डिप्टी मेयर प्रियंका शर्मा और रितेश शर्मा द्वारा भारी बारिश के कारण मजदूरों को रोजगार न मिल पाने पर आर्थिक तंगी के चलते 100 मजदूर परिवारों को राशन सामग्री उपलब्ध करवाई गई। करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि भविष्य में भी उनकी हर संभव मदद की जाएगी। उन्होंने कहा कि मजदूरों के परिवारों को किसी भी चीज की कमी नहीं रहने दी जाएगी। उन्होंने कहा कि भारी बारिश के चलते बाढ़ पीड़ित परिवारों को भी हर तरह की सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी। उन्होंने कहा कि अमृतसर नॉर्थ विधानसभा क्षेत्र की आम आदमी पार्टी के वॉलिंटियर्स की टीम बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र में जाकर हर तरह की सहायता करेगी। उन्होंने कहा कि इस मुश्किल घड़ी में मुख्यमंत्री पंजाब भगवंत सिंह मान के नेतृत्व वाली राज्य सरकार लोगों के साथ मजबूती से खड़ी है और उन्हें हर संभव मदद मुहैया करा रही है। उन्होंने कहा कि बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में जिला प्रशासन द्वारा जगह-जगह राहत कैंप लगाए हुए हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023